विक्रम संवत् 2082 ▪ श्रावण/भाद्रपद (06) ▪ 01 अगस्त 2025 ▪ मूल्य : 23 रु.

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2024-26, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 15 एवं 20 तारीख

चरैवेति

स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं

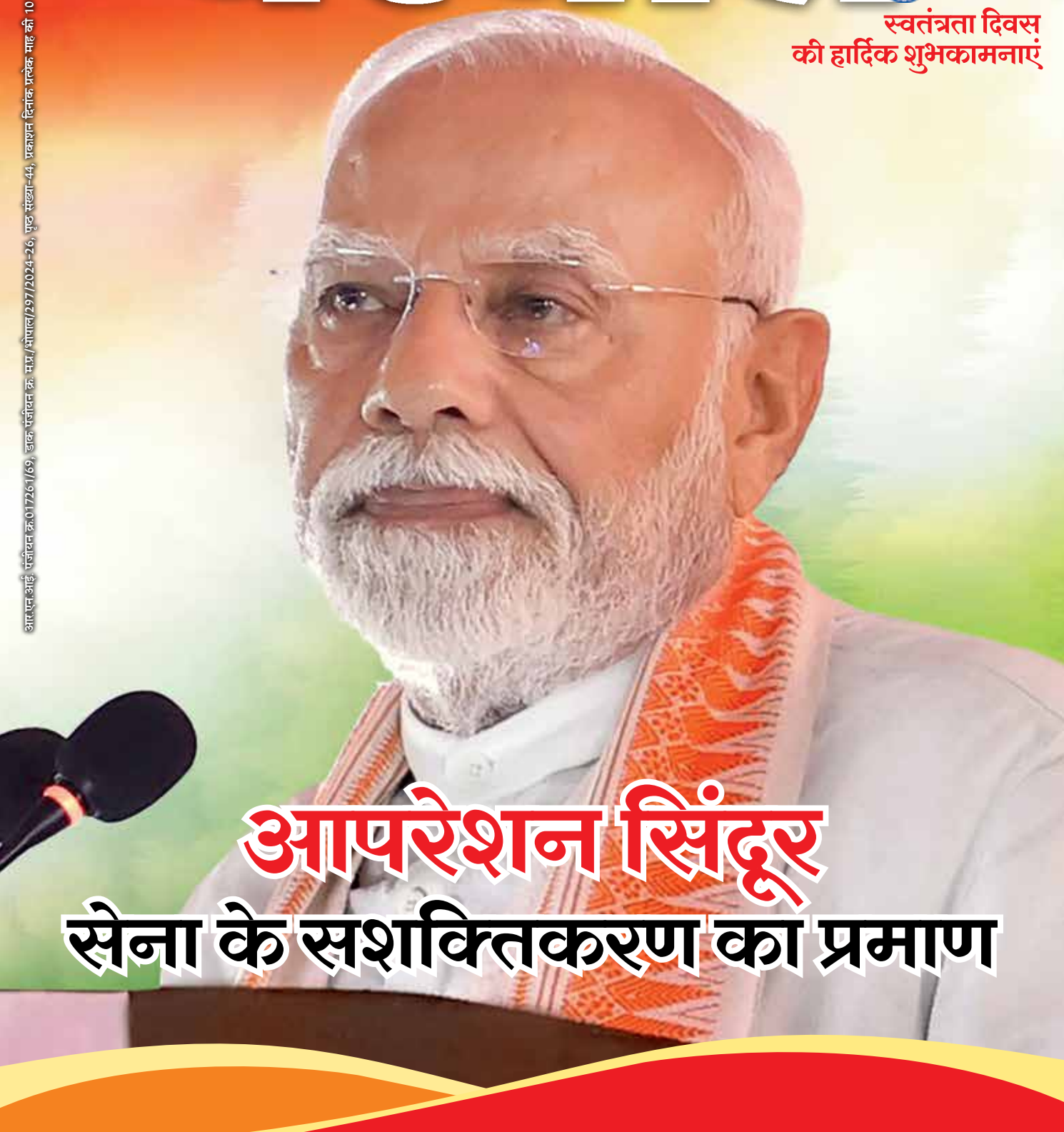

आपरेशन सिंदूर
सेना के सशक्तिकरण का प्रमाण

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने तमिलनाडु के गंगईकोंडा चोलपुरम मंदिर में पूजा-अर्चना की।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को ब्राजील के सर्वोच्च सम्मान-"द ग्रैंड कॉलर ऑफ द नेशनल ऑर्डर ऑफ द सदर्न क्रॉस" से सम्मानित किया गया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का नामीबिया की संसद के संयुक्त सत्र में खड़े होकर तालियों की गड़गड़ाहट के साथ जोरदार स्वागत किया गया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को त्रिनिदाद एवं टोबैगो गणराज्य के सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार "द ऑर्डर ऑफ द रिपब्लिक ऑफ त्रिनिदाद एवं टोबैगो" से सम्मानित किया गया।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी ने हिमाचल प्रदेश में प्राकृतिक आपदा प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने संसद के मानसून सत्र से पहले मीडिया को संबोधित किया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को घाना के राष्ट्रीय पुरस्कार "द ऑफिसर ऑफ द ऑर्डर ऑफ द स्टार ऑफ घाना" से सम्मानित किया गया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने मालदीव के स्वतंत्रता दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया।

अनुक्रमणिका

» **संपादकीय** - संजय गोविन्द खोचे 04

- स्वाधीनता से ऑपरेशन महादेव

» **कवर स्टोरी** - 05

- "ऑपरेशन सिंदूर"- सेना के सशक्तिकरण का प्रमाण - मोदी

- **कवर स्टोरी (राज्य सभा से)** 12
  - » "ऑपरेशन सिंदूर" आतंकवाद के दिल पर प्रहार - अमित शाह
- **कवर स्टोरी (लोकसभा से)** 15
  - » पाकिस्तान टेररिज्म का स्टेट-स्पॉन्सर है-अमित शाह
- **कारगिल विजय दिवस** 18
  - » भारत देश प्रहरियों के साथ खड़ा है- जगत प्रकाश नड्डा
- **जबलपुर स्वागत कार्यक्रम** 20
  - » जनता की सेवा सर्वोपरि-हेमंत खण्डेलवाल
- **दुबई, स्पेन यात्रा** 21
  - » मध्यप्रदेश वैश्विक निवेश का केंद्र मुख्यमंत्री डॉ. यादव
- **रोजगार मेला** 22
  - » "रोजगार मेलों" से लाखों को जॉब मिली- पीएम मोदी
- **अनुसूचित जनजाति मोर्चा** 25
  - » समाज को पार्टी से जोड़ें हेमंत खण्डेलवाल
- **जयंती** 26
  - » जोशी जी दिलों में राज करते थे डॉ. मोहन यादव
- **डॉ. मुखर्जी जन्म जयंती** 27
  - » भाजपा दुनिया में शोध और अनुसंधान का केंद्र - जगत प्रकाश नड्डा
  - » प्रधानमंत्री ने डॉ. मुखर्जी के विचारों को क्रियान्वित किया...
- **कविता : अटल बिहारी वाजपेयी** 29
  - » सपना टूट गया
- **ग्वालियर स्वागत समारोह** 30
  - » कार्यकर्ता जनजातियों के विकास में जुटे-हेमंत खण्डेलवाल
- **विकसित भारत@2047** 31
  - » भारत का सम्मान पूरी दुनिया में बढ़ा- अमित शाह
- **मन की बात** 32
  - » 'विकसित भारत' आत्मनिर्भरता से - मोदी
- **जयंती** 36
  - » वीरांगना रानी अवंती बाई
- **पुण्यतिथि** 37
  - » नारी शक्ति की प्रतीक हैं देवी अहिल्या
- **शहीद दिवस** 38
  - » क्रांतिवीर मदनलाल ढींगरा
  - » खुदीराम बोस
- **पुण्यतिथि** 40
  - » विलक्षण कानूनविद लोकमान्य तिलक
- **विचार प्रवाह** 41
  - » कांग्रेस बनाम जनसंघ

• मुख्य व्रत-त्यौहार

5. पुत्रदा/ पवित्रा एकादशी व्रत 6. प्रदोष व्रत 8. व्रत की पूर्णिमा 9. रक्षाबंधन, स्नानदान पूर्णिमा 12. कजरी, सतवा तीज, बहुला, अंगारकी गणेश चतुर्थी व्रत 13. भाई भिन्ना, गोगा पंचमी 14. हलषष्ठी (हरछठ) व्रत 16. श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत 17. गोगा नवमी 19. जया/ अजा एकादशी व्रत 20. बछबारस, ओमद्वास, प्रदोष व्रत 21. शिव चतुर्दशी व्रत 23. स्ना. दा. कुशग्रहणी अमावस 24. चन्द्रदर्शन 25. बाबू दोज 26. हरतालिका तीज व्रत 27. विनायकी व्रत, भ. गणेश स्थापना 28. ऋषि पंचमी 29. मोरयाई छठ 30. संतान सातें व्रत 31. दूर्वाष्टमी, राधाष्टमी

• मुख्य जयंती-दिवस

3. डॉ. मैथिली शरण गुप्त जयंती 9. अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन दिवस, विश्व आदिवासी (जनजाति) दिवस 12. अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस 13. लेफ्ट हेंडर डे 14. श्री धरणीधर जयंती (धाकड़ समाज),विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस 16. रानी अवंती, संत ज्ञानेश्वर जयंती, पं. अटल बिहारी वाजपेयी पुण्य तिथि 24. गोटमार मेला पांढुर्ना (छिंदवाड़ा) गुरू ग्रंथ साहिब प्रकाश दिवस 29. मेजर ध्यानचंद ज., रा. खेल दिवस

वर्ष-57, अंक : 06, भोपाल, अगस्त 2025

हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

समृद्धि का आधार धर्म है। इस संबंध में हम पाते हैं कि हमारा आधार धर्म, अभावात्मक नहीं है। हमारे यहां अभाव का नहीं संयम का विचार किया गया है। सादा जीवन का विचार किया गया है, धन पैदा किया तो उसका उपयोग धर्मानुसार करना चाहिए।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

सम्पादक
मुद्रक एवं प्रकाशक
संजय गोविंद खोचे*

सहायक सम्पादक
पं. सलिल मालवीय

व्यवस्थापक
योगेन्द्रनाथ बरतरिया

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित

एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये
*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

स्वाधीनता से ऑपरेशन महादेव

15 अगस्त को भारत 79 वाँ स्वतंत्रता दिवस मना रहा है। ब्रिटिश शासन से मुक्ति मिले 78 वर्ष पूरे हो गए हैं। यह दिन देश की आजादी के लिए बलिदान देने वाले भारत माता के वीर सपूतों, सेनानियों के त्याग, तपस्या और बलिदान को श्रद्धा पूर्वक नमन करने व त्याग, तपस्या व बलिदान के पीछे की भावना का सम्मान करते हुए, भावना को समझ कर आत्मसात करने की प्रेरणा लेकर भारत माता के गौरव को और ऊंचा करने का संकल्प लेने का दिवस है।

ब्रिटिश राज्य से मुक्ति से केवल स्वाधीनता पूर्ण नहीं होती है। स्वाधीनता को वास्तविक अर्थों में चरितार्थ करने का अर्थ है- विविधताओं से भरे देश में विविधता भारत की ताकत है। यह मानकर पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक भारत एक है। हर नागरिक के लिए अवसर समान है। हर नागरिक भारत माता का सपूत है। जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र के नाम पर कोई रुकावट किसी के मार्ग में आड़े नहीं आ सकती। कोई व्यक्ति विशेष नहीं है। कोई व्यक्ति दूर नहीं है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश इसी संकल्प को लेकर स्वाधीनता के रणबांकुरों की भावना के अनुरूप उनके सम्मान को सर्वोपरी रखकर आगे बढ़ चला है। जिस देश की आजादी के लिए स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने बलिदान देने में तनिक भी हिचक नहीं की थी, उनकी भावना के अनुरूप देश की सीमाओं की सुरक्षा और अधिक मजबूत की गई है। सेना को गोली का बदला गोला से देने का फ्री हैंड प्रदान किया गया है। आतंकवाद को समूल नष्ट करने का संकल्प हो चुका है। आतंकवादियों व आतंक के प्रायोजकों के साथ एक जैसा व्यवहार होगा। देश की उन्नति में बाधक आतंकवाद को भारी कीमत चुकानी पड़ रही है। मोदी सरकार के प्रयासों से आतंकवाद की घटनाओं पर काफी नियंत्रण पाया जा चुका है। सेना पर पत्थर फेंकने की घटनाऐं अब इतिहास के पन्नों का विषय बन चुकी हैं। तीनों सेनाओं का एकीकरण करके प्रहार और सटीक व करारा हुआ है। सेना के साजो- समान से लेकर, सेना का मनोबल ऊंचा रखने का हर संभव प्रयास जारी है। सेना की आवश्यकताओं की पूर्ति तथा आधुनिकीकरण के कारण सर्जिकल स्ट्राइक, एयर स्ट्राइक, ऑपरेशन सिंदूर व ऑपरेशन महादेव संभव हो पाया है। इन उपलब्धियों के पीछे भारतीय सेना का शौर्य व प्रधानमंत्री मोदी जी की दूरदर्शिता, राष्ट्रप्रेम व संकल्प की शक्ति का जोड़ शामिल है। साथ ही साथ 140 करोड़ भारतीयों का सेना वा मोदी जी के प्रति विश्वास व स्नेह मजबूत आधार का काम करता है। पहले एक दौर वह भी गुजरा है जब भारतीय सेना सीमा पार से गोली आने पर केंद्र के रुख का इंतजार करती थी। सेना के पास साजो- समान का नितांत अभाव होता था। मोदी जी ने सेना के इस दर्द को समझा। सेना की आवश्यकताओं को जाना और उसका पूर्ण निवारण किया। आज उसी का परिणाम है कि भारत रक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल कर रहा है, विदेशी निर्भरता से मुक्त हो रहा है। आपरेशन सिंदूर के बाद भारतीय रक्षा प्रणाली की क्षमता को देखकर सारा विश्व आश्चर्य चकित है। आज भारत 100 से अधिक देशों को रक्षा उत्पादों का निर्यात कर रहा है।

मोदी सरकार स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की भावना के अनुरूप लोकतंत्र को मजबूत करने का कार्य कर रही है। मोदी सरकार बहुमत का उपयोग देश के हित में कर रही है। इस बहुमत के आशीर्वाद का ही परिणाम है, कि महिलाओं का लोकसभा, विधानसभा में आरक्षण सुनिश्चित हुआ है। पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा मिला है।

आज भारत प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में 11वीं अर्थव्यवस्था से विश्व की चौथी अर्थव्यवस्था बन गया है। शीघ्र ही हम विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रहे हैं। तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के परिणाम स्वरूप आज 25 करोड़ भारतीय लोग गरीबी रेखा से बाहर आने में सफल रहे हैं।

22 अप्रैल को पहलगाम में घटित आतंकवादी घटना से सारा सभ्य समाज परेशान हो गया था। धर्म के आधार पर हत्या की गई, इसकी जितनी कड़ी निंदा की जावे वह कम है। प्रधानमंत्री जी विदेश यात्रा पर थे, वे तत्काल भारत वापस आए और उन्होंने देश से वादा किया था, कि आतंकवादियों और आतंक के प्रायोजकों को यह कुकृत्य बहुत महंगा पड़ेगा। वादे के अनुरूप 6 मई की रात और 7 मई की सुबह भारत नें अपना निर्धारित लक्ष्य हासिल कर लिया और फिर 28 जुलाई को ऑपरेशन महादेव के अंतर्गत तीनों पाकिस्तानी आतंकवादियों को उनके किए की सजा भी मिल गई। इतना सब होने के बाद भी विपक्ष का रवैया अत्यंत निराशाजनक रहा। पहले सबूत मांगते थे, फिर आतंकवादियों के पाकिस्तानी होने पर भी प्रश्न चिन्ह लगा रहे थे, धीरे-धीरे सब चीजें स्पष्ट होती चली गईं और सरकार के कदम सही दिशा में रहे,यह सिद्ध हो गया। पर विपक्ष ने उनकी सरकार के दौरान हुई आतंकवादी घटनाओं पर भारत की प्रतिक्रिया का कोई जवाब सदन के माध्यम से देश के समक्ष नहीं रखा। स्पष्ट है कि जनता के प्रति जवाबदेही से बचने का प्रयास विपक्ष लगातार कर रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी जी को अब तक 27 देशों का सर्वोच्च नागरिक सम्मान मिल चुका है। आज तक किसी भी राष्ट्राध्यक्ष को इतना सम्मान नहीं मिला। प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में भारत के लिए यह बहुत बड़ी उपलब्धि है। यह सम्मान भारत के 140 करोड़ लोगों का सम्मान है। आज से 26 वर्ष पहले 1999 में पाकिस्तान नें पीठ में छुरा घोंपकर कारगिल में कब्जा करने का कुत्सित प्रयास किया था जिसे तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेई जी के नेतृत्व में चले संघर्ष में 81 दिन में भारतीय सेना ने पाकिस्तान को घुटने के बल आने के लिए मजबूर कर दिया था। भारतीय सेना ने महान विजय हासिल की थी। इसी उपलक्ष्य में देश 26 जुलाई को ''ऑपरेशन विजय दिवस'' के रूप में मनाता है। भारत के वीर सपूतों के साहस और शौर्य का स्मरण करता है। कांग्रेस को इसमें भी राजनीति नजर आती है, कांग्रेस की सरकारों ने ऑपरेशन विजय दिवस मनाना भी आवश्यक नहीं समझा।

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने निवेश आमंत्रित करने के लिए दुबई व स्पेन की यात्रा करके निवेशकों से मुलाकात की और उन्हें मध्य प्रदेश आमंत्रित किया। सरकार को 11000 करोड़ रुपए से अधिक के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए। मुख्यमंत्री जी के इन सघन प्रयासों से 14000 से अधिक युवाओं के लिए रोजगार सृजन होगा। साथ ही साथ मध्य प्रदेश की तरफ से प्रधानमंत्री जी के विकसित भारत के संकल्प को सिद्ध करने में सहयोग प्रदान होगा।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खंडेलवाल जी प्रदेश के कार्यकर्ताओं से संपर्क करने के लिए प्रदेश में लगातार प्रवास कर रहे हैं। ग्वालियर प्रवास में श्री खंडेलवाल जी ने कार्यकर्ताओं का उत्साह वर्धन करते हुए कहा कि- भाजपा कार्यकर्ताओं को गर्व होना चाहिए कि वह उस संगठन के लिए कार्य कर रहे हैं जो देश का भविष्य बनाने का कार्य कर रहा है और सनातन को बचाने व उसे बढ़ाने का काम कर रहा है। निश्चित ही देश का भविष्य भाजपा के हाथों में पूर्ण सुरक्षित है। कार्यकर्ताओं को जनजातीय लोगों के विकास में अपना योगदान सुनिश्चित करना है। भाजपा संगठन को और मजबूत करते हुए आगे ले जाना है।

भारत की आजादी का इतिहास जब लिखा जाएगा तो प्रधानमंत्री मोदी जी की सरकार के कार्यकाल का विवरण स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा। यही वह काल है जिसमें भाजपा की सरकार के नेतृत्व में विकसित भारत का मार्ग प्रशस्त हुआ है। देश को निराशा के दौर से बाहर निकाल कर आशा, विश्वास और उन्नत भविष्य के लिए रास्ता दिखाया गया है। ▪

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

"ऑपरेशन सिंदूर" - सेना के सशक्तिकरण का प्रमाण - मोदी

हमें हमारे सैन्य बलों की क्षमता पर पूरा विश्वास है, पूरा भरोसा है, उनकी क्षमता पर, उनके सामर्थ्य पर, उनके साहस पर... सेना को कार्यवाही की खुली छूट दे दी गई और यह भी कहा गया कि सेना तय करें, कब, कहां, कैसे, किस प्रकार से?

- विजय उत्सव भारतीय सशस्त्र बलों की वीरता और शक्ति का प्रमाण है।
- मैं इस विजय उत्सव की भावना के साथ सदन में भारत का दृष्टिकोण प्रस्तुत करने के लिए खड़ा हुआ हूँ।
- ऑपरेशन सिंदूर ने आत्मनिर्भर भारत की शक्ति को उजागर किया।
- ऑपरेशन सिंदूर के दौरान, नौसेना, सेना और वायु सेना के तालमेल ने पाकिस्तान को अंदर तक हिला कर रख दिया।
- भारत ने स्पष्ट कर दिया है कि वह अपनी शर्तों पर आतंक का जवाब देगा, परमाणु ब्लैकमेल बर्दाश्त नहीं करेगा और आतंक के प्रायोजकों और षड्यंत्रकर्ताओं के साथ समान व्यवहार करेगा।
- ऑपरेशन सिंदूर के दौरान, भारत को व्यापक वैश्विक समर्थन मिला।
- ऑपरेशन सिंदूर जारी है, पाकिस्तान के किसी भी लापरवाह कदम का कड़ा जवाब दिया जाएगा।
- सीमाओं पर एक मजबूत सेना एक जीवंत और सुरक्षित लोकतंत्र सुनिश्चित करती है।
- ऑपरेशन सिंदूर पिछले एक दशक में भारत के सशस्त्र बलों की बढ़ती शक्ति का स्पष्ट प्रमाण है।
- भारत बुद्ध की भूमि है, युद्ध की नहीं, हम समृद्धि और सद्भाव के लिए प्रयासरत हैं, यह जानते हुए कि स्थायी शांति शक्ति से आती है।
- भारत ने स्पष्ट कर दिया है कि रक्त और जल एक साथ नहीं बह सकते।

22 अप्रैल को पहलगाम में जिस प्रकार की क्रूर घटना घटी, जिस प्रकार आतंकवादियों ने निर्दोष लोगों को उनका धर्म पूछ-पूछ करके गोलियां मारी, यह क्रूरता की पराकाष्ठा थी। भारत को हिंसा की आग में झोंकने का यह सुविचारित प्रयास था। भारत में दंगे फैलाने की यह साजिश थी।

22 अप्रैल के बाद मैंने कहा था कि यह हमारा संकल्प है। हम आतंकियों को मिट्टी में मिला देंगे और मैंने सार्वजनिक रूप से कहा था, सजा उनके आकाओं को भी होगी और कल्पना से भी बड़ी सजा मिलेगी। 22 अप्रैल को मैं विदेश था, मैं तुरंत लौट कर आया और आने के तुरंत बाद मैंने एक बैठक बुलाई और उस बैठक में हमने साफ-साफ निर्देश दिए कि आतंक, आतंकवाद को करारा जवाब देना होगा और यह हमारा राष्ट्रीय संकल्प है।

हमें हमारे सैन्य बलों की क्षमता पर पूरा विश्वास है, पूरा भरोसा है, उनकी क्षमता पर, उनके सामर्थ्य पर, उनके साहस पर... सेना को कार्यवाही की खुली छूट दे दी गई और यह भी कहा गया कि सेना तय करें, कब, कहां, कैसे, किस प्रकार से? यह सारी बातें उस मीटिंग में साफ-साफ कह दी गई और कुछ बातें उसमें से मीडिया में शायद रिपोर्ट भी हुई हैं। हमें गर्व है, आतंकियों को वह सजा दी और सजा ऐसी है कि आज भी आतंक के उन आकाओं की नींद उड़ी हुई है।

मैं हमारी सेना की सफलता के, उससे जुड़े भारत के उस पक्ष को सदन के माध्यम से देशवासियों के सामने रखना चाहता हूं।

पहला – पहलगाम हमले के बाद से ही पाकिस्तानी सेना को अंदाजा लग चुका था कि भारत कोई बड़ी कार्यवाही करेगा। उनकी तरफ से न्यूक्लियर की धमकियों के भी बयान आना शुरू हो चुके थे। भारत ने 6 मई रात और 7 मई सुबह जैसा तय किया था, वैसी कार्यवाही की और पाकिस्तान कुछ नहीं कर पाया। 22 मिनट में 22 अप्रैल का बदला निर्धारित लक्ष्य के साथ हमारी सेना ने ले लिया।

दूसरा – पाकिस्तान के साथ हमारी लड़ाई तो

कई बार हुई है। लेकिन यह पहली ऐसी भारत की रणनीति बनी कि जिसमें पहले जहां कभी नहीं गए थे वहां हम पहुंचे। पाकिस्तान के कोने-कोने में आतंकी अड्डों को धुआं-धुआं कर दिया गया। आतंक के घाट, कोई सोच नहीं सकता है कि वहां तक कोई जा सकता है। बहावलपुर और मुरीदके, उसको भी जमींदोज कर दिया गया।

हमारी सेनाओं ने आतंकी अड्डों को तबाह कर दिया।

तीसरा - पाकिस्तान की न्यूक्लियर धमकी को हमने झूठा साबित कर दिया। भारत ने सिद्ध कर दिया कि न्यूक्लियर ब्लैकमेलिंग अब नहीं चलेगा और ना ही न्यूक्लियर ब्लैकमेलिंग के सामने भारत झुकेगा।

चौथा - भारत ने दिखाई अपनी तकनीकी क्षमता। पाकिस्तान के सीने पर सटीक प्रहार किया। पाकिस्तान के एयर बेस एसेट्स को भारी नुकसान हुआ और आज तक उनके कई एयर बेस आईसीयू में पड़े हैं। आज टेक्नोलॉजी आधारित युद्ध का युग है। ऑपरेशन सिंदूर इस महारथ में भी सफल सिद्ध हुआ है। अगर पिछले 10 साल में जो हमने तैयारियां की हैं, वह ना की होती, तो इस तकनीकी युग में हमारा कितना नुकसान हो सकता था, इसका हम अंदाजा लगा सकते हैं।

पांचवा - ऑपरेशन सिंदूर के दरमियान पहली बार हुआ जब आत्मनिर्भर भारत की ताकत को दुनिया ने पहचाना है। मेड इन इंडिया ड्रोन, मेड इन इंडिया मिसाइल, पूरे पाकिस्तान के हथियारों की पोल खोल करके रख दी। और भी एक महत्वपूर्ण काम जो हुआ है, वैसे जब राजीव गांधी जी थे, उस समय उनके जो एक डिफेंस का काम देखने वाले MoS थे। उन्होंने जब मैंने सीडीएस की घोषणा की, तो वह बहुत प्रसन्न होकर के मुझे मिलने आए थे और बहुत-बहुत प्रसन्न थे वह, इस समय ऑपरेशन में नेवी, आर्मी, एयरफोर्स, तीनों सेनाओं का ज्वाइंट एक्शन, इसके बीच की सिनर्जी, इसने पाकिस्तान के छक्के छुड़ा दिए।

आतंकी घटनाएं पहले भी देश में होती थी। लेकिन पहले आतंकवादियों के मास्टरमाइंड निश्चिंत होते थे और वह आगे की तैयारी में लगे रहते थे। उनको पता था, कुछ नहीं होगा।

लेकिन अब स्थिति बदल गई है। अब हमले के बाद मास्टरमाइंड को नींद नहीं आती, उनको पता है कि भारत आएगा और मार कर जाएगा। यह न्यू नॉर्मल भारत ने सेट कर दिया है।

दुनिया ने देख लिया कि हमारे कार्यवाही का दायरा कितना बड़ा है, स्केल कितना बड़ा है। सिंदूर से लेकर के सिंधु तक पाकिस्तान पर कार्यवाही की है। ऑपरेशन सिंदूर ने तय कर दिया कि भारत में आतंकी हमले की उसके आकाओं को और पाकिस्तान को भारी कीमत चुकानी पड़ेगी, अब यह ऐसे ही नहीं जा सकते।

ऑपरेशन सिंदूर से स्पष्ट होता है कि भारत ने तीन सूत्र तय किए हैं।

पहला- अगर भारत पर आतंकी हमला हुआ, तो हम अपने तरीके से, अपनी शर्तों पर, अपने समय पर, जवाब देकर के रहेंगे।

दूसरा- कोई भी, कोई भी न्यूक्लियर ब्लैकमेल अब नहीं चलेगा और

तीसरा- हम आतंकी सरपरस्त सरकार और आतंकी आकाओं, उनको अलग-अलग नहीं देखेंगे।

विदेश नीति को लेकर के भी काफी बातें कहीं गई हैं। दुनिया के समर्थन को लेकर के भी काफी बातें कही गई हैं।

दुनिया में किसी भी देश ने भारत को अपनी सुरक्षा में कार्यवाही करने से रोका नहीं है। संयुक्त राष्ट्र 193 कंट्रीज, सिर्फ तीन देश, 193 कंट्री में सिर्फ तीन देश ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान के समर्थन में बयान दिया था, ओनली थ्री कंट्रीज। क्वाड हो, ब्रिक्स हो, फ्रांस, रूस, जर्मनी, कोई भी देश का नाम ले लीजिए, तमाम देश दुनिया भर से भारत को समर्थन मिला है।

दुनिया का समर्थन तो मिला, दुनिया के देशों का समर्थन मिला, लेकिन यह दुर्भाग्य है कि मेरे देश के वीरों के पराक्रम को कांग्रेस का समर्थन नहीं मिला। 22 अप्रैल के आतंकी हमले के बाद तीन-चार दिन में ही यह उछल रहे थे और कहना शुरू कर दिया कहां गई 56 इंच की छाती? कहां खो गया मोदी? मोदी तो फेल हो गया, क्या मजा ले रहे थे, उनको लगता था, वाह! बाजी मार ली। उनको पहलगाम के निर्दोष लोगों की हत्या में भी वह अपनी राजनीति तराशते थे। अपनी स्वार्थ की राजनीति के लिए मुझ पर निशाना साध रहे थे, लेकिन उनकी यह बयानबाजी, इनका छिछोरापन देश के सुरक्षा बलों का मनोबल गिरा रहा था। कांग्रेस के कुछ नेताओं को ना भारत के सामर्थ्य पर भरोसा है और ना ही भारत की सेनाओं पर, इसलिए वह लगातार ऑपरेशन सिंदूर पर सवाल उठा रहे हैं। ऐसा करके आप लोग मीडिया में हैडलाइंस तो ले सकते हैं, लेकिन देशवासियों के दिलों में जगह नहीं बना सकते।

10 मई को भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के तहत हो रहे एक्शन को रोकने की घोषणा की। इसको लेकर यहां भांति-भांति की बातें कही गईं। यह वही प्रोपेगेंडा है, जो सीमा पार से फैलाया गया है। कुछ लोग सेना द्वारा दिए गए तथ्यों की जगह पाकिस्तान के झूठ प्रचार को आगे बढ़ाने में जुटे हुए हैं। जबकि भारत का रुख हमेशा स्पष्ट रहा है।

जब सर्जिकल स्ट्राइक हुआ, उस समय हमने लक्ष्य तय किया था, हमारे जवानों को तैयार करके कि हम उनके इलाके में जाकर के आतंकियों के जो लॉन्चिंग पैड हैं, उनको नष्ट करेंगे और सर्जिकल स्ट्राइक एक रात के उस ऑपरेशन में हमारे लोग सूर्योदय होते-होते काम पूरा करके वापस आ गए। लक्ष्य निर्धारित था कि यह करना है।

जब बालाकोट एयर स्ट्राइक किया, तो हमारा लक्ष्य तय था कि आतंकियों के जो ट्रेनिंग सेंटर्स हैं, इस बार हम उसको तबाह करेंगे और हमने वह भी करके दिखाया।

ऑपरेशन सिंदूर के समय हमारा लक्ष्य तय था और हमारा लक्ष्य था कि आतंक के जो एपिसेंटर हैं और पहलगाम के आतंकियों की जहां से पुरजोर योजना बनी, ट्रेनिंग मिली, व्यवस्था मिली, उस पर हमला करेंगे। हमने उनकी नाभि पर हमला कर दिया है। या जहां पहलगाम के आतंकियों का रिक्रूटमेंट हुआ, ट्रेनिंग होती थी, फंडिंग होता था, उन्हें ट्रैकिंग टेक्निकल सपोर्ट मिलता था, शस्त्र, सारा इंतजाम मिलता था, उस जगह को आईडेंटिफाई किया और हमने सटीक तरीके से ऑपरेशन सिंदूर के तहत आतंकियों की नाभि पर प्रहार किया।

इस बार भी हमारी सेना ने शत-प्रतिशत लक्ष्यों को हासिल करके देश के सामर्थ्य का परिचय दिया है। कुछ लोग जानबूझकर के कुछ चीजें भूलने में इंटरेस्टेड होते हैं। देश भूलता नहीं है, देश को याद है, 6 रात और 7 मई सुबह ऑपरेशन हुआ था और 7 मई को सुबह भारत ने प्रेस कॉन्फ्रेंस, हमारी सेना ने की और उस प्रेस कॉन्फ्रेंस में भारत ने स्पष्ट कर दिया था और पहले दिन से क्लियर था कि हम, हमारा लक्ष्य है आतंकी, आतंकियों के आका, आतंकियों की जो व्यवस्थाएं जहां से होती हैं वह और उनके अड्डे, उनको हम ध्वस्त करना चाहते थे और हमने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कह दिया था, हमने हमारा काम कर दिया है। हमने जो तय किया था, पूरा कर दिया है। और इसलिए 6-7 मई को ऑपरेशन हमारा संतोषजनक होने के तुरंत बाद, भारत की सेना ने पाकिस्तान की सेना को चंद मिनटों में ही बता दिया कि हमारा यह लक्ष्य था, हमने यह लक्ष्य पूरा कर दिया है, ताकि उनको पता चले और हमें भी पता चले कि उनके दिल दिमाग में क्या चलता है। हमने अपना लक्ष्य शत-प्रतिशत हासिल कर लिया था और पाकिस्तान में समझदारी होती तो आतंकियों के साथ खुलेआम खड़े रहने की गलती ना करता। उसने निर्लज्ज होकर के आतंकवादियों के साथ खड़े रहने का फैसला किया। हम पूरी तरह तैयार थे, हम भी मौके की तलाश में थे, लेकिन हमने दुनिया को बताया था कि हमारा लक्ष्य आतंकवाद है, आतंकवादी आका हैं, आतंकवादी ठिकाने हैं,

वह हमने पूरा कर दिया। लेकिन जब पाकिस्तान ने आतंकियों की मदद में आने का फैसला किया और मैदान में उतरने की हरकत की, तो भारत की सेना ने सालों तक याद रह जाए, ऐसा करारा जवाब देकर के 9 मई की मध्य रात्रि और 10 मई की एक प्रकार से सुबह, हमारी मिसाइलें उन्होंने पाकिस्तान के हर कोने में प्रचंड प्रहार किया, जिसकी पाकिस्तान ने कभी कल्पना नहीं की थी। और पाकिस्तान को घुटनों पर आने के लिए मजबूर कर दिया और टीवी में भी देखा है, वहां से क्या बयान आते थे? पाकिस्तान के लोग अरे मैं तो स्विमिंग पूल में नहा रहा था, कोई कह रहा था, मैं तो दफ्तर जाने की तैयारी कर रहा था, हम कुछ सोचें इससे पहले तो भारत ने तो हमला कर दिया। यह पाकिस्तान के लोगों के बयान हैं और देश ने देखे हैं। स्विमिंग पूल में नहा रहा था और जब इतना कड़ा प्रहार हुआ, पाकिस्तान ने कभी सोचा तक नहीं था, तब जाकर के पाकिस्तान ने फोन करके, डीजीएमओ के सामने फोन करके गुहार लगाई, बस करो, बहुत मारा, अब ज्यादा मार झेलने की ताकत नहीं है, प्लीज हमला रोक दो। यह पाकिस्तान के डीजीएमओ का फोन था और भारत ने तो पहले दिन ही कह दिया था, 7 तारीख सुबह की प्रेस देख लीजिए कि हमने हमारा लक्ष्य पूरा कर दिया है, अगर आप कुछ करोगे, तो महंगा पड़ेगा। मैं दोबारा कह रहा हूं कि यह भारत की स्पष्ट नीति थी, सुविचारित नीति थी, सेना के साथ मिलकर के तय की हुई नीति थी और वह यह थी कि हम आतंक, उनके आका, उनके ठिकाने, यह हमारा लक्ष्य है और हमने कहा, पहले दिन प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा है कि हमारा एक्शन नॉन एस्क्लेट्री है। यह हमने कहकर के किया है और इसके लिए हमने हमला रोका।

दुनिया के किसी भी नेता ने भारत को ऑपरेशन रोकने के लिए नहीं कहा। उसी दौरान 9 तारीख को रात को अमेरिका के उपराष्ट्रपति जी ने मुझसे बात करने का प्रयास किया। वह घंटे भर कोशिश कर रहे थे, लेकिन मैं मेरी सेना के साथ मीटिंग चल रही थी। तो मैंने उनका फोन उठा नहीं पाया, बाद में मैंने उनको कॉल बैक किया। मैंने कहा कि आपका फोन था, तीन-चार बार आपका फोन आ गया, क्या है? तो अमेरिका के उपराष्ट्रपति जी ने मुझे फोन पर बताया कि पाकिस्तान बहुत बड़ा हमला करने वाला है। यह उन्होंने मुझे बताया, मेरा जो जवाब था, जिनको समझ नहीं आता है, उनको तो नहीं आएगा। मेरा जवाब था, अगर पाकिस्तान का यह इरादा है, तो उसे बहुत महंगा पड़ेगा। यह मैंने अमेरिका के उपराष्ट्रपति को कहा था। अगर पाकिस्तान हमला करेगा, तो हम बड़ा हमला कर करके जवाब देंगे, यह मेरा जवाब था और आगे मेरा एक वाक्य था, मैंने कहा था, हम गोली का जवाब गोले से देंगे। यह 9 तारीख रात की बात है और 9 रात में और 10 सुबह हमने पाकिस्तान की सैन्य शक्ति को तहस-नहस कर दिया था और यही हमारा जवाब था, यही हमारा जज्बा था। और आज पाकिस्तान भी भली-भांति जान गया है कि भारत का हर जवाब पहले से ज्यादा तगड़ा होता है। उसे यह भी पता है कि अगर भविष्य में नौबत आई तो भारत आगे कुछ भी कर सकता है और इसलिए मैं फिर से लोकतंत्र के इस मंदिर में दोहराना चाहता हूं, ऑपरेशन सिंदूर जारी है। पाकिस्तान ने दुस्साहस की अगर कल्पना की, तो उसे करारा जवाब दिया जाएगा।

आज का भारत आत्मविश्वास, उससे भरा हुआ है। आज का भारत आत्मनिर्भरता के मंत्र को लेकर के पूरी शक्ति के साथ तेज गति से आगे बढ़ रहा है। देश देख रहा है, भारत आत्मनिर्भर बनता जा रहा है। लेकिन देश यह भी देख रहा है कि एक तरफ तो भारत आत्मनिर्भरता की ओर तेज गति से आगे बढ़ रहा है, लेकिन कांग्रेस मुद्दों के लिए पाकिस्तान पर निर्भर होती जा रही है। दुर्भाग्य से कांग्रेस को पाकिस्तान के मुद्दे इंपोर्ट करने पड़ रहे हैं।

आज के वॉरफेयर में इंफॉर्मेशन और नेरेटिव्स की बहुत बड़ी भूमिका है। नेरेटिव गढ़ करके, एआई का भी भरपूर उपयोग करके, सेनाओं के मनोबल को कमजोर करने के खेल भी खेले जाते हैं। जनता के अन्दर अविश्वास पैदा करने के भी भरपूर प्रयास होते हैं। दुर्भाग्य से कांग्रेस और उसके सहयोगी पाकिस्तान के ऐसे ही प्रपंच के प्रवक्ता बन चुके हैं।

देश की सेना ने सफलतापूर्वक सर्जिकल स्ट्राइक की तो तुरंत कांग्रेस वालों ने सेना से सबूत मांगे थे। लेकिन जब उन्होंने देश का मूड देखा, देश का मिजाज देखा, तो सुर उनके बदलने लगे और बदल करके क्या कहने लगे? कांग्रेस के लोगों ने कहा, यह सर्जिकल स्ट्राइक क्या बड़ी बात है, यह तो हमने भी की थी। एक ने कहा, तीन सर्जिकल स्ट्राइक की थी। दूसरे ने कहा, 6 सर्जिकल स्ट्राइक की थी। तीसरे ने कहा, 15 सर्जिकल स्ट्राइक की थी। जितना बड़ा नेता, उतना बड़ा आंकड़ा चल रहा था।

इसके बाद बालाकोट में सेना ने एयर स्ट्राइक की। अब एयर स्ट्राइक तो ऐसी थी कि वह कुछ कह नहीं सकते थे, इसलिए यह तो नहीं कहा कि हमने भी की थी। उसमें तो उन्होंने समझदारी दिखाई, लेकिन फोटो मांगने लगे। एयर स्ट्राइक हुई, तो फोटो दिखाओ। क्या कहां गिरा? क्या तोड़ा? कितना तोड़ा? कितने मरे? बस यही पूछते रहे! पाकिस्तान भी यही पूछता था, तो यह भी यही पूछते थे। इतना ही नहीं।

जब पायलट अभिनंदन पकड़े गए, तब पाकिस्तान में तो खुशी का माहौल होना स्वाभाविक था कि उनके हाथ में भारत की सेना का एक पायलट उनके हाथ लगा था, लेकिन यहां पर भी कुछ लोग थे, जो कानों-कानों में कह रहे थे, अब मोदी फंसा, अब अभिनंदन वहां है, मोदी लाकर के दिखा दे। अब देखते हैं, मोदी क्या करता है? और डंके की चोट पर अभिनंदन वापस आया। हम अभिनंदन को ले आए, तो इनकी बोलती बंद हो गई। इनको लगा यार, यह नसीब वाला आदमी है! हमारा हथियार हाथ से निकल गया।

पहलगाम हमले के बाद हमारा बीएसएफ का एक जवान पाकिस्तान के कब्जे में गया, तो फिर उनको लगा कि वाह! बड़ा मुद्दा हाथ में आ गया है, अब मोदी फंस जाएगा। अब तो मोदी की फजीहत जरूर होगी और उनके इकोसिस्टम ने सोशल मीडिया में बहुत सारी कथाएं वायरल की कि यह बीएसएफ के जवान का क्या होगा? उसके परिवार का क्या होगा? वह वापस आएगा, कब आएगा? कैसे आएगा? ना जाने क्या-क्या चला दिया।

बीएसएफ का वह जवान भी आन-बान-शान के साथ वापस आ गया। आतंकवादी रो रहे हैं, आतंकवादियों के आका रो रहे हैं और उनको रोते देखकर यहां भी कुछ लोग रो रहे हैं। अब देखिए, सर्जिकल स्ट्राइक चल रही थी, उसके बाद उन्होंने एक खेल खेलने की कोशिश की, बात जमी नहीं। एयर स्ट्राइक हुई, तो दूसरा खेल खेलने की कोशिश की, वह भी जमी नहीं। जब यह ऑपरेशन सिंदूर हुआ, तो उन्होंने नया पैंतरा शुरू किया और क्या शुरू किया, रोक क्यों दिया? पहले तो मानने को ही तैयार नहीं थे कि यह कुछ करते है, अब कहते हैं रोक क्यों दिया? वाह रे बयान बहादुरों! आपको विरोध का कोई ना कोई बहाना चाहिए और इसलिए सिर्फ मैं नहीं, पूरा देश आप पर हंस रहा है।

सेना का विरोध, सेना के प्रति एक पता नहीं नेगेटिविटी, यह कांग्रेस का पुराना रवैया रहा है। देश ने अभी-अभी कारगिल विजय दिवस मनाया, लेकिन देश पूरी तरह जानता है कि उनके कार्यकाल में और आज तक कारगिल के विजय को कांग्रेस ने अपनाया नहीं है। ना कारगिल विजय दिवस मनाया है, ना कारगिल विजय का गौरव किया है। इतिहास साक्षी है जब डोकलाम में सैन्य हमारा शौर्य दिखा रहा था, तब कांग्रेस के नेता चुपके-चुपके किससे ब्रीफिंग लेते थे, वह सारी दुनिया अब जान गई है। आप टेप निकाल दीजिए पाकिस्तान के सारे बयान और यहां हमारा विरोध करने वाले लोगों के बयान, फुल स्टॉप कोमा के साथ एक हैं। क्या कहेंगे इसको? और

बुरा लगता है, सच बोलते हैं तो! पाकिस्तान के साथ सुर में सुर मिला दिया था।

देश हैरान है, कांग्रेस ने पाकिस्तान को क्लीन चिट दे दी है। उनकी यह हिम्मत और इनकी आदत जाती नहीं है। यह हिम्मत कि पहलगाम के आतंकी पाकिस्तानी थे, इसका सबूत दो। क्या कह रहे हो तुम लोग? यह कौन सा तरीका है? और यही मांग पाकिस्तान कर रहा है, जो कांग्रेस कर रही है।

आज जब सबूतों की कोई कमी नहीं है, सब कुछ आंखों के सामने दिखता है, तब यह हालत है। अगर यह सबूत ना होते, तो क्या करते यह लोग आप बताइए?

ऑपरेशन सिंदूर के एक पार्ट की तरफ तो चर्चा भी बहुत होती हैं, ध्यान भी जाता है। लेकिन देश के लिए कुछ गौरव की क्षणें होती है, ताकत का एक परिचय होता है, उसकी तरफ भी ध्यान जाना बहुत आकर्षित है। हमारे एयर डिफेंस सिस्टम, दुनिया में इसकी चर्चा है। हमारे एयर डिफेंस सिस्टम ने पाकिस्तान के मिसाइल और ड्रोंस, उसको तिनके की तरह बिखेर दिया था।

मैं एक आंकड़ा आज बताना चाहता हूं। पूरा देश गर्व से भर जाएगा, कुछ लोगों का क्या होगा, मैं नहीं जानता, पूरा देश गर्व से भर जाएगा। 9 मई को पाकिस्तान ने करीब एक हजार, एक हजार मिसाइलों और आर्म्स ड्रोंस से भारत पर बहुत बड़ा हमला करने की कोशिश की, एक हजार। यह मिसाइलें भारत के किसी भी हिस्से पर गिरती, तो वहां भयंकर तबाही मचती, लेकिन एक हजार मिसाइल्स और ड्रोंस को भारत ने आसमान में ही चूर-चूर कर दिया। हर देशवासी को इससे गर्व हो रहा है, लेकिन जैसे कांग्रेस के लोग इंतजार कर रहे थे, कुछ तो गड़बड़ होगी यार, मोदी मरेगा! कहीं तो फंसेगा! पाकिस्तान ने आदमपुर एयरबेस पर हमले का झूठ फैलाया, उस झूठ को बेचने की भरपूर कोशिश की, पूरी ताकत भी लगा दी। मैं अगले ही दिन आदमपुर पहुंचा और खुद जाकर के उनके झूठ को बेनकाब कर दिया। तब जाकर के उनको अकल ठिकाने लगी कि अब यह झूठ चलने वाला नहीं है।

जो हमारे छोटे दलों के साथी हैं, जो राजनीति में नए हैं, उनको कभी शासन में रहने का अवसर नहीं मिला है, उनसे कुछ बातें निकलती हैं, मैं समझ सकता हूं। लेकिन कांग्रेस पार्टी ने इस देश में लंबे समय तक राज किया है। उसको शासन की व्यवस्थाओं का पूरा पता है, उन चीजों से वह निकले हुए लोग हैं, उनके लिए शासन व्यवस्था क्या होती है, इसकी समझ पूरी है। अनुभव है उनके पास, उसके बाद भी विदेश मंत्रालय तुरंत जवाब दें, उसको स्वीकारना नहीं। विदेश मंत्री जवाब दे, इंटरव्यू दे, बार-बार बोले, उसको स्वीकारना नहीं। गृहमंत्री बोले, रक्षा मंत्री बोले, किसी पर भरोसा ही नहीं। जिसने इतने सालों तक राज किया, उनको देश की व्यवस्थाओं पर अगर भरोसा नहीं है, तब शक उठता है कि क्या हालत हो गई है इनकी?

अब कांग्रेस का भरोसा पाकिस्तान के रिमोट कंट्रोल से बनता है और बदलता है।

एक बिलकुल कांग्रेस के नए सदस्य यानी उनको तो क्षमा करनी चाहिए, नए सदस्य को तो क्या कहेंगे। लेकिन कांग्रेस के आका जो उनको लिखकर के देते हैं और उनसे बुलवाते हैं, खुद में हिम्मत नहीं है, उनसे बुलवाते हैं कि ऑपरेशन सिंदूर, यह तो तमाशा था। यह आतंकवादियों ने जिन 26 लोगों को मौत के घाट उतारा था ना, उस भयंकर क्रूर घटना पर यह तेजाब छिड़कने वाला पाप है। तमाशा कहते हो, आपकी यह सहमति हो सकती है और यह कांग्रेस के नेता बुलवाते हैं।

पहलगाम के हमलावरों को हमारे सुरक्षाबलों ने ऑपरेशन महादेव करके अपने अंजाम तक पहुंचाया है। लेकिन मैं हैरान हूं कि यहां ठहाके लगाकर के पूछा गया कि आखिरकार यह कल ही क्यों हुआ? अब यह क्या हो गया है, जो मुझे समझ नहीं आ रहा है जी! क्या ऑपरेशन के लिए कोई सावन महीने का सोमवार ढूंढा गया था क्या? क्या हो गया है इन लोगों को? हताशा-निराशा इस हद तक और देखिए मजा, पिछले कई सप्ताह से हां, हां, ऑपरेशन सिंदूर हो गया, तो ठीक है, पहलगाम के आतंकियों का क्या हुआ? पहलगाम के आतंकियों का और हुआ, तो कल क्यों हुआ? और कभी क्यों हुआ? क्या हाल है जी इनका?

शास्त्रों में कहा गया है, हमारे यहां शास्त्रों में कहा गया है-

शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्र चिंता प्रवर्तते,

अर्थात्- जब राष्ट्र शास्त्र से सुरक्षित होते हैं, तभी वहां शास्त्र की ज्ञान की चर्चाएं जन्म ले पाती हैं। जब सीमा पर सेनाएं मजबूत होती हैं, तभी लोकतंत्र प्रखर होता है।

ऑपरेशन सिंदूर बीते दशक में भारत की सेना के सशक्तिकरण का एक साक्षात प्रमाण है। यह ऐसे ही नहीं हुआ है। कांग्रेस के शासन के दौरान सेनाओं को आत्मनिर्भर बनाने के संबंध में सोचा तक नहीं जाता था। आज भी आत्मनिर्भर शब्द का मजाक उड़ाया जाता है। वैसे वह महात्मा गांधी से आया हुआ है, लेकिन आज भी मजाक उड़ाया जाता है। हर रक्षा सौदे में कांग्रेस अपने मौके खोजती रहती थी। छोटे-छोटे हथियारों के लिए विदेशों पर निर्भरता, यह इनका कार्यकाल रहा है। बुलेट प्रूफ जैकेट, नाइट विजन कैमरा तक नहीं होते थे और लंबा लिस्ट है। जीप से शुरू होता है, बोफोर्स, हेलीकॉप्टर, हर चीज के साथ घोटाला जुड़ा हुआ है।

हमारी सेनाओं को आधुनिक हथियारों के लिए दशकों तक इंतजार करना पड़ा। आजादी के पहले और इतिहास गवाह है, एक जमाना था, जब डिफेंस मैन्युफैक्चरिंग में भारत की आवाज सुनाई देती थी। जिस समय तलवारों से लड़ा जाता था ना, तब भी तलवारें भारत की श्रेष्ठ मानी जाती थीं। हम डिफेंस से इक्विपमेंट में आगे थे, लेकिन आजादी के बाद जो एक मजबूत डिफेंस इक्विपमेंट मैन्युफैक्चरिंग का हमारा दायरा था, जो हमारा पूरा इकोसिस्टम था, उसको सोच समझकर के तबाह कर दिया गया, उसको दुर्बल किया गया। रिसर्च और मैन्युफैक्चरिंग के लिए रास्ते बंद कर दिए गए। अगर इसी नीति पर हम चलते, तो भारत इस 21वीं सदी में ऑपरेशन सिंदूर के संबंध में सोच भी नहीं सकता था। यह हालत करके रखा हुआ था इन्होंने, भारत को सोचना पड़ता कि अगर कोई एक्शन लेना है, तो शस्त्र कहां से मिलेंगे? साधन कहां से मिलेगा? बारूद कहां से मिलेगा? समय पर मिलेगा कि नहीं मिलेगा? बीच बचाव में रुक तो नहीं जाएगा? यह टेंशन पालना पड़ता।

बीते एक दशक में मेक इन इंडिया हथियार सेना को मिले, उन्होंने इस ऑपरेशन में बहुत निर्णायक भूमिका निभाई है।

एक दशक पहले भारत के लोगों ने संकल्प लिया, हमारा देश सशक्त, आत्मनिर्भर और आधुनिक राष्ट्र बने। रक्षा, सुरक्षा, हर क्षेत्र में बदलाव के लिए एक के बाद एक ठोस कदम उठाए गए। सीरीज ऑफ रिफॉर्म्स किए गए और देश में सेना में जो रिफॉर्म्स हुए हैं, जो आजादी के बाद पहली बार हुए हैं। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ की नियुक्ति, यह विचार कोई नया नहीं था। दुनिया में प्रयोग भी चलते हैं, भारत में निर्णय नहीं होते थे। यह बहुत बड़ा रिफॉर्म था, हमने किया और बहुत ही, मैं हमारी तीनों सेनाओं का अभिनंदन करता हूं कि इस व्यवस्था को उन्होंने दिल से सहयोग किया है, दिल से स्वीकार किया है। सबसे बड़ी ताकत, जॉइंटनेस और इंटीग्रेशन की, इस समय नेवी हो, एयरफोर्स हो, आर्मी हो, यह इंटीग्रेशन और जॉइंटनेस ने हमारी ताकत को अनेक गुना बढ़ा दिया और उसका परिणाम भी हमारी नजर में आया है, यह हमने करके दिखाया है। सरकार की जो डिफेंस प्रोडक्शन की कंपनियां थी, उसमें हमने रिफॉर्म किए। शुरुआत में वहां पर आग लगाना, आंदोलन करवाना, हड़ताल करवाने के खेल चल रहे थे, अभी भी बंद नहीं हुए हैं, लेकिन देश हित को सर्वोपरि मान करके उन डिफेंस इंडस्ट्री के हमारे जो लोग थे सरकारी व्यवस्था में, उन्होंने इसको मन से लिया, रिफॉर्म को स्वीकार किया

और वह भी आज बहुत प्रोडक्टिव बन गए। इतना ही नहीं हमने प्राइवेट सेक्टर के लिए भी डिफेंस के दरवाजे खोल दिए हैं और आज भारत का प्राइवेट सेक्टर आगे आ रहा है। आज स्टार्टअप्स डिफेंस के क्षेत्र में हमारे 27-30 साल के नौजवान, टीयर टू, टियर थ्री सिटीज के नौजवान, कई कुछ जगह तो बेटियां स्टार्टअप्स का नेतृत्व कर रही हैं, डिफेंस के सेक्टर में सैकड़ों की तादाद में आज स्टार्टअप्स काम कर रहे हैं।

ड्रोंस के जितने भी एक्टिविटीज हमारे देश में हो रही है, शायद एवरेज 30-35 की उम्र होगी, जो यह लोग कर रहे हैं। सारे लोग और सैकड़ों की तादाद में कर रहे हैं और उसकी ताकत क्योंकि इनका भी योगदान था इसमें, जिन्होंने इस प्रकार के प्रोडक्शन किए हैं और वह हमें ऑपरेशन सिंदूर में बहुत काम आए। मैं उन सबके प्रयासों को बहुत साधुवाद करता हूं और मैं उनको विश्वास दिलाता हूं, आगे बढ़िए, अब देश रुकने वाला नहीं है।

डिफेंस सेक्टर में मेक इन इंडिया, यह नारा नहीं था। हमने इसके लिए बजट, पॉलिसी में जो परिवर्तन करना था, जो नए इनीशिएटिव लेने थे, वह नए इनीशिएटिव लिए और सबसे बड़ी बात क्लियर कट विजन के साथ हमने देश में मेक इन इंडिया डिफेंस सेक्टर के अंदर तेज गति से हम आगे बढ़ रहे हैं।

एक दशक में डिफेंस का बजट लगभग पहले से तीन गुना हुआ है। डिफेंस प्रोडक्शन में करीब-करीब 250 प्रतिशत वृद्धि हुई है, ढाई सौ प्रतिशत वृद्धि हुई है। 11 वर्षों में डिफेंस एक्सपोर्ट 30 गुना से भी ज्यादा बढ़ा है, 30 गुना से ज्यादा बढ़ा है। डिफेंस एक्सपोर्ट आज दुनिया के करीब 100 देशों तक हम पहुंचे हैं।

कुछ चीजें ऐसी होती हैं, जो इतिहास में बहुत बड़ा प्रभाव छोड़ती हैं। ऑपरेशन सिंदूर ने डिफेंस का जो मार्केट है, उसमें भारत का झंडा गाड़ दिया है। भारत के हथियारों की डिमांड आज बढ़ती चली जा रही है, मांग बढ़ रही है। यह भारत में भी उद्योगों को भी बल देगी, MSMEs को बल देगी। हमारे नौजवानों को रोजगार देगी और हमारे नौजवान अपनी बनाई चीजों से दुनिया में अपनी ताकत का प्रदर्शन कर पाएंगे, यह आज दिख रहा है। डिफेंस के क्षेत्र में जो आत्मनिर्भर भारत की दिशा में हम जो कदम उठा रहे हैं, मैं हैरान हूं, कुछ लोगों को आज भी तकलीफ हो रही है, जैसे उनका खजाना लुट गया, यह कौन सी मानसिकता है? देश को ऐसे लोगों को पहचानना होगा।

डिफेंस में भारत का आत्मनिर्भर होना, यह आज की शस्त्रों की स्पर्धा के काल में विश्व शांति के लिए भी जरूरी है। भारत युद्ध का नहीं, बुद्ध का देश है। हम समृद्धि-शांति चाहते हैं, लेकिन हम यह कभी ना भूलें कि समृद्धि का और शांति का रास्ता सख्ती से ही गुजरता है।

हमारा भारत, छत्रपति शिवाजी महाराज, महाराजा रणजीत सिंह, राजेंद्र चोडा, महाराणा प्रताप, लसिथ बोरफुकान और महाराजा सुहेलदेव का देश है।

हम विकास और शांति के लिए सामरिक सामर्थ्य पर भी फोकस करते हैं।

कांग्रेस के पास नेशनल सिक्योरिटी का विजन ना पहले था और आज तो सवाल ही नहीं उठाता है। कांग्रेस ने हमेशा नेशनल सिक्योरिटी पर समझौता किया है। आज जो लोग पूछ रहे हैं, PoK को वापस क्यों नहीं लिया? वैसे यह सवाल मुझे ही पूछ सकते हैं और किसको पूछ सकते हैं? लेकिन इसके पहले जवाब देना होगा पूछने वालों को, किसकी सरकार ने PoK पर पाकिस्तान को कब्जा करने का अवसर दिया था? जवाब साफ है, जवाब साफ है, जब भी मैं नेहरू जी की चर्चा करता हूं, तो कांग्रेस और उसका पूरा इकोसिस्टम बिलबिला जाता है, पता नहीं क्या है?

हम एक शेर सुना करते थे, मुझे ज्यादा इसका ज्ञान तो नहीं है, लेकिन सुनते थे। लम्हों ने खता की और सदियों ने सजा पाई। आजादी के बाद से ही जो फैसले लिए गए, उनकी सजा आज तक देश भुगत रहा है। यहां बार-बार एक बात का जिक्र हुआ और मैं फिर से करना चाहूंगा, अक्साई चीन की जो उस पूरे क्षेत्र को बंजर जमीन करार दिया गया। यह कह करके की बंजर है, देश की 38000 वर्ग किलोमीटर जमीन हमें खोनी पड़ी।

मैं जानता हूं, मेरी कुछ बातें चुभने वाली हैं। 1962 और 1963 के बीच कांग्रेस के नेता जम्मू-कश्मीर के पूंछ, उरी, नीलम वैली और किशनगंगा को छोड़ देने का प्रस्ताव रख रहे थे। भारत की भूमि...

और वह भी लाइन ऑफ पीस, लाइन ऑफ पीस के नाम पर किया जा रहा था। 1966 राणा कच्छ पर इन्हीं लोगों ने मध्यस्थता स्वीकार की। यह था उनका राष्ट्रीय सुरक्षा का विजन, एक बार फिर उन्होंने भारत का करीब 800 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पाकिस्तान को सौंप दिया, जिसमें क्षणबेट भी शामिल हैं, कहीं उसको क्षणाबेट भी कहते हैं। 1965 की जंग में हाजी पीर पास को हमारी सेना ने वापस जीत लिया था, लेकिन कांग्रेस ने उसे फिर लौटा दिया। 1971 पाकिस्तान के 93000 फौजी हमारे पास बंदी थे, पाकिस्तान का हजारों वर्ग किलोमीटर एरिया हमारी सेना ने कब्जा किया था। हम बहुत कुछ कर सकते थे, विजय की स्थिति में थे। उस दौरान अगर थोड़ी सा विजन होता, थोड़ी सी समझ होती, तो PoK वापस लेने का निर्णय हो सकता था। वह मौका था, वह मौका भी छोड़ दिया गया और इतना ही नहीं, इतना सारा जब सामने टेबल पर था, अरे कम से कम करतारपुर साहिब को तो ले सकते थे, वह भी नहीं कर पाए आप। 1974 श्रीलंका को कच्चातिवु द्वीप को गिफ्ट कर दिया गया, आज तक हमारे मछुआरे भाई-बहनों को इससे परेशानी होती है, उनकी जान पर आफत आती है। क्या गुनाह था तमिलनाडु के मेरे फिशरमैन भाई-बहनों का कि आपने उनका हक छीन लिया और दूसरों को गिफ्ट कर दिया? कांग्रेस दशकों से यह इरादा लेकर चल रही थी कि सियाचिन से सेना हटा दी जाए।

2014 में देश ने इनको मौका नहीं दिया वरना आज सियाचिन भी हमारे पास नहीं होता।

आजकल कांग्रेस के जो लोग हमें diplomacy का पाठ पढ़ा रहे हैं। मैं उन्हें उनकी diplomacy याद दिलाना चाहता हूं। ताकि उनको भी कुछ याद रहे, पता चले। 26/11 जैसे भयंकर हमले के बाद, बहुत बड़ा आतंकी हमला था। कांग्रेस का पाकिस्तान से प्रेम नहीं रूका। इतनी बड़ी घटना 26/11 की हुई थी। विदेशी दबाव में हमले के कुछ हफ्तों के भीतर ही कांग्रेस सरकार ने पाकिस्तान से बातचीत शुरू कर दी।

कांग्रेस सरकार ने 26/11 की इतनी बड़ी घटना के बाद भी एक भी diplomat को भारत से बाहर निकालने की हिम्मत नहीं की। छोड़ों इसे, एक वीजा तक कैंसिल नहीं किया, एक वीजा तक कैं सिल नहीं कर पाए थे। देश पर पाकिस्तानी स्पांसर बड़े-बड़े हमले होते गए, लेकिन यूपीए सरकार ने पाकिस्तान को most favoured nation का दर्जा देकर रखा था, वो कभी वापस नहीं लिया था। एक तरफ देश मुंबई के हमले का न्याय मांग रहा था, दूसरी तरफ कांग्रेस पाकिस्तान के साथ व्यापार करने में लगी थी। पाकिस्तान वहां से खून की होली खेलने वाले आतंकियों को भेजते रहे और कांग्रेस यहां अमन की आस के मुशायरे किया करते थे, मुशायरे होते थे। हमने आतंकवाद और अमन की आस का ये वन वे ट्रैफिक बंद कर दिया। हमने पाकिस्तान का MFN का दर्जा रद्द किया, वीजा बंद किया, हमने अटारी वाघा बॉर्डर को बंद कर दिया।

भारत के हितों को गिरवी रख देना, ये कांग्रेस की पार्टी की पुरानी आदत है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण सिंधु जल समझौता है। सिंधु जल समझौता किसने किया? नेहरू जी ने किया और मामला किससे जुड़ा था, भारत से निकलने वाली नदियां, हमारे यहां से निकली हुई नदियां, उसका वो पानी था। और वो नदियां हजारों साल

से भारत की सांस्कृतिक विरासत रही हैं, भारत की चेतन्य शक्ति रही हैं, भारत को सुजलाम-सुफलाम बनाने में उन नदियों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। सिंधु नदी जो सदियों से भारत की पहचान हुआ करती थी, उसी से भारत जाना जाता था, लेकिन नेहरू जी और कांग्रेस ने सिंधु और झेलम जैसी नदियों पर विवाद के लिए पंचायत किसको दी? वर्ल्ड बैंक को दी। वर्ल्ड बैंक फैसला करे क्या करना है, नदी हमारी, पानी हमारा। सिंधु जल समझौता सीधा-सीधा भारत की अस्मिता और भारत के स्वाभिमान के साथ किया गया बहुत बड़ा धोखा था।

आज के देश के युवा ये बात सुनते होंगे तो उनको भी आश्चर्य होगा, कि ऐसे लोग थे हमारे देश का काम कर रहे थे। नेहरू जी ने strategically और क्या किया? ये जो पानी था, जो नदियां थीं, जो भारत से निकल रही थी, उन्होंने 80 प्रतिशत पानी पाकिस्तान को देने के लिए वो राजी हो गए। और इतना बड़ा हिन्दुस्तान उसको सिर्फ 20 पर्सेंट पानी। कोई मुझे समझाए भई ये कौन सी बुद्धिमानी थी, कौन सा देशहित था, कौन सी डिप्लोमेसी थी, क्या हालत करके बनाकर रखा था आप लोगों ने। इतनी बड़ी आबादी वाला हमारा देश, हमारे यहां से निकलती हुई ये नदियां और सिर्फ 20 पर्सेंट पानी। और 80 प्रतिशत पानी उन्होंने उसको दिया, जो देश खुलेआम भारत को अपना दुश्मन करार देता रहता है, दुश्मन कहता रहता है। और ये पानी पर किसका हक था? हमारे देश के किसानों का, हमारे देश के नागरिकों का, हमारा पंजाब, हमारा जम्मू कश्मीर। देश के एक बहुत बड़े हिस्से को इन्होंने पानी के संकट में धकेल दिया, इस एक कारण से। और राज्यों के भीतर भी पानी को लेकर के आपस में संघर्ष पैदा हुए, प्रतिस्पर्धा पैदा हुई, और उनका जिस पर हक था, उस पर पाकिस्तान मौज करता रहा। और ये दुनिया में अपनी डिप्लोमेसी का पाठ पढ़ाते रहते थे।

अगर ये treaty न होती, तो पश्चिमी नदियों पर कई बड़ी परियोजनाएं बनती। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और दिल्ली वहां के किसानों को भरपूर पानी मिलता है, पीने के पानी की कोई समस्या नहीं रहती है। औद्योगिक प्रगति के लिए भारत बिजली बना पाता, इतना ही नहीं नेहरू जी ने इसके उपरांत करोड़ों रुपये भी दिए, ताकि पाकिस्तान नहर बना सके।

इससे भी बड़ी बात देश चौंक जाएगा, ये चीजें छुपाई गई हैं, दबा दी गई हैं। कहीं भी बांध बनता है तो उसमें एक मैकेनिज्म होता है, उसकी सफाई का, desilting का, उसमें जो मिट्टी भर जाती है, बाकी घास वगैरह भर जाता है, तो उसकी कैपेसिटी कम होती है, तो उसकी सफाई के लिए, यानी इनबिल्ट व्यवस्था होती है। नेहरू जी ने पाकिस्तान के कहने पर ये शर्त स्वीकार की है, कि इन बांध में जो मिट्टी आएगी, कूड़ा-कचरा आएगा और बांध भर जाएगा, इसकी सफाई नहीं कर सकते, desilting नहीं कर सकते हैं। बांध हमारे यहां, पानी हमारा लेकिन निर्णय पाकिस्तान का। क्या आप desilting नहीं कर सकते इतना ही नहीं, जब इस बार में डिटेल में गया, तो एक बांध तो ऐसा है कि जहां desilting के लिए यह गेट होता है ना, उसको वेल्डिंग कर दिया गया है, ताकि कोई गलती से भी खोल करके मिट्टी को निकाल ना दे। पाकिस्तान ने नेहरू जी से लिखवा लिया था कि, भारत बिना पाकिस्तान की मर्जी अपने बांधों में जमा होने वाली मिट्टी साफ नहीं करेगा, desilting नहीं करेगा। यह समझौता देश के खिलाफ था और बाद में नेहरू जी को भी यह गलती माननी पड़ी। इस समझौते में निरंजन दास गुलाटी करके एक सज्जन उसमें जुड़े हुए थे। उन्होंने किताब लिखी है, उस किताब में उन्होंने लिखा है कि फरवरी 1961 में, नेहरू ने उनसे कहा था, गुलाटी मुझे उम्मीद थी कि यह समझौता अन्य समस्याओं के समाधान का रास्ता खोलेगा, लेकिन हम वहीं हैं, जहां पहले थे, यह नेहरू जी ने कहा। नेहरू जी केवल तात्कालिक प्रभाव देख पा रहे थे, इसलिए उन्होंने कहा कि हम वहीं के वहीं हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि इस एग्रीमेंट के कारण देश बहुत पिछड़ गया, देश बहुत पीछे चला गया और देश का बहुत नुकसान हुआ, हमारे किसानों को नुकसान हुआ, हमारी खेती को नुकसान हुआ और नेहरू जी उस डिप्लोमेसी को जानते थे, जिसमें किसान का कोई वजूद ही नहीं था, यह हाल करके रखा था उन्होंने।

पाकिस्तान आगे दशकों तक भारत के साथ युद्ध और छद्म युद्ध प्रॉक्सी वार करता ही रहा। लेकिन कांग्रेस की सरकारों ने बाद में भी सिंधु जल समझौते की तरफ देखा तक नहीं, नेहरू जी की गलती को सुधारा तक नहीं।

लेकिन अब भारत ने पुरानी गलती को सुधारा है, ठोस निर्णय लिया है। भारत ने नेहरू जी द्वारा की गई बहुत बड़ी ब्लंडर सिंधु जल समझौते को देशहित में, किसानों के हित में, abeyance में रख दिया है। देश का अहित करने वाला यह समझौता अब इस रूप में आगे नहीं चल सकता। भारत ने तय कर दिया है, खून और पानी साथ-साथ नहीं बह सकते।

यहां बैठे साथी आतंकवाद पर लंबी-लंबी बातें करते हैं। जब ये सत्ता में थे, जब इनको राज करने का अवसर मिला था, तब देश का हाल क्या है, क्या रहा था, वो आज भी देश भूला नहीं है। 2014 से पहले देश में असुरक्षा का जो माहौल था, अगर वो आज याद भी करे ना, तो लोग सिहर जाते हैं।

हम सबको याद हैं, जो नई पीढ़ी के बच्चे हैं उनको पता नहीं है, हम सबको पता है। हर जगह पर अनाउंसमेंट होता था, रेलवे स्टेशन पर जाओ, बस स्टैंड पर जाओ, एयरपोर्ट पर जाओ, बाजार में जाओ, मंदिर में जाओ, कहीं पर भी जाओ जहां भी भीड़ होती है, कोई भी लावारिस चीज दिखे, छूना मत, पुलिस को तुरंत जानकारी देना, वह बम हो सकता है, हम 2014 तक यही सुनते आए थे, यह हालत करके रखा था। देश के कोने-कोने में यही हाल था। माहौल यह था कि जैसे कदम-कदम पर बम बिछे हैं और खुद को ही नागरिकों ने बचाना है, उन्होंने हाथ ऊपर कर दिए थे, अनाउंस कर दिया।

कांग्रेस की कमजोर सरकारों के कारण देश को कितनी जानें गंवानी पड़ी, हमें अपनों को खोना पड़ा।

आतंकवाद पर यह लगाम लगाई जा सकती थी। हमारी सरकार ने 11 साल में यह करके दिखाया है, एक बहुत बड़ा सबूत है। 2004 से 2014 के बीच जो आतंकी घटनाएं होती थी, उन घटनाओं में बहुत बड़ी कमी आई है। इसलिए देश भी जानना चाहता है, अगर हमारी सरकार आतंकवाद पर नकेल कस सकती है, तो कांग्रेस सरकारों की ऐसी कौन सी मजबूरी थी कि आतंकवाद को फलने-फूलने दिया।

कांग्रेस के राज में आतंकवाद अगर फला फूला है, तो उसका एक बड़ा कारण इनकी तुष्टिकरण की राजनीति है, वोट बैंक की राजनीति है। जब दिल्ली में बाटला हाउस एनकाउंटर हुआ, कांग्रेस के एक बड़ी नेता की आंख में आंसू थे, आतंकवादी मारे गए इसके कारण और वोट पाने के लिए इस बात को हिंदुस्तान के कोने-कोने में पहुंचाया गया।

2001 में देश की संसद पर हमला हुआ था, तब कांग्रेस के एक बड़े नेता ने अफजल गुरु को बेनिफिट ऑफ डाउट देने की बात कही थी।

मुंबई में 26/11 का इतना बड़ा आतंकी हमला हुआ। एक पाकिस्तानी आतंकी जिंदा पकड़ा गया। पाकिस्तान की मीडिया ने, दुनिया ने यह स्वीकार किया कि पाकिस्तानी है, लेकिन यहां कांग्रेस पार्टी इतना बड़ा पाकिस्तान का पाप, इतना बड़ा पाकिस्तानी आतंकी हमला और यह क्या खेल खेल रहे थे? वोट बैंक की राजनीति के लिए क्या कर रहे थे? कांग्रेस पार्टी इसको भगवा आतंक सिद्ध करने में जुटी हुई थी। कांग्रेस दुनिया को हिंदू आतंकवाद की थ्योरी बेचने में लगी हुई थी। कांग्रेस के एक नेता ने अमेरिका के बड़े राजनयिक को यहां तक कह दिया था, कि लश्कर-ए-तैयबा से भी बड़ा खतरा भारत के हिंदू ग्रुप हैं। यह कहा गया था। तुष्टीकरण के लिए

कांग्रेस ने जम्मू कश्मीर में भारत का संविधान, बाबा साहब अंबेडकर का संविधान, उसे जम्मू कश्मीर में पैर नहीं रखने दिए इन्होंने, घुसने नहीं दिया, उसे बाहर रखा। तुष्टिकरण और वोट बैंक के राजनीति के लिए कांग्रेस हमेशा देश की सुरक्षा की बलि चढ़ती रही।

तुष्टिकरण के लिए ही कांग्रेस ने आतंकवाद से जुड़े कानूनों को कमजोर किया।

दल हित में हमारे मत मिले ना मिले, देशहित में हमारे मन जरुर मिलने चाहिए। पहलगाम की विभीषिका ने हमें गहरे घाव दिए हैं, उसने देश को झकझोर दिया है, इसके जवाब में हमने ऑपरेशन सिंदूर किया, तो सेनाओं के पराक्रम ने हमारे आत्मनिर्भर अभियान ने देश में एक सिंदूर स्पिरिट पैदा किया है। ये सिंदूर स्पिरिट हमने तब भी देखी, जब दुनिया भर में हमारे प्रतिनिधिमंडल भारत की बात बताने गए। लेकिन मुझे दुख इस बात का है, हैरानी भी है, जो खुद को कांग्रेस के बड़े नेता समझते हैं, उनके पेट में दर्द हो रहा है कि भारत का पक्ष दुनिया के सामने क्यों रखा गया। शायद कुछ नेताओं को सदन में बोलने पर भी पाबंदी लगा दी गई।

इस मानसिकता से बाहर निकलने की जरूरत है। कुछ पंक्तियां मेरे मन में आती हैं, मैं अपने भाव व्यक्त करना चाहता हूं।

करो चर्चा और इतनी करो, करो चर्चा और इतनी करो,
की दुश्मन दहशत से दहल उठे, दुश्मन दहशत से दहल उठे,
रहे ध्यान बस इतना ही, रहे ध्यान बस इतना ही,
मान सिंदूर और सेना का प्रश्नों में भी अटल रहे।
हमला मां भारती पर हुआ अगर, तो प्रचंड प्रहार करना होगा,
दुश्मन जहां भी बैठा हो, हमें भारत के लिए ही जीना होगा।

कांग्रेस के साथियों से आग्रह है कि एक परिवार के दबाव में पाकिस्तान को क्लीन चिट देना बंद कर दें। जो देश के विजय का क्षण है, कांग्रेस उसे देश के उपहास का क्षण न बनाएं। कांग्रेस अपनी गलती सुधारे। अब भारत आतंकी नर्सरी में ही आतंकियों को मिट्टी में मिलाएगा। हम पाकिस्तान को भारत के भविष्य से खेलने नहीं देंगे और इसलिए ऑपरेशन सिंदूर खत्म नहीं हुआ है, ऑपरेशन सिंदूर जारी है और यह पाकिस्तान के लिए भी नोटिस है, वो जब तक भारत के खिलाफ आतंक का रास्ता रोकेगा नहीं, तब तक भारत एक्शन लेता रहेगा। भारत का भविष्य सुरक्षित और समृद्ध होगा, यही हमारा संकल्प है। ▪

पार्टी को और ऊँचाईयों पर ले जाएं
हेमंत खण्डेलवाल

भाजपा परिवार ही मेरा परिवार है, हम सब मिलकर संगठन को मजबूत करें

हम सब एक विचार के लिए कार्य करते हैं। हमारे लिए संगठन सर्वोपरि है। राष्ट्र प्रथम की भावना के साथ जनता की सेवा ही हमारा एकमात्र लक्ष्य है। देश में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व एवं प्रदेश में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में डबल इंजन सरकार की जनहितैषी योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाकर उन्हें विकास की मुख्यधारा से जोड़ना है। हमें संवाद, समन्वय व संपर्क के माध्यम से पार्टी को और ऊँचाईयों पर ले जाना है।

जिला एवं मंडल स्तर पर जो कार्य अपूर्ण है उन्हें शीघ्र पूर्ण करना है। जिन जिलों में पार्टी का जिला कार्यालय नहीं है वहां शीघ्र सर्व सुविधा युक्त भवन बनाने की दिशा में कार्य करना है।

संगठन द्वारा दिए गए कार्यक्रमों को समय सीमा में सुनिश्चित करना है। जिला कोर कमेटी, जिला पदाधिकारी, मंडल अध्यक्ष, मंडल प्रभारी, बूथ अध्यक्ष एवं शक्ति केंद्र संयोजकों की अलग-अलग बैठकें महीने में एक बार अवश्य हो यह सुनिश्चित करें। ▪

सरकार की उपलब्धियों को जन-जन तक पहुंचाएं - हितानंद जी

हर बूथ पर विजय हासिल करना हमारा लक्ष्य होना चाहिए

पार्टी कार्यकर्ताओं की अथक मेहनत के कारण पिछले विधानसभा और लोकसभा चुनावों में पार्टी को बड़ी सफलता हासिल हुई। यह सिलसिला आने वाले सालों में रुकना नहीं चाहिए। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के 'मन की बात' में प्रदेश लगातार बेहतर प्रदर्शन के साथ आगे बढ़ रहा है। हमारा प्रयास हर बूथ पर 'मन की बात कार्यक्रम का आयोजन कर ज्यादा से ज्यादा लोगों को जोड़ने के साथ केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं का लाभ उन्हें दिलाना है। 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के अंतर्गत रोपे गए पौधों का संरक्षण व संवर्धन करना है, जिससे यह आने वाली पीढ़ियों के लिए वरदान साबित हो। प्रदेश सरकार 15 अगस्त से 'एक बगिया मां के नाम' अभियान के तहत फलदार पौधारोपण का जो कार्य प्रदेश में आयोजित करने जा रही है उसमें हमें सहयोग करना है। 'एक देश एक चुनाव' देश की आवश्यकता है। इसकी जानकारी और सच्चाई जन-जन तक पहुंचाने के लिए हमें कार्ययोजना बनाकर कार्य करना होगा। ▪

''ऑपरेशन सिंदूर'' आतंकवाद के दिल पर प्रहार -अमित शाह

'ऑपरेशन सिंदूर' और 'ऑपरेशन महादेव' के द्वारा प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत के सुरक्षा बलों ने दुनिया के सभी आतंकी हमलों में अब तक का सबसे सटीक और त्वरित जवाब दिया है।

लश्कर के एक आउटफिट TRF ने पहलगाम हमले की जिम्मेदारी ली थी और मैं स्वयं उसी दिन वहां पहुंच गया था और सुरक्षा स्थिति की समीक्षा हुई और इसकी व्यवस्था की गई कि ये लोग देश छोड़कर भागने न पाएं।

ऑपरेशन महादेव के तहत 28 जुलाई 2025 को कश्मीर में लश्कर के तीन आतंकवादियों - सुलेमान, अफगान और जिब्रान को हमारे सुरक्षाबलों ने मौत के घाट उतार दिया और इससे स्पष्ट हो गया है कि पहलगाम के हमले में लश्कर का ही हाथ था। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के माध्यम से आतंकियों के आकाओं को मारा और 'ऑपरेशन महादेव' में पहलगाम हमले में शामिल आतंकियों को मिट्टी में मिलाया।

'ऑपरेशन सिंदूर' और 'ऑपरेशन महादेव' के द्वारा प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत के सुरक्षा बलों ने दुनिया के सभी आतंकी हमलों में अब तक का सबसे सटीक और त्वरित जवाब दिया है। लश्कर के एक आउटफिट TRF ने पहलगाम हमले की जिम्मेदारी ली थी और मैं स्वयं उसी दिन वहां पहुंच गया था और सुरक्षा स्थिति की समीक्षा हुई और इसकी व्यवस्था की गई कि ये लोग देश छोड़कर भागने न पाएं।

ऑपरेशन महादेव में मारे गए 3 आतंकियों के पास से तीन राइफल मिलीं- एक 19 एम-4 कार्बाइन और दो एके 47। पहलगाम हमले के बाद वहां से एनआईए ने खाली कारतूसों को बरामद किया था और इनकी जांच फॉरेंसिक साइंस लैब में की गई। जब ये आतंकी मारे गए तो इनके पास से मिली राइफल की टेस्टिंग की गई और फॉरेंसिक मिलान करने पर शत प्रतिशत सिद्ध हो गया कि इन्हीं तीन राइफल्स का उपयोग पहलगाम हमले में किया गया। इसके बाद ये मालूम हुआ कि इनमें से 44 कारतूस 19 एम-4 कार्बाइन के और 25 कारतूस एके 47 राइफल्स के थे। एनआईए ने गहन जांच की और 1055 लोगों के बयान लिए और संदिग्धों के स्केच बनाए और जिन 3 लोगों ने इन्हें आसरा दिया था उन्हें भी गिरफ्तार किया गया।

हमारी एजेंसियों ने आतंकियों के मौजूद होने की सूचना को पुख्ता करने के लिए 22 मई से 22 जुलाई तक लगातार प्रयास किए। 22 जुलाई को हमें सफलता मिली और आतंकवादियों की उपस्थिति की पुष्टि हो गई। सेना के 4 पैरा के नेतृत्व में CRPF और जम्मू कश्मीर पुलिस के जवानों ने एक साथ आतंकियों को घेरा और दिनांक 28 जुलाई को हुए ऑपरेशन में हमारे निर्दोष नागरिकों को मारने वाले तीनों आतंकियों को मौत के घाट उतार दिया गया।

विपक्षी सरकार के तत्कालीन गृह मंत्री आतंकी पाकिस्तान से आये थे इसका सबूत मांग कर पाकिस्तान और लश्कर को बचाने का काम कर रहे हैं। विपक्षी पार्टी अपने वोट बैंक के लिए पाकिस्तान का समर्थन करने और लश्कर को बचाने से भी नहीं डरेगी। विपक्षी पार्टी कहती है कि ऑपरेशन का नाम धर्म के आधार पर रखने के अलावा हमें कुछ नहीं आता है। विपक्ष को नहीं मालूम कि ''हर हर महादेव'' सिर्फ धर्म का नारा नहीं है बल्कि शिवाजी महाराज ने मुगलों के खिलाफ जो लड़ाई लड़ी तब ये उनकी सेना का युद्धघोष था। ये प्रतीक है भारत, भारत की संप्रभुता पर हमले और भारत की सीमाओं के अतिक्रमण पर दिये जाने वाली जवाबी कार्यवाही का। ये हमारी सेनाओं के जवानों के मन से निकलने वाला युद्धघोष है और इसे हिंदू - मुस्लिम की दृष्टि से नहीं देखा जाना चाहिए।

इन आतंकियों को मारना इतना सरल नहीं था। 22 दिनों तक सीआरपीएफ, सेना और जम्मू कश्मीर पुलिस के जवानों ने ड्रोन द्वारा भेजे गये भोजन पर रहकर बेहद कठिन परिस्थितियों में इन आतंकियों का पीछाकर इन्हें मारा है। पूरे देश की जनता विपक्षी पार्टी को देख रही है कि इनकी प्रायोरिटी देश की सुरक्षा नहीं है, राजनीति है, इनकी प्रायोरिटी आतंकवाद को समाप्त

करना नहीं बल्कि अपना वोटबैंक है, इनकी प्रायोरिटी हमारी सीमाओं की सुरक्षा नहीं बल्कि सेक्युलरिज्म और अपीजमेंट की पॉलिटिक्स है। पहलगाम हमला 22 अप्रैल, 2025 को दोपहर 1 बजे हुआ और वे स्वयं शाम होने से पहले ही श्रीनगर पहुंच गए थे। अगले दिन मृत लोगों को श्रद्धांजलि देने गए और वो जीवन का एक ऐसा दिन है जो कभी नहीं भूल सकते। धर्म के नाम पर चुन-चुनकर परिजनों के सामने लोगों को मारने का जघन्य अपराध आज तक कभी नहीं हुआ था। आतंकवादी ये संदेश देना चाहते थे कि वे कश्मीर को आतंकवाद से कभी मुक्त नहीं होने देंगे। इस सदन से आतंकियों को ये संदेश देना चाहता हूं कि कश्मीर आतंकवाद से मुक्त होकर रहेगा और ये नरेन्द्र मोदी जी का संकल्प है।

प्रधानमंत्री मोदी जी ने बिहार में कहा था कि आतंकवादियों की बची खुची जमीन मिट्टी में मिला देंगे और आज आतंकवादियों के ट्रेनिंग कैंप, हेडक्वार्टर और लॉंच पैड्स जमींदोज हो गए हैं। प्रधानमंत्री जी ने कहा था कि आतंकवादियों के आकाओं को नहीं छोड़ेंगे और आज आतंकियों को भेजने वालों को भी हमारी सेनाओं ने मिट्टी में मिला दिया। प्रधानमंत्री जी ने कहा था कि आतंकवादियों को भी नहीं छोड़ेंगे और ऑपरेशन महादेव के तहत उन तीनों आतंकवादियों को खत्म कर दिया गया। एक प्रकार से मोदी जी द्वारा कहे गए हर वाक्य को हमारी सेना, वायुसेना, नौसेना और सभी केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बलों और जम्मू कश्मीर पुलिस ने अपना लक्ष्य बना लिया और आतंकवादियों को कठोर दंड दिया।

23 अप्रैल को Cabinet Committee on Security (CCS) की बैठक बुलाई गई और इसमें न सिर्फ पाकिस्तान बल्कि पूरी दुनिया को कठोर संदेश देने का काम किया गया कि भारत की सीमा, सेना, नागरिक और संप्रभुता के साथ खिलवाड़ करने के परिणाम भुगतने होंगे। CCS की बैठक में 1960 की जवाहरलाल नेहरू द्वारा की गई एक तरफा पाकिस्तान के फायदे वाली सिंधु जल संधि को तत्काल प्रभाव से रोक दिया गया। सिंधु जल संधि एक तरफा है और इस पानी पर भारत के किसानों का अधिकार है और अब कुछ ही समय में कश्मीर, पंजाब, हरियाणा राजस्थान और दिल्ली के लिए पीने का पानी सिंधु के रास्ते पहुंचेगा। इसके बाद अटारी के माध्यम से चल रही एकीकृत जांच चौकी को बंद किया गया, पाकिस्तानी नागरिकों के सार्क वीजा को सस्पेंड कर सभी को पाकिस्तान वापिस भेजने का काम किया गया। नई दिल्ली स्थित पाकिस्तानी उच्चायोग में कार्यरत रक्षा, सैन्य, नौसेना के सलाहकारों को अवांछनीय व्यक्ति घोषित किया गया और उनकी संख्या को 55 से घटाकर 30 किया। CCS बैठक में यह संकल्प लिया गया कि आतंकवादियों को भेजने वालों और कृत्य करने वालों को दंडित किया जाएगा और इसके लिए सेना को खुली छूट देने का काम CCS बैठक में किया गया।

प्रधानमंत्री मोदी जी ने 30 अप्रैल को सशस्त्र सेनाओं को ऑपरेशनल फ्रीडम देने का काम किया कि रक्षा मंत्रालय और सेना दोनों मिलकर तय करेंगे कि टारगेट, तरीका, स्थान और समय क्या होगा। 7 मई को रात 1 बजकर 4 मिनट पर पाकिस्तान के 9 आतंकी अड्डों को ध्वस्त कर दिया जिसमें कम से कम 100 आतंकी मारे गए और लश्कर, जैश और हिज्बुल के हेडक्वार्टर को ध्वस्त करने का काम मोदी सरकार और हमारी सेनाओं ने किया। पाक अधिकृत कश्मीर विपक्षी पार्टी ने दिया था लेकिन इसे वापिस लेने का काम हमारी सरकार ही करेगी। हमने पाकिस्तान स्थित आतंकवादियों के ठिकानों पर हमला किया जिसे पाकिस्तान ने अपने ऊपर हमला मान लिया और 8 मई को पाकिस्तान ने हमारे रिहायशी इलाकों और सैन्य प्रतिष्ठानों पर हमला किया। भारतीय सेना ने पाकिस्तान के 11 एयरबेस ध्वस्त किए और आतंकवाद को करारा जवाब दिया। इसके बाद पाकिस्तान ने घुटनों पर आकर हमले रोकने की गुहार लगाई। ऑपरेशन सिंदूर आतंकवाद के दिल पर भारत का पहला प्रहार है।

मोदी सरकार की नीतियों से कश्मीर में आतंकवाद 70 प्रतिशत कम हुआ है और अब कश्मीर शांति की ओर अग्रसर है। पहले आतंकी बाहर से नहीं आते थे, कश्मीरी युवा ही बंदूकें उठाते थे, अब आतंकी संगठनों में एक भी कश्मीरी युवा शामिल नहीं होता। धारा 370 हटाने से कश्मीर में अलगाववाद और आतंकवाद पर लगाम लगी है। पाकिस्तान के डिफेन्स इंस्टॉलेशन तबाह हो गए और ऑपरेशन सिंदूर में भारतीय सेना का पराक्रम दिखा।

प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में आत्मनिर्भर भारत, सैन्य साजो-सामान का निर्यात बढ़ा है। विपक्ष की तुष्टिकरण नीतियों ने आतंकवाद बढ़ाया था और अब पहलगाम हमले के बाद भारत ने आतंकियों के इकोसिस्टम को ध्वस्त कर दिया है। कश्मीर में पत्थरबाजी और हड़तालें शून्य हो गई हैं और शांति की नई शुरुआत हुई है। मोदी सरकार ने आतंकियों के जनाजे पर रोक लगा दी है और कठोर कदम उठाए हैं। भारतीय सेना अब ब्रह्मोस और आकाश मिसाइलों से लैस है, जबकि पहले नमक-चीनी तक की कमी थी। कश्मीर में लोकतंत्र की जीत के रूप में 98.03 प्रतिशत मतदान के साथ पंचायत चुनाव सफल हुए हैं। आतंकवादियों के वित्तपोषण पर लगाम लगी है और 347 संपत्तियाँ जब्त की गई हैं।

पूर्वोत्तर और नक्सलवाद में 75 प्रतिशत हिंसा कम हुई है और यह मोदी सरकार की एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। भारत ने यूएन चार्टर के तहत आत्मरक्षा में ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम दिया है। कश्मीर में आतंकवाद की जड़ें उखाड़ दी गई हैं और जमात-ए-इस्लामी जैसे संगठनों पर प्रतिबंध लगाया गया है। मोदी सरकार ने 75 पाकिस्तानी समर्थक कर्मचारियों को नौकरी से निकाला है।

ऑपरेशन सिंदूर में पाकिस्तान के आतंकी अड्डों और ट्रेनिंग केंपों को भारतीय सेना ने नष्ट कर दिया है। कश्मीर में 53 परियोजनाओं के साथ 59 हजार करोड़ का निवेश हुआ है जिससे विकास की नई राह खुली है। विपक्षी पार्टी तो आतंकवाद का पोषण करने वाली पार्टी है। जब उरी में हमला हुआ तो हमने सर्जिकल स्ट्राइक की, पुलवामा हमले के जवाब में एयर स्ट्राइक की और पहलगाम के बाद घर में घुसकर परखच्चे उड़ाने का काम हमने किया है।

हमने 2019 में UAPA में संशोधन किया जिसके तहत 57 लोगों को आतंकवादी घोषित किया है। एनआईए (NIA) में संशोधन किया और देश के बाहर जांच करने के अधिकार दिए हैं। एनएसए का सख्त उपयोग किया, 370 को निरस्त किया, पीएफआई को बैन किया, MAC को मजबूत किया, आईसीजेएस (ICJS), नफीस (NAFIS) की स्थापना की, पीएमएलए (PMLA) से टेरर फायनेंसिंग को रोका और नेटग्रिड (NATGRID) के माध्यम से पूरे देश के आतंकी संगठनों को कम्प्यूटर के क्लिक पर रख दिया है। नरेन्द्र मोदी सरकार घुसपैठ और आतंकवादी घटनाओं को समाप्त करने के लिए कृत संकल्पित है।

2008 के मुंबई आतंकी हमले के बाद शर्म अल शेख सम्मेलन हुआ जिसे पूरी दुनिया में बलूचिस्तान ब्लंडर के नाम से जानते हैं जिसमें प्रस्ताव रखा गया कि दोनों देश आतंकवाद के शिकार हैं। दुनिया में कोई पाकिस्तान को आतंकवाद का शिकार कह सकता है क्या? विपक्षी पार्टी ने पाकिस्तान को सर्टिफिकेट दे दिया। जब तक पाकिस्तान से आतंकवाद नहीं रुकता है तब तक वार्ता नहीं हो सकती।

मोदी जी जी-20 को हर राज्य में ले गए और हमारी संस्कृति, क्षमता, पावर और लोकतंत्र को दुनिया के सामने रखने का काम किया है। किसी भी देश के राष्ट्राध्यक्ष को 27 देशों का सर्वोच्च नागरिक सम्मान नही मिला जो मोदी जी को

मिला है और ये सम्मान मोदी जी का नहीं बल्कि भारत के प्रधानमंत्री और देश की 140 करोड़ जनता का है। प्रधानमंत्री मोदी जी का नेतृत्व भावुक नहीं है बल्कि संवेदनशील, निर्णायक और दृढ़ है। कोरोना काल में अडिग होकर मोदी जी अपने रास्ते पर चलते रहे और जब कोरोना समाप्त हुआ तो पूरी दुनिया ने कहा कि सबसे अच्छा प्रबंधन भारत ने किया। हमारे यहां प्रधानमंत्री, भारत सरकार, राज्य सरकारें और 140 करोड़ लोग मिलकर कोरोना के खिलाफ लड़े। सबसे पहले कोरोना का टीका बनाने वाले देशों में भारत था और इन 11 साल में पूरी दुनिया ने भारत की क्षमता को स्वीकारा है।

आज हम 11वें से चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गए हैं, हमारा जीडीपी 4.19 ट्रिलियन हो गया, एक ट्रिलियन डॉलर की डिजिटल अर्थव्यवस्था बनी है। आज हमारी प्रति व्यक्ति आय 68572 रूपए से बढ़कर 1 लाख 33 हजार 488 रूपए हो गई है। राष्ट्रीय राजमार्ग नेटवर्क 60 प्रतिशत बढ़ा, 159 ऑपरेशनल एयरपोर्ट हैं, 136 वंदे भारत ट्रेन हैं, 97 प्रतिशत से अधिक भारतीय रेल का विद्युतीकरण हो चुका है। भारत सबसे बड़ा मोबाइल फोन उत्पादक देश बनने की कगार पर है, तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम बन चुका है। मोदी सरकार में 118 यूनिकॉर्न बने, रक्षा क्षेत्र में हमारा उत्पादन 1.27 लाख करोड़ और निर्यात 21 हजार करोड़ हुआ है। मोदी सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धि है, 60 करोड़ लोगों को घर, बिजली, गैस, शौचालय, पीने का पानी, 5 किलो अनाज और 5 लाख तक का इलाज देना। जब भी भारत की आजादी का इतिहास आजादी के शताब्दी वर्ष में लिखा जाएगा तब ये मोदी युग स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा। हमारे स्वाभिमान, संस्कृति और इतिहास से जुड़ी कई चीजों को विपक्ष ने 75 साल तक लटका कर रखा। ▪

मध्यप्रदेश फिर हुआ गौरवान्वित
मुख्यमंत्री डॉ. यादव

- **इंदौर ने आठवीं बार स्वच्छता रैंकिंग में प्राप्त किया शीर्ष स्थान**
- **उज्जैन का सुपर लीग श्रेणी में सम्मानित होना गर्व का विषय**

स्वच्छता सर्वेक्षण पुरस्कार में मध्यप्रदेश एक बार फिर से गौरवान्वित हुआ। राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु द्वारा मध्यप्रदेश के आठ शहरों को स्वच्छता की विभिन्न श्रेणियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर सम्मानित किया गया। इस उपलब्धि पर सभी स्वच्छता कर्मी, नगरीय निकायों के महापौर, अध्यक्ष, पार्षद, अधिकारी और कर्मचारियों सहित नागरिकों को बधाई।

इंदौर शहर को स्वच्छता के लिए सुपर स्वच्छ श्रेणी लीग में आठवीं बार सम्मानित किया गया। इंदौर पूर्व में सात बार देश के स्वच्छतम शहर का पुरस्कार प्राप्त कर चुका है। विगत वर्षों में श्रेष्ठ प्रदर्शन और भविष्य की संभावनाओं के आधार पर स्वच्छ लीग पुरस्कार इस वर्ष इंदौर को दिया गया। उज्जैन को 3 से 10 लाख जनसंख्या वाले शहरों की श्रेणी में स्वच्छ लीग पुरस्कार प्राप्त हुआ, जो गर्व का विषय है। इसी प्रकार 20 हजार से कम आबादी वाले नगरों की श्रेणी में बुधनी नगर को भी सम्मानित किया।

राजधानी भोपाल प्राकृतिक सुंदरता के अलावा स्वच्छता के क्षेत्र में भी आदर्श बना है और इस आधार पर देश की सर्वश्रेष्ठ राजधानी के रूप में सम्मानित हुआ। विभिन्न श्रेणियों में ग्वालियर, देवास, शाहगंज और जबलपुर भी पुरस्कृत किए गये। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वच्छता का जो संकल्प लिया है, उसमें मध्यप्रदेश कदम से कदम मिलाकर चल रहा है। प्रदेशवासी स्वच्छता सर्वेक्षण के इस मापदंड के आधार पर अपने घर, मोहल्ले, कॉलोनी और नगर को स्वच्छ रखें और इस आदर्श जीवन शैली को दुनिया के बीच प्रदर्शित करने का प्रयास करें। ▪

ऐतिहासिक मुक्त व्यापार समझौता

समझौते से मेक इन इंडिया के संकल्प को बढ़ावा-अमित शाह

भारत और ब्रिटेन के बीच ऐतिहासिक मुक्त व्यापार समझौते (FTA) पर हस्ताक्षर होने से भारत ने वैश्विक व्यापार में एक और मील का पत्थर स्थापित किया है और यह प्रत्येक नागरिक के लिए गौरव और संभावनाओं का क्षण है। यह संधि प्रधानमंत्री मोदी जी की जन-केंद्रित व्यापार कूटनीति का प्रमाण है, जो 95 प्रतिशत कृषि निर्यात पर शुल्क माफ कर हमारे किसानों के लिए समृद्धि के नए युग की शुरुआत करती है और 99 प्रतिशत समुद्री निर्यात पर शून्य शुल्क के साथ हमारे मछुआरों को लाभ पहुंचाती है। यह समझौता मेक इन इंडिया के संकल्प को बढ़ावा देता है और हमारे कारीगरों, बुनकरों, कपड़ा, चमड़ा, जूते-चप्पल, रत्न और आभूषण तथा खिलौनों के लिए व्यापक बाजार खोलकर हमारे स्थानीय उत्पादों का वैश्वीकरण कर उनकी क्षमता को नई ऊँचाई पर पहुँचाता है। ▪

पाकिस्तान टेररिज्म का स्टेट-स्पॉन्सर है-अमित शाह

कश्मीर के दाचीगाम में सेना, CRPF और जम्मू कश्मीर पुलिस के संयुक्त अभियान 'ऑपरेशन महादेव' में तीन आतंकवादियों - सुलेमान, अफगान और जिब्रान - को मार गिराया। सुलेमान लश्कर का ए श्रेणी का कमांडर था जो पहलगाम और गगनगीर में हुए आतंकवादी हमलों में लिप्त था। अफगान और जिब्रान भी लश्कर के ए श्रेणी के आतंकवादी थे जिन्होंने बैसरन घाटी में हमारे निर्दोष नागरिकों को मारा था और ये तीनों आतंकवादी मारे गए हैं।

''ऑपरेशन महादेव'' की शुरूआत 22 मई, 2025 को हुई। पहलगाम हमला 22 अप्रैल, 2025 को दोपहर 1 बजे हुआ और वे शाम साढ़े 5 बजे श्रीनगर पहुंच चुके थे। 23 अप्रैल को सुरक्षा बैठक हुई, जिसमें सभी सुरक्षाबल, सेना, CRPF और जम्मू कश्मीर पुलिस शामिल थे और इस बैठक में निर्णय लिया गया कि पहलगाम आतंकी हमले में शामिल आतंकवादी देश छोड़कर पाकिस्तान न भाग सकें और हमने इसकी पुख्ता व्यवस्था की और उन्हें देश से भागने नहीं दिया। 22 मई, 2025 को आसूचना ब्यूरो (IB) के पास आई एक human intelligence के माध्यम से दाचीगाम क्षेत्र में आतंकियों की उपस्थिति की सूचना मिली। IB और सेना द्वारा दाचीगाम में अल्ट्रा सिग्नल कैप्चर करने के लिए हमारी ऐजेंसियों द्वारा बनाए गए उपकरणों द्वारा मिली इस सूचना को पुख्ता करने के लिए 22 मई से 22 जुलाई तक लगातार प्रयास किए गए। ठंड और ऊंचाईयों पर IB, सेना और CRPF के हमारे अधिकारी और जवान पैदल इनके सिग्नल प्राप्त करने के लिए घूमते रहे। 22 जुलाई को सेंसर्स के माध्यम से हमें सफलता मिली और आतंकवादियों की उपस्थिति की पुष्टि हो गई। तब 4 पैरा के नेतृत्व में CRPF और जम्मू कश्मीर पुलिस के जवानों ने एक साथ आतंकियों को घेरा और ऑपरेशन में हमारे निर्दोष नागरिकों को मारने वाले तीनों आतंकियों को मौत के घाट उतार दिया गया।

राष्ट्रीय जांच एजेंसी (NIA) ने पहले से ही इन तीन आतंकवादियों को शरण देने वाले लोगों को गिरफ्तार कर लिया था। जब इन तीनों आतंकियों के शव श्रीनगर आए तब चार लोगों ने इनकी पहचान कर बताया कि इन्हीं तीनों आतंकवादियों ने पहलगाम में आतंकी घटना को अंजाम दिया था। इसके बाद पहलगाम आतंकी हमले के

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने ऑपरेशन सिंदूर के जरिए पहलगाम हमले में शामिल आतंकवादियों के आकाओं को जमीन में मिलाने का काम किया और हमारी सेना और CRPF ने उन तीन आतंकियों को भी समाप्त कर दिया।

ऑपरेशन महादेव, हमारे देश की सेना, CRPF और जम्मू कश्मीर पुलिस की एक बहुत बड़ी साझा कामयाबी है जिस पर देश की 140 करोड़ जनता को नाज है।

घटनास्थल पर मिले कारतूसों की FSL रिपोर्ट के आधार पर दाचीगाम में इन तीन आतंकियों के पास से मिली तीन राइफलों से मिलान किया गया। इन तीनों राइफलों को एक विशेष विमान द्वारा चंडीगढ़ पहुंचाया गया और फायरिंग कर इनके खाली खोखे जेनेरेट किए गए। इसके बाद पहलगाम हमले में मिले खोखों का मिलान राइफलों की नली और फायरिंग के बाद निकले हुए खोखों से किया गया और तब यह तय हो गया कि इन्हीं तीन राइफलों से पहलगाम में हमारे निर्दोष नागरिकों की हत्या की गई थी।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने ऑपरेशन सिंदूर के जरिए पहलगाम हमले में शामिल आतंकवादियों के आकाओं को जमीन में मिलाने का काम किया और हमारी सेना और CRPF ने उन तीन आतंकियों को भी समाप्त कर दिया। ऑपरेशन महादेव, हमारे देश की सेना, CRPF और जम्मू कश्मीर पुलिस की एक बहुत बड़ी साझा कामयाबी है जिस पर देश की 140 करोड़ जनता को नाज है। प्रधानमंत्री मोदी जी ने ऑपरेशन सिंदूर से आतंकियों को भेजने वालों को मारा और हमारे सुरक्षाबलों ने उन आतंकियों को भी मार दिया। ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से आतंकियों और उनके आकाओं को ऐसा सबक सिखाया गया है कि आने वाले लंबे समय तक तक कोई ऐसी हिम्मत नहीं करेगा।

जिस दिन लश्कर और इसके आउटफिट TRF ने पहलगाम हमले की जिम्मेदारी ली थी, उसी दिन हमने ये तय कर लिया था कि इस हमले की जांच NIA करेगा। NIA को आतंकवाद के मामलों की वैज्ञानिक तरीके से जांच करने और सजा कराने में एक वैश्विक मान्यता वाली एजेंसी के रूप में महारत हासिल है और NIA का सजा कराने का दर 96 प्रतिशत से अधिक है। पहलगाम हमले की जांच तुरंत ही NIA को सौंप दी गई और सेना, BSF, CRPF और जम्मू कश्मीर पुलिस ने इस बात की पूरी व्यवस्था कर दी कि ये आतंकवादी देश छोड़ पाकिस्तान न भाग सकें। हमले की जांच की शुरूआत में मृतकों के परिजनों से चर्चा की गई, पर्यटकों, खच्चर वालों, पोनी वालों, फोटोग्राफर, कर्मचारियों और दुकानों में काम करने वाले कुल 1055 लोगों से 3000 घंटों से भी अधिक लंबी पूछताछ की गई और ये सब वीडियो पर रिकॉर्ड किया गया। पूछताछ से मिली जानकारी के आधार पर आतंकियों के स्केच बनाए गए और 22 जून, 2025 को बशीर और परवेज की पहचान की गई जिन्होंने पहलगाम हमले के अगले दिन आतंकियों को शरण दी थी। बशीर और परवेज को गिरफ्तार किया गया और इन्होंने खुलासा किया कि 21 अप्रैल, 2025 की रात को 8 बजे तीन आतंकी इनके पास आए थे और उनके पास दो ए के 47 और एक एम 4

कार्बाइन राइफल थी। बशीर और परवेज की मां ने भी तीनों मारे गए आतंकियों को पहचान लिया है और अब FSL से भी इस बात की पुष्टि हो गई है। यही तीनों पहलगाम हमले में शामिल आतंकी थे और इस हमले में इनके पास से मिली 2 ए के 47 और एक एम 9 कार्बाइन का उपयोग हुआ था।

देश के पूर्व गृह मंत्री ने सवाल उठाया था कि क्या ये आतंकी पाकिस्तान से आए थे। हमारे पास सारे सबूत है कि ये तीनों पाकिस्तानी थे क्योंकि तीन में से दो आतंकियों के पाकिस्तानी वोटर नंबर भी उपलब्ध हैं, राइफलें भी उपलब्ध हैं, इनके पास से मिली चॉकलेट्स भी पाकिस्तान में बनी हुई हैं। पूरी दुनिया के सामने देश का पूर्व गृह मंत्री पाकिस्तान को क्लीन चिट दे रहा है और ऐसा कर ये सवाल भी खड़ा कर रहे हैं कि हमने पाकिस्तान पर हमला क्यों किया था। पूरी दुनिया ने, जहां जहां हमारे सांसद गए थे, यह स्वीकारा है कि पहलगाम आतंकी हमला पाकिस्तान ने किया था। देश के पूर्व गृह मंत्री इस बात का सबूत मांगते हैं लेकिन पाकिस्तान को बचाने का इनके इस षड्यंत्र को आज देश की 140 करोड़ जनता जान गई है।

22 अप्रैल, 2025 को पहलगाम में आतंकी हमला हुआ जिसमें 26 लोग मारे गए थे। इन मृतकों में 25 भारतीय और एक नेपाली नागरिक शामिल थे। उसी रात को ही सुरक्षाबलों और सभी एजेंसियों के साथ बैठक कर निर्देश दिए कि हमले में शामिल आतंकी देश छोड़कर न भाग सकें। प्रधानमंत्री मोदी जी ने 23 और 30 अप्रैल को Cabinet Committee on Security (CCS) की बैठक की अध्यक्षता की। 23 अप्रैल की बैठक में सबसे पहले सिंधु जल संधि को स्थगित करने का काम प्रधानमंत्री मोदी जी ने किया। इसके बाद अटारी के माध्यम से चल रही एकीकृत जांच चौकी को बंद किया गया, पाकिस्तानी नागरिकों के सार्क वीजा को सस्पेंड कर सभी को पाकिस्तान वापिस भेजने का काम किया गया, पाकिस्तानी उच्चायोग में कार्यरत रक्षा, सैन्य, नौसेना के सलाहकारों को अवांछनीय व्यक्ति घोषित किया गया और उनकी संख्या को 55 से घटाकर 30 किया। CCS बैठक में यह संकल्प लिया गया कि जहां भी ये आतंकवादी छिपे हैं उन्हें और उन्हें ट्रेनिंग देने वालों को सेना, जम्मू कश्मीर पुलिस, CRPF और BSF द्वारा उचित जवाब दिया जाएगा।

हमारी सेना ने जो जवाबी कार्रवाई की है उससे बड़ी संयमित कार्रवाई नहीं हो सकती। हमारी सेना ने आतंकियों के साथ-साथ उनके 9 अड्डों को ध्वस्त कर दिया और भारत की कार्रवाई में एक भी नागरिक नहीं मारा गया है। ''Surgical Strike'' और ''Air Strike'' में भी हमने POK में ही हमला किया था। पाक-अधिकृत कश्मीर (POK) हमारा ही है। इस बार ऑपरेशन सिंदूर के तहत हमने पाकिस्तान के अंदर 100 किलोमीटर तक घुस कर आतंकवादियों को समाप्त किया है। भारतीय सेनाओं द्वारा पाकिस्तान के अंदर आतंकियों के ठिकानों पर किए गए हमलों में कई वांछित और दुर्दांत आतंकवादी मारे गए। विपक्ष की सरकार के समय भारत की धरती पर आतंकी हमला करने के बाद जो आतंकी छिपे बैठे थे, अब उन सबको चुन-चुन कर हमारी सेना ने समाप्त कर दिया है। ऑपरेशन सिंदूर के तहत कम से कम सवा सौ से अधिक आतंकियों को समाप्त किया गया है।

सात मई को रात 1 बज कर 22 मिनट पर हमारे डीजीएमओ (DGMO) ने पाकिस्तान के DGMO को बता दिया कि हमने केवल आतंकवादियों के ठिकानों और उनके हेडक्वार्टर पर हमला किया है जो हमारा आत्मरक्षा का अधिकार है। आज देश में नरेन्द्र मोदी जी की सरकार है और अब ऐसा हो नहीं सकता कि वो आकर मारें, और हम चुपचाप बैठे रहें और चर्चा करें। उरी आतंकी हमले के बाद हमने सर्जिकल स्ट्राइक (Surgical Strike) की, पुलवामा आतंकी हमले के बाद एयर स्ट्राइक (Air Strike) की और अब पहलगाम आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान की सीमा में 100 किलोमीटर तक अंदर घुसकर आतंकियों के नौ ठिकानों और 100 से ज्यादा आतंकवादियों को हमने समाप्त कर दिया है।

हमने पाकिस्तान स्थित आतंकवादियों के ठिकानों पर हमला किया जिसे पाकिस्तान ने अपने ऊपर हमला मान लिया और पूरी दुनिया से कहने लगा कि पाकिस्तान का आतंकवाद से कोई लेना-देना नहीं है। लेकिन जब आतंकवादियों के जनाजे में पाकिस्तान सेना के आला अफसर उपस्थित हुए, तब पाकिस्तान पूरी दुनिया के सामने एक्सपोज हो गया कि पाकिस्तान टेररिज्म का स्टेट-स्पॉन्सर है। 8 मई को पाकिस्तान ने हमारे रिहायशी इलाकों और सैन्य प्रतिष्ठानों पर हमला किया और इस हमले के कारण एक गुरुद्वारे को नुकसान पहुंचा, एक मंदिर टूटा और कुछ हमारे नागरिक हताहत हुए। इसके बाद अगले दिन भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान को करारा जवाब देते हुए उसके 11 एयरबेस को क्षतिग्रस्त कर दिया।

पाकिस्तान ने हमारे रिहायशी इलाकों पर हमला किया लेकिन फिर भी हमने पाकिस्तान के रिहायशी इलाकों पर कभी हमला नहीं किया। भारत ने सिर्फ पाकिस्तान के एयर बेस और एयर डिफेंस सिस्टम को निशाना बनाया और उनके आक्रमण करने की क्षमता को पंगु कर दिया। इसके बाद पाकिस्तान के पास शरण में आने के अलावा और कोई रास्ता नहीं बचा था और इसीलिए 10 मई को पाकिस्तान के DGMO ने भारत के DGMO को फोन किया और पांच बजे हमने इस संघर्ष को विराम दिया। विपक्ष इस बात पर सवाल उठा रहा है कि अगर हम इतनी अच्छी स्थिति में थे तो हमने युद्ध क्यों नहीं किया? युद्ध के कई परिणाम होते हैं और इसका निर्णय सोच कर करना पड़ता है। अगर हम देश के इतिहास को देखें तो 1948 में कश्मीर में हमारी सेनाएं निर्णायक पड़ाव पर थीं और उस वक्त सरदार पटेल के मना करने के बावजूद जवाहर लाल नेहरू जी ने एकतरफा युद्ध विराम कर दिया। आज अगर POK का अस्तित्व है तो वो जवाहर लाल नेहरू के युद्धविराम के निर्णय के कारण है। इसी प्रकार, 1960 में सिंधु जल पर भौगोलिक और रणनीतिक रूप से हम बहुत मजबूत थे लेकिन तब भी सरदार पटेल के विरोध के बावजूद नेहरू जी ने सिंधु समझौता किया और भारत का 80 प्रतिशत पानी पाकिस्तान को दे दिया।

1965 की लड़ाई में हाजी पीर जैसी स्ट्रेटेजिक जगह पर हमने कब्जा कर लिया था लेकिन 1966 में उसे पाकिस्तान को लौटा दिया। 1971 के युद्ध में पाकिस्तान के 93,000 युद्धबंदी और 15,000 वर्ग किलोमीटर का पाकिस्तान का क्षेत्र हमारे पास थे। लेकिन तत्कालीन सरकार ने शिमला समझौता किया और हम पाक अधिकृत कश्मीर लेना ही भूल गए। अगर उस वक्त 'पाक अधिकृत कश्मीर' ले लेते तो आज यह स्थिति ही उत्पन्न नहीं होती। इतना ही नहीं, हमने पाक अधिकृत कश्मीर तो लिया ही नहीं, बल्कि हमारे कब्जे में आ चुकी 15,000 वर्ग किलोमीटर भूमि भी पाकिस्तान को वापस दे दी।

1962 के युद्ध में क्या हुआ था और चीन को 38 हजार वर्ग मीटर अक्साई चिन का हिस्सा क्यों दे दिया गया? संसद में हुई एक चर्चा के दौरान तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरु ने कहा था कि वहां घास का एक तिनका भी नहीं उगता है, उस जगह का क्या करें। नेहरु जी ने आकाशवाणी पर असम को भी बाय-बाय कह दिया था।

Selected works of Jawaharlal Nehru सीरीज के वोल्यूम 29 के पृष्ठ 231 में अमेरिका ने सुझाव दिया था कि चीन को संयुक्त राष्ट्रसंघ में तो ले लिया जाए मगर सुरक्षा परिषद में शामिल नहीं किया जाए, लेकिन नेहरु जी ने कहा कि यह स्वीकार्य नहीं है क्योंकि इससे चीन के साथ हमारे संबंध खराब होंगे और चीन जैसे महान देश को बुरा लगेगा। आज चीन सुरक्षा परिषद में है और भारत बाहर है।

राजीव गांधी फाउंडेशन ने चीन के साथ एमओयू (MOU) किया लेकिन यह नहीं बताया जाता कि एमओयू में क्या था। जब डोकलाम में

हमारे सेना के जवान चीन की सेना की आँखों में आँखें डालकर बैठे थे, नेता प्रतिपक्ष श्री राहुल गाँधी चीन के राजदूत के साथ मीटिंग कर रहे थे। सारे आतंकवाद की जड़ पाकिस्तान है और पाकिस्तान विपक्षी पार्टी की भूल है। अगर विपक्षी पार्टी देश का विभाजन स्वीकार न करता तो पाकिस्तान कभी अस्तित्व में नहीं आता। विपक्षी पार्टी ने अपने शासनकाल में विभाजन स्वीकार कर देश को तोड़ा है।

वर्ष 2002 में आतंकवाद को समाप्त करने के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार पोटा (POTA) कानून लेकर आई, जिसका विरोध विपक्षी पार्टी ने किया। अटल जी की सरकार के पास राज्यसभा में बहुमत नहीं था, जिसकी वजह से मजबूरन वह कानून पारित नहीं हो सका। बाद में दोनों सदनों का संयुक्त सत्र बुलाया गया और तब जाकर पोटा कानून पारित हो सका। देश इसे कभी भुला नहीं सकता। पोटा कानून बनने से रोककर विपक्षी पार्टी किसे बचाना चाहती थी? पोटा तो आतंकवादियों के खिलाफ था, लेकिन विपक्ष पोटा को रोककर अपने वोट बैंक का उल्लू सीधा कर, आतंकवादियों को बचाना चाहता था। 2004 में विपक्षी पार्टी की सरकार आई और उसने पोटा कानून रद्द कर दिया। किसके फायदे के लिए विपक्षी पार्टी ने पोटा कानून रद्द किया? दिसंबर 2004 में पोटा कानून रद्द हुआ, 2005 में अयोध्या में रामलला के टेंट पर हमला हुआ और आतंकवादी मारे गए। मुंबई लोकल ट्रेन में 2006 में हुए बम धमाके में 187 लोग मारे गए। 2006 में ही डोडा-उधमपुर में हिंदुओं पर हमला हुआ, जिसमें 34 लोग मारे गए। वर्ष 2007 में हैदराबाद में हुए धमाके में 44 लोग मारे गए। 2007 में लखनऊ और वाराणसी में 13 लोग मारे गए। वर्ष 2008 में रामपुर सीआरपीएफ कैंप पर हमला हुआ, 2008 में ही श्रीनगर में आर्मी के काफिले पर हमला हुआ और 10 सुरक्षा बल मारे गए। वर्ष 2008 में मुंबई में आतंकी हमला हुआ जिसमें 246 लोग मारे गए। जयपुर में आठ बम धमाके हुए, जिसमें 64 लोग मारे गए। वर्ष 2008 में अहमदाबाद में 21 बम धमाके हुए, जिसमें 57 लोग मारे गए। दिल्ली में 2008 में 5 धमाके हुए, जिसमें 22 लोग मारे गए। पुणे की जर्मन बेकरी में 17 लोग मारे गए। वर्ष 2010 में वाराणसी में धमाके हुए, 2011 में मुंबई में 3 धमाके हुए, जिसमें 27 लोग मारे गए।

सवाल यह है कि विपक्षी पार्टी के शासनकाल में वर्ष 2005 से 2011 तक आतंकवादियों ने 27 जघन्य हमले किए, जिसमें 1000 के करीब लोग मारे गए, लेकिन तत्कालीन सरकार ने क्या किया? नेता प्रतिपक्ष सदन में खड़े होकर देश को बताएं कि तत्कालीन सरकार ने उन आतंकवादी हमलों के खिलाफ क्या कदम उठाए। वे यहां से आतंकवादियों की फोटो और डोजियर पाकिस्तान भेजते रहे।

हमारे समय में जो आतंकवादी घटनाएं हुई हैं, वे पाकिस्तान प्रेरित थीं और मुख्यतः वे कश्मीर केन्द्रित रहीं। देश के किसी अन्य हिस्से में 2014 से 2025 तक शायद ही कोई आतंकी घटना हुई। यह नरेन्द्र मोदी सरकार है जिसके कारण अब कश्मीर में आतंकवादी नहीं बनते बल्कि ऐसी स्थिति हो चुकी है कि उन्हें आतंकवादी पाकिस्तान से भेजने पड़ते हैं।

जब दाऊद इब्राहिम कासकर 1986 में देश से भागा, उस वक्त विपक्षी पार्टी की सरकार थी। जब सैय्यद सलाऊद्दीन 1993 में भागा, उस समय विपक्षी पार्टी की सरकार थी। जब टाइगर मेमन 1993 में भागा, तब विपक्षी पार्टी की सरकार थी। जब अनीस इब्राहिम कासकर 1993 में भागा, तब भी उन्हीं की सरकार थी। वर्ष 2007 में जब रियाज भटकल भागा, तब भी विपक्ष की ही सरकार थी। जब इकबाल भटकल 2010 में भागा, तब भी विपक्षी पार्टी की ही सरकार थी। नेता प्रतिपक्ष को इस मुद्दे पर जवाब देना चाहिए।

मोदी सरकार जनता, संसद और देशहित के प्रति जवाबदेह है। कश्मीर में 2004 से 2014 के बीच 7217 आतंकवादी घटनाएं हुई थीं, जबकि 2015 से 2025 के बीच 2150 आतंकवादी घटनाएं हुईं, जो आतंकवादी घटनाओं में 70 प्रतिशत की कमी है। 2004 से 2014 के बीच 1770 नागरिकों की मृत्यु हुई, जबकि 2015 से 2025 के बीच यह संख्या 357 रही, जो 80 प्रतिशत की कमी है। 2004 से 2014 के बीच 1060 सुरक्षा कर्मियों की मृत्यु हुई, जबकि 2015 से 2025 के बीच 542 सुरक्षा कर्मियों की मृत्यु हुई। हमारी सरकार के समय पिछली सरकार की तुलना में आतंकवादियों की मृत्यु में 123 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। जिस धारा 370 को विपक्षी पार्टी की सरकारों ने लंबे समय तक बचा कर रखा, उस धारा 370 के हटने से कश्मीर में आतंकवादी इकोसिस्टम नष्ट हुआ है।

हमारी सरकार ने जीरो टेरर प्लान बनाया है, एरिया डोमिनेशन प्लान बनाया है, मल्टीलेवल डिप्लॉयमेंट किया है, सुरक्षा जेलें बनाई हैं, 98 प्रतिशत ट्रायल अब वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये हो रही हैं। हमने संचार के साधन बनाए हैं और 702 फोन विक्रेताओं को जेल में डाला है और 2666 सिम कार्ड ब्लॉक किए हैं।

अब जो आतंकवादी जहां मारा जाता है, उसे वहीं दफना दिया जाता है। किसी भी आतंकवादी का महिमामंडन करने के लिए जनाजा निकालने की इजाजत नरेन्द्र मोदी जी के शासन में नहीं है। आतंकवादियों के सगे लोगों और समर्थकों को चुन-चुन कर हमने जेलों में डाला और उनके पासपोर्ट रद्द किए, साथ ही उन्हें मिले सरकारी ठेके रद्द कर दिए। 75 से ज्यादा आतंकी समर्थकों को अदालत से आदेश प्राप्त करके सरकारी नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया। बार कांउसिल आतंकवादियों के समर्थकों से भरी थी, उसे सस्पेंड कर नया लोकप्रिय चुनाव हमने कराया और कई संगठन बैन किए। विशेष UAPA अदालत का गठन कर मार्च 2022 से 2025 के बीच UAPA के लगभग 2260 मामले हमने दर्ज किए। 374 कुर्की भी की गई। पहले संगठित रूप से पत्थरबाजी होती थी, अब इनकी संख्या जीरो हो गई है। पहले संगठित हड़ताल का पाकिस्तान से ऐलान होता था, कश्मीर घाटी में बंद होता था, लेकिन अब पाकिस्तान और घाटी में किसी की भी हिम्मत नहीं है कि ऐसा कुछ करे। विपक्षी पार्टी के शासनकाल में साल में 132 दिन घाटी बंद रहती थी, लेकिन पिछले तीन साल से संगठित हड़ताल की संख्या जीरो हो गई है। पहले पत्थरबाजी में हर साल 100 से अधिक लोग मारे जाते थे, अब नागरिकों की मृत्यु और उनके घायल होने की संख्या जीरो हो गई है।

एक समय हुर्रियत के नेताओं को यहां वीआईपी ट्रीटमेंट मिलता था, हुर्रियत के साथ चर्चा होती थी, हुर्रियत वाले आते थे तो रेड कारपेट बिछाते थे। लेकिन हमने हुर्रियत के सारे component बैन कर दिए हैं और उनके सभी नेता जेल की सलाखों के पीछे हैं। हम हुर्रियत से कोई बात नहीं करना चाहते। वह सदन में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की नीति को दोहराना चाहते हैं कि हुर्रियत आतंकवादी संगठनों का outfit है और हम उनसे बात नहीं करेंगे, हम घाटी के युवाओं से बात करेंगे। कश्मीर में चुनाव के दौरान पहले डर का माहौल होता था, अब पंचायत चुनाव में 98.3 प्रतिशत मतदान हुआ। वर्ष 2019 के बाद TRF, People Anti Fascist Front, तहरीक उल मुजाहिद्दीन, जमात-उल-मुजाहिद्दीन, बांग्लादेश-हिंदुस्तान जम्मू-कश्मीर गजनवी फोर्स, खालिस्तान टाइगर फोर्स, हिज्ब उल तहरीर सहित कई अन्य आतंकवादी संगठनों को हमारी सरकार ने बैन किया है।

हमारे जवान माइनस 43 डिग्री तापमान में पहाड़ पर और नदियों-नालों के पास रहकर देश की सुरक्षा करते हैं। कोई घुस गया तो वो बचेगा नहीं, हम उसे या तो गिरफ्तार करेंगे या तो एनकाउंटर में मारा जाएगा। पोटा का विरोध करने वालों को नरेन्द्र मोदी जी की आतंकवादी विरोधी नीति पसंद नहीं आएगी, आतंकी का बचाव करके वोट बैंक बनाने वालों को यह नीति पसंद नहीं आएगी। यह नरेन्द्र मोदी सरकार है, टेररिजम के खिलाफ हमारी जीरो टोलरेंस की नीति है। ▪

भारत देश प्रहरियों के साथ खड़ा है- जगत प्रकाश नड्डा

कारगिल में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने सेनाओं को उस स्थान को फिर से वापस लेने और वहां तिरंगा झंडा फहराने का आदेश दिया था, साथ ही उन्होंने नारा दिया था कि ''भारत का टाइगर हिल है, भारत का टाइगर हिल रहेगा।''

- हजारों फीट की ऊंचाई के साथ-साथ बर्फीली हवाओं, तेज बारिश और तीखी चढ़ाई के बावजूद कारगिल युद्ध में पाकिस्तान के दांत खट्टे करने वाले मां भारती के रणबाकुरों को नमन करते और श्रद्धांजलि देते हुए पूरा देश कारगिल विजय दिवस मना रहा है।
- पहले पाक की ओर से गोलियां चलने पर भी भारतीय सेना आदेश की प्रतीक्षा करती रहती थी, लेकिन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने स्पष्ट कह दिया है कि ''गोली का जवाब गोले से तब तक दिया जाए जब तक उधर से गोलियां आना बंद न हो जाएं।''
- माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय सेना ने सर्जिकल स्ट्राइक, एयर स्ट्राइक और ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम दिया।
- ऑपरेशन सिंदूर से भारत ने पूरे विश्व को यह संदेश दिया कि दुश्मन के घर में घुसकर आतंकियों का सफाया करना अब नए भारत का ''न्यू नॉर्मल बन चुका है।''
- कांग्रेस-यूपीए के समय में दुश्मन के डर से सीमा पर सड़कें नहीं बनती थीं, लेकिन मोदी जी के नेतृत्व में 10 वर्षों में 8000 किलोमीटर ऑल वेदर डबल लेन बॉर्डर रोड्स और 400 पुल बन चुके हैं।
- एक समय भारतीय सेना के पास बुलेटप्रूफ जैकेट्स नहीं थीं, असॉल्ट राइफल्स की कमी थी। आज भारत न केवल ये सब उपकरण बना रहा है, बल्कि एक्सपोर्ट भी कर रहा है।
- गगन, धरती, जल सहित हर जगह भारत दुश्मनों को मुंहतोड़ जवाब देने में सक्षम है। यह है नया भारत। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतवासी एक सुरक्षित और आत्मनिर्भर भारत की ओर बढ़ रहे हैं।
- देश की रक्षा में सेना के शौर्य के साथ नीति निर्धारकों की भूमिका भी अहम रहती है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत ने सर्जिकल स्ट्राइक, एयर स्ट्राइक और ऑपरेशन सिंदूर कर यह स्पष्ट संदेश दे दिया है कि अपने नागरिकों की रक्षा के लिए भारत दुश्मन के घर में घुसकर कार्रवाई करेगा और यही नए भारत का न्यू नॉर्मल है।

हर वर्ष भारतीय जनता पार्टी के कार्यालय में देश के वीर सपूतों को और उनके शौर्य और ऑपरेशन विजय की जीत को याद किया जाता है। उन अमर शहीदों को दिल से नमन करके याद करते हैं। 26 वर्ष पहले, 1999 की फरवरी में कारगिल सेक्टर, द्रास सेक्टर, बटालिक सेक्टर, मस्को सेक्टर और टाइगर हिल पर पाकिस्तान की फौज ने पीठ में छुरा भोंककर कब्जा करने का प्रयास किया था। कारगिल में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने सेनाओं को उस स्थान को फिर से वापस लेने और वहां तिरंगा झंडा फहराने का आदेश दिया था, साथ ही उन्होंने नारा दिया था कि ''भारत का टाइगर हिल है, भारत का टाइगर हिल रहेगा।''

वह बहुत ही कठिन लड़ाई थी, क्योंकि टैक्टिकली और स्ट्रैटेजिकली टाइगर हिल की ऊंचाइयों पर पाकिस्तान की फौज बैठी थी और भारतीय सेना नीचे थी, इसलिए भारतीय सेना एक तकलीफदायक परिस्थितियों में थी और पाकिस्तानी सेना लगातार भारत के नेशनल हाईवे की मूवमेंट्स को देख रही थी। ऐसी परिस्थिति में ''ऑपरेशन विजय'' शुरू हुआ। 15,000 फीट की ऊँचाई के साथ-साथ बर्फीली हवाओं, तेज बारिश के बावजूद मां भारती के रणबाकुरों ने यह लड़ाई लड़ी। 81 दिन की लड़ाई के बाद भारतीय

सेना ने इसमें विजय हासिल की और, 26 जुलाई को पूरा देश ''ऑपरेशन विजय दिवस'' के रूप में मनाता है। इसी ऑपरेशन में भारतीय एयरफोर्स ने ऑपरेशन सफेद सागर चलाया, जिसमें हेलीकॉप्टर्स, मिग और सुखोई विमानों से बहुत योगदान दिया, जिसके कारण भारत को यह सफलता मिली। सबसे बड़ी बात यह थी कि भारतीय सेना के जवानों ने तीखी चढ़ाई की। लगभग 1000 फीट तक, सीधे ऊपर जाकर, जहां कोई छुपने की जगह नहीं थी, वहाँ जाकर भारतीय सेना ने टाइगर हिल पर कब्जा किया और पाँच दिन तक लड़ाई लड़कर पाकिस्तान की फौज को करारा सबक सिखाया।

फौज, देशप्रेम तथा सीमा सुरक्षा की बात करते समय, तो नीति-निर्धारकों की भूमिका को भी समझना जरुरी हो जाता है। एक समय ऐसा भी था जब हमारी सेना के वीर पुंछ के बॉर्डर पर, श्रीनगर और उरी में देश के प्रहरी के रूप में खड़े होते थे, लेकिन जब गोलियाँ उधर से चलती थीं, तो भारतीय सेना के सैनिक वहाँ से सूचना देते थे, नगरोटा को, नगरोटा से सूचना जाती थी चंडी मंदिर को, चंडी मंदिर से सूचना जाती थी दिल्ली के हेडक्वार्टर को और दिल्ली का हेडक्वार्टर बोलता था, ''रुको, जब बताएंगे तब शूट करना।'' नीति निर्धारकों की यह हालत थी। देश ने देखा है कि किस तरह कोर हेडक्वार्टर्स सिर्फ नेशनल हेडक्वार्टर को सूचना देने के अलावा कुछ नहीं कर पाए। लेकिन जब से माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने प्रधानसेवक का कार्यभार संभाला है, तब से यह स्पष्ट हो गया है कि अगर उधर से गोली चलेगी, तो इधर से गोला चलेगा। आज भारत का ''न्यू नॉर्मल है, न रुकना है, न चुप रहना है, गोली का जवाब गोले से दिया जाएगा,'' जब तक उधर से गोली चलना बंद न हो जाए। भारत विस्तारवादी नहीं है, लेकिन ''राइट टू रिएक्ट'' भारत का अधिकार है।

उरी की घटना में हमारे 18 जवान शहीद हो गए। उस समय माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सार्वजनिक रूप से कहा था पाकिस्तान ने बहुत बड़ी गलती कर दी है। इसका खामियाजा पाकिस्तान को भुगतना पड़ेगा। एक समय में भारत 26/11 की तरह डोजियर लेकर जाता था लेकिन अब जमाना बदल चुका था। उरी हमले के कुछ दिन बाद सर्जिकल स्ट्राइक हुई और भारतीय सेना ने पाक अधिकृत कश्मीर में पाकिस्तान के सारे लॉन्चिंग पैड्स को ध्वस्त कर दिया। उसी तरह, पुलवामा में सीआरपीएफ के 40 जवान जैश-ए-मोहम्मद के सुसाइड बॉम्बर की गाड़ी से हुए हमले में शहीद हो गए। उसके बाद भी आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कहा, ''बहुत जल्द इसका जवाब मिलेगा, और फिर बालाकोट एयर स्ट्राइक हुई। 22 अप्रैल को जो पहलगाम में हुआ, उसके बाद यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने मधुबनी से पूरे विश्व को यह स्पष्ट संदेश दिया था कि जिस तरह की घटना घटी है, पाकिस्तान को इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा और पाकिस्तान को कल्पना से अधिक करारा जवाब मिलेगा। फिर ऑपरेशन सिंदूर हुआ और माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय सेना ने बहावलपुर, मुरीदके, नूरखान, सियालकोट, रफीकी, चकलाला और रहीम यार खान में पाकिस्तान के भीतर घुसकर मिसाइल स्ट्राइक की। जैसा प्रधानमंत्री जी ने कहा, ठीक वैसे ही भारतीय सेना ने घर में घुस कर जवाब दिया। भारत ने साधारण नागरिकों को नुकसान नहीं पहुँचाया, लेकिन जैश और लश्कर के मुख्यालय ध्वस्त कर दिए। भारत ने यह दिखा दिया कि यह नया भारत है, यह भारत का न्यू नॉर्मल है।

पाकिस्तान अपने आप को बचाने के लिए सिविलियन एयरक्राफ्ट चलाता रहा लेकिन उनकी हर मिसाइल को भारत के एयर डिफेंस सिस्टम ने पूरी तरह नाकामयाब कर दिया। 9 और 10 मई को भारत ने तीन घंटे में पाकिस्तान के 11 सैन्य ठिकानों को ध्वस्त कर दिया जिसमें नूर खान, रफीकी, मुरीदके, सक्कुर, सियालकोट, सरगोधा, बुलारी, जकोबाबाद शामिल थे। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने स्पष्ट कहा था ''अगर कोई हमें छेड़ेगा, तो हम छोड़ेंगे नहीं।'' हम अपने तरीके से जवाब देंगे। एटम बॉम्ब की धमकियां देना बंद करो। ऑपरेशन सिंदूर समाप्त नहीं हुआ है, स्थगित हुआ है। आतंक और आतंकियों का समर्थन करने वालों को बराबर समझा जाएगा। नीति निर्धारकों के सही चयन से देश में कैसा फर्क आता है, यह अब समझा जा सकता है। यूपीए के समय एक रक्षा मंत्री से पूछा गया कि बॉर्डर पर सड़कें क्यों नहीं बनतीं? तो उन्होंने कहा था, ''ताकि दुश्मन को हमारे भीतर घुसने में आसानी न हो।'' लेकिन यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में 10 वर्षों में 8000 किलोमीटर ऑल वेदर डबल लेन बॉर्डर रोड्स बन चुकी हैं, 400 ब्रिज बन चुके हैं। पहले छोटे-छोटे आर्मी ब्रिज होते थे, जिन पर घंटों तक एक तरफ का कॉन्वॉय रुकता था। आज 400 से ज्यादा डबल लेन ऑल वेदर ब्रिज बन चुके हैं। टनल्स की बात करें तो अटल टनल, अरुणाचल प्रदेश में सेला टनल और लद्दाख में शिंकुनला टनल से फौज की आवाजाही को बहुत सुविधा मिली है।

भारत के डिफेंस प्रोडक्शन और डिफेंस एक्सपोर्ट में वृद्धि हुई है। कैपिटल एक्सपेंडिचर का 75 प्रतिशत अब स्वदेशी उपकरणों पर खर्च हो रहा है। एक समय में भारत के पास मिग के अलावा कोई और विमान नहीं हुआ करता था, लेकिन आज भारत के पास 36 राफेल, 28 अपाचे हेलीकॉप्टर्स और सरफेस टू एयर मिसाइल्स हैं। पहले भारतीय सेना के पास बुलेटप्रूफ जैकेट्स नहीं थीं, असॉल्ट राइफल्स की कमी थी। आज भारत न केवल ये सब उपकरण बना रहा है, बल्कि एक्सपोर्ट भी कर रहे हैं। स्वदेशी और ब्रह्मोस मिसाइल का ऑपरेशन सिंदूर में शानदार उपयोग हुआ। INS सूरत, INS नीलगिरी, INS वाघ, INS विक्रमादित्य जैसे जहाज भारतीय नेवी में कमिशन्ड हो चुके हैं। गगन, धरती, जल, हर जगह भारत मुंहतोड़ जवाब देने को तैयार है। यह है नया भारत, यह है न्यू नॉर्मल। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतवासी एक सुरक्षित और आत्मनिर्भर भारत की ओर बढ़ रहे हैं। पूरा देश कारगिल में वीरता का परचम लहराने वाले वीर योद्धाओं को नमन करता है और भाजपा सरकार उनके बलिदान को व्यर्थ नहीं जाने देगी, इसके लिए कृतसंकल्पित है। हर नागरिक का अपना एक दायित्व है और पूरा भारत देश प्रहरियों के साथ खड़ा हैं। ▪

कारगिल विजय दिवस पर शुभकामनाएं प्रधानमंत्री

देशवासियों को कारगिल विजय दिवस की ढेरों शुभकामनाएं। यह अवसर हमें मां भारती के उन वीर सपूतों के अप्रतिम साहस और शौर्य का स्मरण कराता है, जिन्होंने देश के आत्मसम्मान की रक्षा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। मातृभूमि के लिए मर-मिटने का उनका जज्बा हर पीढ़ी को प्रेरित करता रहेगा। जय हिंद! ▪

जनता की सेवा सर्वोपरि-हेमंत खण्डेलवाल

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जब प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने सोचा कि हम भारत को विश्व गुरू बनाने, दुनिया का अग्रणी राष्ट्र बनाने के लिए कार्य कर रहे हैं, लेकिन हम अपने देश के गरीबों, आदिवासियों को भी अभाव की जिंदगी में नहीं रहने देंगे।

- **कांग्रेस ने कभी गरीबों और आदिवासियों की चिंता नहीं की।**
- **कांग्रेस ने किसानों को फसल बीमा देने के स्थान पर मुलताई गोलीकांड जैसा जघन्य घाव दिया।**
- **भाजपा देश का एक मात्र ऐसा दल है जो कार्यकर्ताओं की मेहनत और परिश्रम से चलता है।**
- **प्रधानमंत्री जी हर आदिवासी और गरीब को पक्का आवास, सड़क और गैस कनेक्शन दे रहे हैं।**
- **जनता और सरकार के बीच कड़ी बनकर समाज में आदर्श स्थापित करें भाजपा कार्यकर्ता।**
- **कार्यकर्ता अपने आचरण-व्यवहार से ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करें कि जनता हमारे कार्यों का सम्मान करे।**
- **एक-एक कार्यकर्ता से जुड़कर भाजपा को मजबूत बनाकर प्रदेश को नई राह पर ले जाना है।**

जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी की कांग्रेस ने देश के गरीबों, आदिवासियों की टपकती झोपड़ी को कभी सुधारने का प्रयास नहीं किया। गरीबों, जनजातियों को बीमारी में कभी निःशुल्क इलाज की चिंता नहीं की। गांवों, मजरों, टोलों, गरीबों और आदिवासियों की बस्तियों को कभी सड़क से जोड़ने का प्रयास कांग्रेस ने कभी नहीं किया। गरीबों, अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों को पक्के मकान देने, खाना पकाने के लिए उज्जवला योजना बनाकर निःशुल्क गैस कनेक्शन देने, पांच लाख रूपए तक का निःशुल्क इलाज के लिए पीएम आयुष्मान योजना बनाई। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जब प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने सोचा कि हम भारत को विश्व गुरू बनाने, दुनिया का अग्रणी राष्ट्र बनाने के लिए कार्य कर रहे हैं, लेकिन हम अपने देश के गरीबों, आदिवासियों को भी अभाव की जिंदगी में नहीं रहने देंगे। प्रधानमंत्री जी ने गरीबों, आदिवासियों के कल्याण के लिए कई कल्याणकारी योजनाएं बनाईं। पक्के मकान, रसोई गैस, गांव-गांव सड़कों का जाल बिछाने के साथ बस्तियों में पीने के लिए स्वच्छ जल पहुंचा रहे हैं। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन चुका है। हम विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं।

मैं भी आदिवासियों के बीच बैतूल में रहता हूं। उन्हीं की सेवा हमारा परिवार वर्षों से करता आ रहा है। वीरांगना रानी दुर्गावती, राजा रघुनाथ शाह और शंकर शाह जैसे स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को सम्मान देने का कार्य हमारी पार्टी और सरकारें कर रही है। सभी कार्यकर्ताओं की मेहनत और परिश्रम से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जैसे विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता आज देश का नेतृत्व कर रहे हैं और वैश्विक स्तर पर भारत का मान-सम्मान बढ़ा रहे हैं। इस पार्टी में कार्यकर्ता ही सर्वोपरि होता है, कार्यकर्ता ही पार्टी संगठन और सत्ता के माध्यम से जनता की सेवा का दायित्व निभाता है।

सभी कार्यकर्ताओं का सहयोग व आशीर्वाद पार्टी को मिलता रहा है, उसे बनाए रखें। हमें हर कार्यकर्ता से जुड़ना है और दल को मजबूत करना है। जबलपुर जिले को मां नर्मदा का आशीर्वाद मिलता रहा है। मां नर्मदा ऐसा आशीर्वाद दें कि हम सभी का जीवन उज्जवल बने तथा भारतीय जनता पार्टी देश और प्रदेश को नई दिशा में आगे ले जाने का काम करती रहे।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी देश की तस्वीर बदल रहे हैं। उन्होंने हर गरीब के आंसू पोंछने के लिए प्रधानमंत्री आवास, आयुष्मान भारत, फसल बीमा योजना जैसी अनेकों योजनाएं लागू की हैं। हमें उनके नेतृत्व को और मजबूत करना है, क्योंकि उनके नेतृत्व में ही देश नई बुलंदियों को छूने वाला है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश सरकार नित नए विकास कार्यों के माध्यम से प्रदेश को नई दिशा में ले जा रही हैं। जबलपुर में कैसे उद्योग लगें, यहां का इनफ्रास्ट्रक्चर विकसित हो, युवाओं को रोजगार मिले, इन सभी की चिंता मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव कर रहे हैं।

पार्टी नेतृत्व सभी कार्यकर्ताओं की चिंता करता है और आगे भी करता रहेगा, लेकिन आप सभी को जनता की सेवा सर्वोपरि मानकर उनकी चिंता करनी है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार और प्रदेश में डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में डबल इंजन की सरकार की जनहितैषी योजनाओं को आमजन तक पहुंचाकर उनकी सेवा करते रहें तथा ऐसे प्रयास करें कि आपकी और पार्टी की छवि सकारात्मक बनी रहे। हम सभी मिलकर एक परिवार की तरह काम करेंगे और नई राह पर आगे बढ़कर जनता को नया संदेश देंगे। ▪

मध्यप्रदेश वैश्विक निवेश का केंद्र

मुख्यमंत्री डॉ. यादव

दुबई और स्पेन के निवेशक मध्यप्रदेश में निवेश के लिए उत्साहित हैं। इस यात्रा से मध्यप्रदेश को 11 हजार करोड़ रुपए से अधिक के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। मध्यप्रदेश में निरंतर देश-विदेश से आ रहे निवेश प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत के स्वप्न को साकार करने में सहायक होंगे।

- **दुबई और स्पेन के निवेशक मध्यप्रदेश में निवेश के लिए उत्साहित**
- **दुबई और स्पेन यात्रा से मध्य प्रदेश को 11 हजार करोड़ से अधिक के निवेश प्रस्ताव हुए प्राप्त**

दुबई और स्पेन की यात्रा मध्यप्रदेश में विकास के नए द्वार खोलेगी। दुबई और स्पेन के निवेशक मध्यप्रदेश में निवेश के लिए उत्साहित हैं। इस यात्रा से मध्यप्रदेश को 11 हजार करोड़ रुपए से अधिक के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। इससे पूर्व भी जर्मनी, जापान और यूके आदि की यात्रा के दौरान वहां से मध्यप्रदेश में निवेश के लिए बड़े प्रस्ताव प्राप्त हुए थे। मध्यप्रदेश में निरंतर देश-विदेश से आ रहे निवेश प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत के स्वप्न को साकार करने में सहायक होंगे। यह अत्यंत आनंद का विषय है कि मध्यप्रदेश वैश्विक निवेश का केंद्र बन रहा है। स्पेन और दुबई यात्रा में 11 हजार 119 करोड़ से अधिक के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं जिससे 14 हजार से अधिक व्यक्तियों को रोजगार भी प्राप्त होगा।

गरीब से गरीब व्यक्ति की जिंदगी बदलना आवश्यक है। यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी इसके लिए भरसक प्रयत्न कर रहे हैं। गरीब, युवा, महिला, किसान सभी वर्गों को साथ लेकर विरासत सहेजने से लेकर विकास की गति बढ़ाने का दृढ़ संकल्प है। सभी नागरिकों को प्रदेश को आगे बढ़ाने के लिए संकल्पित रहना है।

भारत की प्रगति के लिए प्रधानमंत्री श्री मोदी अभिनंदन के पात्र हैं। उन्होंने अपने ग्यारह वर्ष के कार्यकाल में सात बार दुबई की यात्रा कर दो तरफा व्यापारिक और औद्योगिक साझेदारी को बढ़ाने का कार्य किया है। दुबई एक लघु विश्व की तरह है। प्रधानमंत्री जी की नीतियों का अनुसरण करते हुए उद्योग एवं व्यापार वर्ष 2025 में देश-विदेश से निवेश लाने के प्रयास हो रहे हैं। इस क्रम में दुबई और स्पेन की यात्रा महत्वपूर्ण रही। प्रधानमंत्री के संकल्प को पूर्ण करने के लिए इस यात्रा को सार्थक बनाने का प्रयास किया गया। प्रधानमंत्री श्री मोदी का एक-एक निर्णय विश्व में भारत की साख बढ़ाने का कार्य कर रहा है।

प्रदेश में 20 वर्ष में बदला वातावरण, अब विकास की गति तीव्र

मध्यप्रदेश में गत दो दशक विकास के दशक रहे हैं। वर्ष 2002-03 तक प्रदेश की विभिन्न क्षेत्रों में जो स्थिति रही उसमें निर्णायक परिवर्तन आया है। पिछले 20 वर्षों का कार्यकाल मध्यप्रदेश के विकास के लिए महत्वपूर्ण रहा, इन वर्षों में नागरिकों को यह अनुभव करवाया गया है कि सरकार क्या होती है। देश में गुजरात के बाद मध्यप्रदेश ऐसा राज्य होगा जो प्रधानमंत्री श्री मोदी के विकसित भारत के स्वप्न को जल्द से जल्द पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है। जहां गुजरात में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सरदार सरोवर परियोजना में सबसे बड़े बांध को पूर्ण करवाकर राष्ट्र को समर्पित किया वहां मध्यप्रदेश के हित में अंतर्राज्यीय नदी जोड़ो परियोजनाओं की स्वीकृति देकर उल्लेखनीय कदम उठाया। अब प्रदेश के विकास की गति तीव्र से तीव्रतम होगी।

भारत स्पेन सांस्कृतिक सहयोग वर्ष

भारत सरकार ने भारत-स्पेन सांस्कृतिक सहयोग वर्ष की घोषणा की है। इस नाते उनकी स्पेन यात्रा अधिक प्रासंगिक हो गई है। इस वर्ष में अन्य गतिविधियों के साथ मध्यप्रदेश में स्पेन के कला और सांस्कृतिक जगत के प्रतिनिधियों और कलाकारों के मंचीय कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

निवेश बढ़ाने के निरंतर प्रयास

प्रदेश में सम्पन्न संभाग स्तरीय उद्योग कॉनक्लेव, भोपाल में ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट, दुबई और स्पेन यात्रा के पूर्व इंग्लैंड, जर्मनी और जापान की यात्राओं में नए निवेश के माध्यम से मध्यप्रदेश की समृद्धि के प्रयास किए गए हैं। भारत के प्रमुख नगरों कोलकाता, कोयम्बटूर, सूरत, लुधियाना में भी सेक्टर वाइज बैठकों और संगोष्ठियों के माध्यम से मध्यप्रदेश में उद्योग क्षेत्र में नई इकाईयों की स्थापना के लिए ठोस प्रयास किए गए हैं। ▪

"रोजगार मेलों" से लाखों को जॉब मिली- पीएम मोदी

अब 51 हजार से अधिक युवाओं को नियुक्ति पत्र दिए गए हैं। ऐसे रोजगार मेलों के माध्यम से अब तक लाखों नौजवानों को भारत सरकार में परमानेंट जॉब मिल चुकी है। अब ये नौजवान, राष्ट्र निर्माण में बड़ी भूमिका निभा रहे हैं।

केंद्र सरकार में युवाओं को पक्की नौकरी देने का हमारा अभियान निरंतर जारी है। और हमारी पहचान भी है, बिना पर्ची, बिना खर्ची। अब 51 हजार से अधिक युवाओं को नियुक्ति पत्र दिए गए हैं। ऐसे रोजगार मेलों के माध्यम से अब तक लाखों नौजवानों को भारत सरकार में परमानेंट जॉब मिल चुकी है। अब ये नौजवान, राष्ट्र निर्माण में बड़ी भूमिका निभा रहे हैं। कई ने भारतीय रेल में अपने दायित्वों की शुरुआत की है, कई साथी अब देश की सुरक्षा के भी प्रहरी बनेंगे, डाक विभाग में नियुक्त हुए साथी, गांव-गांव सरकार की सुविधाओं को पहुंचाएंगे, कुछ साथी Health for All मिशन के सिपाही होंगे, कई युवा फाइनेंशियल इंक्लूजन के इंजन को और तेज करेंगे और बहुत से साथी भारत के औद्योगिक विकास को नई रफ्तार देंगे। विभाग अलग-अलग हैं, लेकिन ध्येय एक है और वो कौन सा ध्येय, हमें बार-बार याद रखना है, एक ही ध्येय है, विभाग कोई भी हो, कार्य कोई भी हो, पद कोई भी हो, इलाका कोई भी हो, एक ही ध्येय - राष्ट्र सेवा। सूत्र एक- नागरिक प्रथम, सिटिजन फर्स्ट। आपको देश के लोगों की सेवा का बहुत बड़ा मंच मिला है।

आज दुनिया मान रही है कि भारत के पास दो असीमित शक्तियाँ हैं। एक डेमोग्राफी, दूसरी डेमोक्रेसी। यानी सबसे बड़ी युवा आबादी और सबसे बड़ा लोकतंत्र। युवाओं का यह सामर्थ्य हमारी, भारत के उज्ज्वल भविष्य की सबसे बड़ी पूंजी भी है और सबसे बड़ी गारंटी भी है। और हमारी सरकार, इसी पूंजी को समृद्धि का सूत्र बनाने में दिन रात जुटी है। आप सबको पता है, मैं पांच देशों की यात्रा करके लौटा हूँ। हर देश में भारत की युवाशक्ति की गूंज सुनाई दी। इस दौरान जितने भी समझौते हुए हैं, उनसे देश और विदेश, दोनों जगह भारत के नौजवानों को फायदा होना ही है। डिफेंस, फार्मा, डिजिटल टेक्नॉलॉजी, एनर्जी, रेयर अर्थ मिनरल्स, ऐसे कई सेक्टर्स, ऐसे सेक्टर्स में हुए समझौतों से भारत को आने वाले दिनों में बहुत बड़ा फायदा होगा, भारत के मैन्युफेक्चरिंग और सर्विस सेक्टर को बहुत बल मिलेगा।

बदलते हुए समय के साथ 21वीं सदी में नेचर ऑफ जॉब भी बदल रहा है, नए-नए सेक्टर्स भी उभर रहे हैं। इसलिए बीते दशक में भारत का जोर अपने युवाओं को इसके लिए तैयार करने का है। अब इसके लिए अहम निर्णय लिए गए हैं, आधुनिक जरूरतों को देखते हुए आधुनिक नीतियां भी बनाई गईं हैं। स्टार्ट अप्स, इनोवेशन और रिसर्च का जो इकोसिस्टम आज देश में बन रहा है, वो देश के युवाओं का सामर्थ्य बढ़ा रहा है, आज जब मैं नौजवानों को देखता हूं कि वे अपना स्टार्ट अप शुरू करना चाहते हैं, तो मेरा भी आत्मविश्वास बढ़ जाता है, मुझे खुशी होती है कि मेरे देश का नौजवान बड़े विजन के साथ तेज गति से मजबूती के साथ आगे बढ़ रहा है, वो कुछ नया करना चाहता है।

भारत सरकार का जोर प्राइवेट सेक्टर में रोजगार के नए अवसरों के निर्माण पर भी है। हाल ही में सरकार ने एक नई स्कीम को मंजूरी दी है, Employment Linked Incentive Scheme. इस योजना के तहत सरकार, प्राइवेट सेक्टर में पहली बार रोजगार पाने वाले युवा को 15 हजार रुपए देगी। यानी पहली नौकरी की पहली सैलरी में सरकार अपना योगदान देगी। इसके लिए सरकार ने करीब एक लाख करोड़ रुपए का बजट बनाया है। इस स्कीम से लगभग साढ़े 3 करोड़ नए रोजगार के निर्माण में मदद मिलेगी।

आज भारत की एक बहुत बड़ी ताकत हमारा मैन्युफेक्चरिंग सेक्टर है। मैन्युफेक्चरिंग में बहुत बड़ी संख्या में नई-नई जॉब्स बन रही हैं। मैन्युफेक्चरिंग सेक्टर को गति देने के लिए इस वर्ष के बजट में मिशन मैन्युफेक्चरिंग की घोषणा की गई है। बीते सालों में हमने मेक इन इंडिया अभियान को मजबूती दी है। सिर्फ PLI स्कीम से, उससे ही 11 लाख से अधिक रोजगार देश में बने हैं। बीते सालों में मोबाइल फोन और इलेक्ट्रॉनिक्स सेक्टर का अभूतपूर्व विस्तार हुआ है। आज करीब 11 लाख करोड़ रुपए की इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफेक्चरिंग हो रही है, 11 लाख करोड़। इसमें भी बीते 11 साल में 5 गुणा से भी अधिक वृद्धि हुई है। पहले देश में मोबाइल फोन मैन्युफेक्चरिंग की 2 या 4 यूनिट्स थीं, सिर्फ 2 या 4, अब मोबाइल फोन मैन्युफेक्चरिंग से जुड़ी करीब-करीब 300 यूनिट्स भारत में हैं और इसमें लाखों युवा काम कर रहे हैं। वैसा ही एक और क्षेत्र है और ऑपरेशन सिंदूर के बाद तो उसकी बहुत चर्चा भी है, बड़े गौरव से चर्चा हो रही है और वो है-डिफेंस मैन्युफेक्चरिंग। डिफेंस मैन्युफेक्चरिंग में भी भारत नए रिकॉर्ड्स बना रहा है। हमारा डिफेंस प्रोडक्शन, सवा लाख करोड़ रुपए से ऊपर पहुंच चुका है। भारत ने एक और बड़ी उपलब्धि लोकोमोटिव सेक्टर में हासिल की है। भारत दुनिया में सबसे ज्यादा लोकोमोटिव बनाने वाला देश बन गया है, दुनिया में सबसे ज्यादा। लोकोमोटिव हो, रेल कोच हो, मेट्रो कोच हो, आज भारत इनका बड़ी संख्या में दुनिया के कई देशों में एक्सपोर्ट कर रहा है। हमारा ऑटोमोबाइल सेक्टर भी अभूतपूर्व ग्रोथ कर रहा है।

बीते 5 साल में ही इस सेक्टर में करीब 40 बिलियन डॉलर का FDI आया है। यानी नई कंपनियां आई हैं, नई फैक्ट्रियां लगी हैं, नए रोजगार बने हैं, और साथ-साथ गाड़ियों की डिमांड भी बहुत बढ़ी है, गाड़ियों की रिकॉर्ड बिक्री हुई है भारत में। अलग-अलग सेक्टर्स में देश की ये प्रगति, ये मैन्यूफेक्चरिंग के रिकॉर्ड तभी बनते हैं, ऐसे नहीं बनते, ये सब तब संभव होता है, जब ज्यादा से ज्यादा नौजवानों को नौकरियां मिल रही हैं। नौजवानों का पसीना लगता है उसमें, उनका दिमाग काम करता है, वो मेहनत करते हैं, देश के नौजवानों ने रोजगार तो पाया है, ये कमाल करके भी दिखाया है। अब सरकारी कर्मचारी के तौर पर आपको हर संभव प्रयास करना है कि देश में मैन्यूफेक्चरिंग सेक्टर की ये गति निरंतर बढ़ती रहे। जहां भी आपको दायित्व मिले, आप एक प्रोत्साहन के रूप में काम करें, लोगों को encourage करें, रूकावटें दूर करें, जितना ज्यादा आप सरलता लाएंगे, उतनी सुविधा देश में अन्य लोगों को भी मिलेगी।

आज हमारा देश दुनिया की, और कोई भी हिन्दुस्तानी बड़े गर्व से कह सकता है, आज हमारा देश दुनिया की तीसरी बड़ी इकॉनॉमी बनने की तरफ तेजी से आगे बढ़ रहा है। ये नौजवानों के पसीने का कमाल है। बीते 11 वर्षों में हर सेक्टर में देश ने प्रगति की है। हाल में इंटरनेशनल लेबर ऑर्गेनाइजेशन- ILO की एक बहुत बढ़िया रिपोर्ट आई है- शानदार रिपोर्ट है। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि बीते दशक में भारत के 90 करोड़ से अधिक नागरिकों को वेलफेयर स्कीम्स के दायरे में लाया गया है। एक प्रकार से सोशल सिक्योरिटी का दायरा गिना जाता है। और इन स्कीम्स का फायदा सिर्फ वेलफेयर तक सीमित नहीं है। इससे बहुत बड़ी संख्या में नए रोजगार भी बने हैं। जैसे एक छोटा उदाहरण मैं देता हूं - पीएम आवास योजना है। अब ये पीएम आवास योजना के तहत 4 करोड़ नए पक्के घर बन चुके हैं और 3 करोड़ नए घर अभी बनाने की प्रक्रिया चल रही है। इतने घर बन रहे हैं, तो इसमें मिस्त्री, लेबर और रॉ मटीरियल से लेकर ट्रांसपोर्ट सेक्टर में छोटी-छोटी दुकानदारों के काम, माल ढोने वाले ट्रक के ऑपरेटर्स, आप कल्पना कर सकते हैं कितने सारे जॉब्स क्रिएट हुई हैं। इसमें भी सबसे खुशी की बात है कि ज्यादातर रोजगार हमारे गांवों में मिले हैं, उसे गांव छोड़कर के जाना नहीं पड़ रहा है। इसी तरह 12 करोड़ नए टॉयलेट्स देश में बने हैं। इससे निर्माण के साथ-साथ प्लंबर्स हों, लकड़ी का काम करने वाले लोग हों, जो हमारे विश्वकर्मा समाज के लोग हैं उनके लिए तो इतने सारे काम निकले हैं। यही है जो रोजगार का विस्तार भी करते हैं, प्रभाव भी पैदा करते हैं। ऐसे ही आज 10 करोड़ से अधिक नए, मैं जो बात बता रहा हूं, नए लोगों की बताता हूं, नए एलपीजी कनेक्शन देश में उज्ज्वला स्कीम के तहत दिए गए हैं। अब इसके लिए बहुत बड़ी संख्या में बॉटलिंग प्लांट्स बने हैं। गैस सिलेंडर बनाने वालों को काम मिला है, उसमे भी रोजगार पैदा हुए हैं, गैस सिलेंडर की एजेंसी वालों को काम मिला है। गैस सिलेंडर घर-घर पहुंचाने के लिए जो लोग चाहिए, उनको नए-नए रोजगार मिले हैं। आप एक-एक काम लीजिए, कितने प्रकार के रोजगार के अवसर पैदा होते हैं। इन सारी जगहों पर लाखों-लाखों लोगों को नए रोजगार मिले हैं।

कहते हैं ना पांचों उंगली घी में, या तो कहते हैं कि दोनों हाथ-हाथ में लड्डू ऐसी है पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना। सरकार आपके घर की छत पर यानी रूफ टॉप सोलर प्लांट लगाने के लिए एक परिवार को एवरेज करीब-करीब 75,000 से भी ज्यादा दे रही है। इससे वह अपने घर के छत के ऊपर सोलर प्लांट लगाता है। एक प्रकार से उसका घर की छत बिजली का कारखाना बन जाती है, बिजली पैदा करता है और वो बिजली खुद भी उपयोग करता है, ज्यादा बिजली है तो बेचता है। इससे बिजली का बिल तो जीरो हो रहा है, उसके पैसे तो बच ही रहे हैं। इन प्लांट्स को लगाने के लिए इंजीनियर्स की जरूरत पड़ती है, टेक्नशियन की जरूरत पड़ती है। सोलर पैनल बनाने के कारखाने लगते हैं, रॉ मटेरियल के लिए कारखाने लगते हैं, उसको ट्रांसपोर्टेशन के लिए लगते हैं। उसको रिपेयर करने के लिए भी पूरी एक नई इंडस्ट्री तैयार हो रही है। आप कल्पना कर सकते हैं, एक-एक स्कीम लोगों का तो भला कर रही है, लेकिन लाखों-लाखों नए रोजगार इसके कारण पैदा हो रहे हैं।

नमो ड्रोन दीदी अभियान ने भी बहनों बेटियों की कमाई बढ़ाई है और ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार के नए मौके भी बनाए हैं। इस स्कीम के तहत लाखों ग्रामीण बहनों को ड्रोन पायलट की ट्रेनिंग दी जा रही है। उपलब्ध जो रिपोर्ट्स हैं, यह बताती है कि हमारी यह ड्रोन दीदी हमारी गांव की माताएं बहनें, खेती के एक सीजन में ही, ड्रोन से खेती में जो मदद करती हैं, उसका जो कॉन्ट्रैक्ट पर काम लेती हैं, एक-एक सीजन में लाखों रुपए कमाने लग गई हैं। इतना ही नहीं, इससे देश में ड्रोन मैन्युफैक्चरिंग से जुड़े नए सेक्टर को बहुत बल मिल रहा है। खेती हो या डिफेंस, आज ड्रोन मैन्युफैक्चरिंग देश के युवाओं के लिए नए अवसर बना रहा है।

देश में 3 करोड़ लखपति दीदी बनाने का अभियान जारी है। इनमें से 1.5 करोड़ लखपति दीदी बन भी चुकी है। और आप तो जानते हैं लखपति दीदी बनने का मतलब है, 1 साल में कम से कम 1 लाख से अधिक उसकी आय होनी चाहिए और एक बार नहीं हर वर्ष होती रहनी चाहिए, वो है मेरी लखपति दीदी। 1.5 करोड़ लखपति दीदी, अब आप देखिए गांव में जाएंगे तो आपको कुछ बातें सुनने को मिलेगी, बैंक सखी, बीमा सखी, कृषि सखी, पशु सखी, ऐसी अनेक स्कीम्स में भी हमारे गांव की माताओं बहनों को भी रोजगार मिला है। ऐसे ही पीएम स्वनिधि योजना के तहत पहली बार रेहड़ी ठेले फुटपाथ पर काम करने वाले साथियों को मदद दी गई। इसके तहत लाखों साथियों को काम मिला है और डिजिटल पेमेंट के कारण आजकल तो हमारे हर रेहड़ी पटरी वाला कैश नहीं लेता है, यूपीआई करता है। क्यों? क्योंकि बैंक से उसको तुरंत उसे आगे की रकम मिलती

है। बैंक का विश्वास बढ़ जाता है। कोई कागज की उसको जरूरत नहीं पड़ती। यानी एक रेहड़ी पटरी वाला आज विश्वास के साथ गर्व के साथ आगे बढ़ रहा है।

पीएम विश्वकर्मा स्कीम देख लीजिए। इसके तहत हमारे यहां जो पुश्तैनी काम है, परंपरागत काम है, पारिवारिक काम है, उसको आधुनिक बनाना, उसमें नयापन लाना, नई टेक्नोलॉजी लाना, नए-नए उसमें साधन लाना, उसमें काम करने वाले कारीगरों, शिल्पियों और सेवा दाताओं को ट्रेनिंग दी जा रही है। लोन दिये जा रहे हैं, आधुनिक टूल दिए जा रहे हैं। मैं अनगिनत स्कीमें बता सकता हूं। ऐसी कई स्कीम है जिनसे गरीबों को लाभ भी हुआ है और नौजवानों को रोजगार भी मिला है। ऐसी अनेक योजनाओं का ही प्रभाव है कि सिर्फ 10 वर्षों में ही 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकले हैं। अगर रोजगार ना मिलता, अगर परिवार में आय का साधन ना होता, तो मेरा गरीब भाई-बहन जो तीन-तीन चार-चार पीढ़ी से गरीबी में जिंदगी गुजार रहा था, जीवन के लिए एक-एक दिन काटने के लिए उसको मौत दिखाई देती, इतना डर लगता था। लेकिन आज वो इतना ताकतवर बना है, कि मेरे 25 करोड़ गरीब भाई-बहनों ने गरीबी को परास्त करके दिखाया। विजयी होकर के निकले हैं। और ये सारे मेरे 25 करोड़ भाई-बहन, जिन्होंने गरीबी को पीछे छोड़ा है ना, उनकी हिम्मत को मैं दाद देता हूं। उन्होंने सरकार की योजनाओं का लाभ उठाकर के हिम्मत के साथ आगे बढ़े, रोते नहीं बैठे। गरीबी को उन्होंने उखाड़ के फेंक दिया, पराजित कर दिया। अब आप कल्पना कीजिए, अब इन 25 करोड़ का कितना नया आत्मविश्वास होगा। एक बार संकट से व्यक्ति निकल जाए ना फिर नई ताकत पैदा हो जाती है। मेरे देश में एक नई ताकत यह भी आई है, जो देश को आगे ले जाने में बहुत काम आने वाली है। और आप देखिए ये सिर्फ सरकार कह रही है ऐसा नहीं है। आज वर्ल्ड बैंक जैसी बड़ी वैश्विक संस्थाएं खुलकर के इस काम के लिए भारत की प्रशंसा कर रही हैं। दुनिया में भारत को मॉडल के रूप में प्रस्तुत करती हैं। भारत को दुनिया के सबसे अधिक इक्वलिटी वाले शीर्ष के देशों में रखा जा रहा है। यानी असमानता तेजी से कम हो रही है। हम समानता की ओर आगे बढ़ रहे हैं। ये भी विश्व अब नोटिस कर रहा है।

विकास का जो ये महायज्ञ चल रहा है, गरीब कल्याण और रोजगार निर्माण का जो मिशन चल रहा है, आज से इसको आगे बढ़ाने का दायित्व आपका भी है। सरकार रुकावट नहीं बननी चाहिए, सरकार विकास की प्रोत्साहक बननी चाहिए। हर व्यक्ति को आगे बढ़ने का अवसर है। हाथ पकड़ने का काम हमारा है। और आप तो नौजवान है दोस्तों। आप पर मेरा बहुत भरोसा है। आपसे मेरी अपेक्षा है कि आप जहां भी दायित्व मिले, आप इस देश के नागरिक मेरे लिए सबसे पहले, उसकी मदद उसकी मुसीबतों से मुक्ति, देखते ही देखते देश आगे बढ़ेगा। आपको भारत के अमृत काल का सहभागी बनना है। आने वाले 20-25 साल आपकी करियर के लिए तो महत्वपूर्ण है, लेकिन आप ऐसे कालखंड में हैं, जब देश के लिए 20-25 वर्ष बहुत महत्वपूर्ण हैं। ये विकसित भारत के निर्माण के लिए अहम 25 वर्ष हैं। इसलिए आपको अपने काम, अपने दायित्व, अपने लक्ष्यों को विकसित भारत के संकल्प के साथ आत्मसात करना है। नागरिक देवो भव यह मंत्र तो हमारी रगों में दौड़ना चाहिए, दिल दिमाग में रहना चाहिए, हमारे व्यवहार में नजर आना चाहिए।

और मुझे पक्का विश्वास है, यह युवा शक्ति है, पिछले 10 साल में देश को आगे बढ़ाने में मेरे साथ खड़ी है। मेरे एक-एक शब्द को देश की भलाई के लिए उन्होंने जो भी कर सकते हैं किया है। जहां है वहां से किया है। आपको मौका मिला है, आपसे अपेक्षाएं ज्यादा है। आपकी जिम्मेदारी ज्यादा है, आप करके दिखाएंगे यह मेरा विश्वास है।

iGOT प्लेटफॉर्म पर जाकर के लगातार अपने आप को अपग्रेड करते ही रहें। एक बार जगह मिल गई चुप बैठिए मत, बहुत बड़े सपने देखिए, बहुत आगे जाने के लिए सोचिए। काम कर करके, नया-नया सीख करके, नया-नया परिणाम लाकर के, प्रगति भी कीजिए। आपकी प्रगति में देश का गौरव है, आपकी प्रगति में मेरा संतोष है। और इसलिए मैं आज जब आप एक नए जीवन की शुरुआत कर रहे हैं, आपसे बात करने के लिए आया हूं, शुभकामनाएं देने के लिए आया हूं और बहुत सारे सपनों को पूरा करने के लिए अब आप मेरे एक साथी बन रहे हैं। मेरे एक निकट साथी के रूप में मैं आपका स्वागत करता हूं। ▪

कार्यकर्ता संगठन को और आगे ले जायें हेमंत खण्डेलवाल

- **प्रदेश अध्यक्ष का दायित्व मिलने के बाद भी मैं पहले जैसा था, वैसा ही हूं।**
- **भाजपा कार्यकर्ता मेरा जीवन व प्राण, उनके सम्मान में कभी भी कमी नहीं आने दूंगा।**
- **संगठन को और मजबूत बनाने की जिम्मेदारी हम सभी कार्यकर्ताओं की।**

मुझ जैसे सामान्य कार्यकर्ता को पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व और प्रदेश नेतृत्व ने प्रदेश अध्यक्ष पद का दायित्व सौंपा। सभी कार्यकर्ताओं का जगह-जगह प्रेम, स्नेह और आशीर्वाद मिला। कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी अब और बढ़ गई है, क्योंकि मैं प्रदेशभर में संगठन के कार्यों को आगे बढ़ाने में लगा रहूंगा। सभी कार्यकर्ता पार्टी संगठन को और आगे ले जाने का कार्य करेंगे। भाजपा राजनीतिक दल के साथ एक परिवार भी है और पार्टी कार्यकर्ता परिवार के सदस्य हैं। पार्टी संगठन मजबूत हो, हर कार्यकर्ता को सम्मान महसूस हो, इसका मैं पूरा प्रयास करूंगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन

यादव के नेतृत्व में प्रदेश की भाजपा सरकार द्वारा संचालित जनकल्याणकारी योजनाओं का जन-जन को लाभ दिलाने का प्रयास कार्यकर्ताओं को करना है।

समाज को पार्टी से जोड़ें

हेमंत खण्डेलवाल

- **प्रधानमंत्री जी देश मजबूत कर रहे हैं, हमें उनको मजबूत करना है।**
- **आप समाज का विश्वास जीतें, पार्टी आप पर विश्वास जताएगी।**
- **समाज और सरकार के बीच की कड़ी बनें मोर्चा कार्यकर्ता।**

प्रदेश की राजनीति में जनजातीय समाज की अहम भूमिका है। समाज मध्यप्रदेश के बड़े क्षेत्र में निवास करता है, मैं भी आदिवासी बहुल बैतूल जिले का रहने वाला हूं। मुझे और मेरे परिवार को हमेशा जनजातीय समाज की सेवा करने का मौका मिला और जनजातीय समाज हमारे परिवार और भाजपा का पूरा सहयोग कर रहा है। इसलिए अनुसूचित जनजाति मोर्चा की भूमिका पार्टी और समाज में महत्वपूर्ण है। आप अपनी भूमिका का निर्वाह जितनी सक्रियता के साथ करेंगे, भाजपा की जीत भी उतनी ही सुनिश्चित होगी। अनुसूचित जनजाति मोर्चा कार्यकर्ता समाज के नेता बनें, समाज को पार्टी से जोड़ने का काम करें। लोगों को सरकार की योजनाओं से जोड़ें। जब आप समाज का विश्वास जीतेंगे, तो पार्टी भी आप पर विश्वास जताएगी। आपकी परंपराएं और संस्कृति सुरक्षित रहे, समाज का वजन बढ़े, नेतृत्व बढ़े, इसकी चिंता पार्टी करेगी। जब आप अपने क्षेत्र में, समाज के बीच जाएं, तो छोटी-छोटी बैठकें करें। कोशिश करें कि हर व्यक्ति आप से खुलकर बात कर सके, सवाल पूछ सके। जो भी प्रश्न उठाए जाएं, उनका उत्तर पूरी ताकत से और पूरे आत्मविश्वास के साथ दें। आप उस पार्टी के कार्यकर्ता हैं, जिसने जनजातीय समाज की भलाई के लिए अनेक काम किए हैं। इसलिए लोगों के बीच अपनी बात पूरी दमदारी से रखें। आप बोलेंगे, तो लोग आप से जुड़ेंगे।

भारतीय जनता पार्टी की सरकारों ने जनजातीय समाज की बेहतरी के लिए अनेक कदम उठाए हैं। रानी दुर्गावती का स्मारक बनाकर और रानी कमलापति के नाम पर हबीबगंज स्टेशन का नाम रखकर सिर्फ इन जनजातीय नायकों को सम्मान ही नहीं दिया, बल्कि उनके त्याग और बलिदान को जनता के सामने लाने का भी काम किया है। समाज की भलाई के लिए पेसा एक्ट भाजपा की सरकार ने लागू किया है। जो लोग आज समाज को बांटने की बात कर रहे हैं, उनसे ये पूछें कि जब बरसात में जनजातियों की झोपड़ी में पानी टपकता था, तब वो कहां थे? जब बीमार होने पर गरीब जनजाति के लोग ठोकरें खाते थे, तब कहां थे? गांवों में शौचालय नहीं थे और अगर फसल खराब हो जाए, तो किसान बर्बाद हो जाता था। भाजपा की सरकार ने उज्जवला योजना लागू की। आदिवासियों के पक्के मकान बनाए, आयुष्मान भारत योजना में उनके इलाज की व्यवस्था की। शौचालय बनवाए, फसल बीमा योजना लागू की। आज जो गांव-गांव में सड़कें दिखाई देती हैं, वो नेहरू जी और इंदिरा जी ने नहीं बनवाई हैं, भाजपा की सरकार ने बनवाई हैं। जनजातीय समाज के लिए आरक्षण की व्यवस्था भी कांग्रेस ने नहीं, बल्कि बाबा साहब अंबेडकर ने की थी, जिनका भारतीय जनता पार्टी सम्मान करती है। मोर्चा कार्यकर्ता इन बातों को पूरी दमदारी के साथ लोगों के बीच रखें। ▪

कार्यकर्ता सक्रियता बढ़ाएं-हितानंद जी

- **प्रधानमंत्री जी आदिवासी समाज को अधिकार और सम्मान देने का कार्य कर रहे हैं।**
- **जनजातीय समाज के विकास में श्रद्धेय अटल जी के योगदान भी जनता को बताएं।**

पूर्व प्रधानमंत्री, भारत रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष के साथ पार्टी संगठन को शून्य से शिखर तक की यात्रा के साक्षी रहे हैं। वर्ष 2025 को पार्टी श्रद्धेय अटल जी की जन्म शताब्दी वर्ष के रूप में मना रही है। अनुसूचित जनजातियों के विकास के लिए केंद्र सरकार में अलग मंत्रालय बनाने का कार्य श्रद्धेय अटल जी ने ही किया था। वनाधिकार कानून और पेसा एक्ट में श्रद्धेय अटल जी की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मार्चा कार्यकर्ता कार्यक्रमों में समाज के लोगों को यह बताएं कि जनजातीय समाज के विकास के लिए भाजपा लगातार कार्य कर रही है। पहले श्रद्धेय अटल जी ने पीएम ग्रामीण सड़क योजना बनाकर जनजातीय समाज की बस्तियों, मजरे-टोलों तक पक्की सड़कें बनवाईं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जनजातीय समाज को सम्मान देने का कार्य किया है।

भगवान बिरसा मुंडा की जयंती को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने का कार्य किया जा रहा है। प्रधानमंत्री जी हर गरीब, जनजातीय समाज के लोगों को पक्के आवास देने का कार्य कर रहे हैं। दूरदराज के बसाहटों में भी पीने का पानी नल से पहुंचा रहे हैं। पार्टी कार्यकर्ता सामाजिक कार्यों में अपनी सहभागिता और बढ़ाएं और युवाओं को पार्टी से जोड़ने के साथ जनजातीय समाज की परेशानियों को चिन्हित कर उनके समाधान के लिए कार्य करें। जनजातीय समाज हमेशा से प्रकृति की पूजा करता रहा है, हम सभी प्रकृति की पूजा करते हैं। इसलिए जनजातीय समाज को तोड़ने और भ्रमित करने वाली वैश्विक और देश के अंदर सक्रिय ताकतों से निपटने के लिए मोर्चा कार्यकर्ता अपनी भूमिका निभाएं। ▪

जोशी जी दिलों में राज करते थे

डॉ. मोहन यादव

प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता स्वर्गीय कैलाश जोशी जी एक जमीन से जुड़े नेता थे जो सदैव जनता के हितों के लिए प्रयासरत रहे।

- **श्रद्धेय जोशी जी ने आदर्श व प्रतिबद्ध कार्यकर्ता के रूप में जनता के दिलों में राज किया।**

श्रद्धेय कैलाश जोशी जी ने आजादी के बाद से ही बागली जैसे आदिवासी अंचल से जनसंघ और भारतीय जनता पार्टी को मजबूत करने के लिए कड़ी मेहनत की और मध्यप्रदेश के विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया। उन्होंने एक प्रभावी विधायक के रूप में अपनी पहचान बनाई। प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता स्वर्गीय कैलाश जोशी जी एक जमीन से जुड़े नेता थे जो सदैव जनता के हितों के लिए प्रयासरत रहे। श्रद्धेय जोशी जी ने आदर्श व प्रतिबद्ध कार्यकर्ता के रूप में नियमों का पालन करते हुए जनता के दिलों में राज किया। मध्यप्रदेश में संगठन विस्तार में उनकी अहम भूमिका रही। प्रदेश के मुख्यमंत्री रहते श्रद्धेय जोशी जी ने राजनीति को नई दिशा देने के साथ ही पार्टी व प्रदेश के विकास में जो योगदान दिया वह अभूतपूर्व है। विधायक, मुख्यमंत्री व सांसद रहते हुए भारतीय जनता पार्टी ने जो दायित्व सौंपा उसे मजबूती के साथ निर्वहन किया। वे राजनीतिक शुचिता और समर्पण के प्रतीक थे। श्रद्धेय जोशी के अध्यक्षीय कार्यकाल में सुश्री उमा भारती जी ने कांग्रेस की सरकार को उखाड़ फेंककर भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया था। राजनीति, पार्टी और प्रदेश के उत्थान में श्री जोशी जी का योगदान अविस्मरणीय है। श्रद्धेय जोशी जी की अदभुत संगठन क्षमता हमेशा प्रत्येक कार्यकर्ता के लिए प्रेरणा का काम करती रहेगी। ▪

जोशी जी "राजनीतिक संत" थे

हेमंत खण्डेलवाल

पार्टी और प्रदेश के उत्थान में श्री जोशी जी का योगदान अविस्मरणीय है। वे वास्तव में भारतीय राजनीति के "राजनीतिक संत" थे। उन्होंने सादगी से सभी का मन मोहा। आज की पीढ़ी को तकनीक का उपयोग तो करना है, अपने ज्ञान का उपयोग करना है, लेकिन किसी से सादगी और सद्विचार सीखना है जो उसे स्वर्गीय कैलाश जोशी को जरूर याद करना चाहिए।

- **सत्ता में रहते हुए सत्ता का त्याग स्वर्गीय कैलाश जोशी से सीखा जा सकता है।**

मध्यप्रदेश की राजनीति में अपने व्यक्तित्व व आचरण से किसी ने अमिट छाप छोड़ी है तो वह श्रद्धेय कुशाभाऊ ठाकरे के बाद स्वर्गीय कैलाश जोशी ही रहे। उन्होंने अपने आचरण व व्यक्तित्व से अमिट छाप छोड़ी है। राजनीति, पार्टी और प्रदेश के उत्थान में श्री जोशी जी का योगदान अविस्मरणीय है। वे वास्तव में भारतीय राजनीति के ''राजनीतिक संत'' थे। उन्होंने सादगी से सभी का मन मोहा। आज की पीढ़ी को तकनीक का उपयोग तो करना है, अपने ज्ञान का उपयोग करना है, लेकिन किसी से सादगी और सद्विचार सीखना है जो उसे स्वर्गीय कैलाश जोशी को जरूर याद करना चाहिए। नई पीढ़ी के लिए वह एक आदर्श हो सकते हैं। आशा करता हूं कि भाजपा का हर कार्यकर्ता, समाज का हर व्यक्ति उनके व्यक्तित्व को पढ़ेगा, उनके हर वह पल याद करेगा, जो समाज के साथ बिताए हैं उसको याद करेगा, उसको अपने आचरण में लाने का एक भी काम करेगा, तो जीवन धन्य हो जाएगा। ▪

भाजपा दुनिया में शोध और अनुसंधान का केंद्र - जगत प्रकाश नड्डा

देश कभी भी डॉ. मुखर्जी के ऋण से उऋण नहीं हो सकता। यदि आज बंगाल और उत्तर-पूर्व भारत हमारे साथ है, तो उसका श्रेय डॉ. मुखर्जी के संसद में दिए गए सशक्त हस्तक्षेप को जाता है। उन्होंने नेहरू सरकार के तुष्टिकरण के विरुद्ध आवाज उठाई और पहली केंद्रीय मंत्रिपरिषद से इस्तीफा देकर वैचारिक संघर्ष का मार्ग चुना। उन्होंने भारतीय जनसंघ की स्थापना कर एक वैकल्पिक विचारधारा की नींव रखी, जो आज भारतीय जनता पार्टी के रूप में फलीभूत हो चुकी है। श्रद्धेय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी के धारा 370 के विरुद्ध संघर्ष और रहस्यमय परिस्थितियों में हुए बलिदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। 11 मई 1953 को उनकी गिरफ्तारी हुई और 23 जून को श्रीनगर की जेल में रहस्यमयी परिस्थितियों में उन्होंने अंतिम सांस ली। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी का स्मरण करना केवल श्रद्धांजलि देने का नहीं, बल्कि उनके जीवन चरित्र से मार्गदर्शन लेने का अवसर है। भारतीय जनता पार्टी के सभी कार्यकर्ताओं से आग्रह है कि वे डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के लोकसभा में दिए गए ऐतिहासिक भाषणों और पंडित नेहरू को लिखी गई चिट्ठियों को अवश्य पढ़ें। उनमें देश के प्रति अग्निसमान समर्पण की भावना स्पष्ट झलकती है। उन्होंने नेहरू जैसे नेता को भी बेबाकी से सच सुनाने का साहस दिखाया था।

भारतीय जनता पार्टी की सबसे बड़ी ताकत है कि यह विचार आधारित पार्टी है। भाजपा कार्यकर्ता सत्ता के लिए दिशा नहीं बदलते। 1953 में डॉ. मुखर्जी ने कहा था कि एक देश में दो निशान, दो विधान, दो प्रधान नहीं हो सकते।

9 जून 2025 को आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने अपने 11 वर्ष पूर्ण किए। ये 11 वर्ष केवल एक कार्यकाल नहीं, बल्कि जनसेवा, साधना और समर्पण की वह यात्रा रही है, जो स्वर्णिम अक्षरों में लिखे जाने योग्य है। इस कालखंड ने यह सिद्ध किया है कि जब नेतृत्व स्पष्ट होता है, संकल्प अडिग होता है और नीयत जनसेवा की होती है, तब सेवा, सुरक्षा और सुशासन के नए कीर्तिमान स्थापित होते हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के दृढ़ नेतृत्व ने इन 11 वर्षों को सिद्धियों की गाथा में परिवर्तित कर दिया है। ''सेवा'' भारतीय जनता पार्टी का केवल नारा नहीं, बल्कि कार्य करने की मूल संस्कृति है। जब कोरोना काल में देश के बड़े-बड़े राजनीतिक दल या तो क्वारंटीन में चले गए या राजनीतिक तौर पर 'आईसीयू' में चले गए, उस कठिन समय में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं ने ही 'सेवा ही संगठन' के मंत्र को जीवन में उतारते हुए करोड़ों लोगों की सेवा की और देश के साथ खड़े रहे। सुरक्षा के क्षेत्र में प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में 'न्यू नॉर्मल' स्थापित हुआ है। जब उरी की घटना हुई, तब उसका जवाब सर्जिकल स्ट्राइक से दिया गया। पुलवामा के बाद एयर स्ट्राइक हुई और हाल की पहलगाम की आतंकी घटना के बाद ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान के भीतर कई स्थानों पर उनके सैन्य केंद्रों को ध्वस्त किया गया। इन सैन्य कार्यवाहियों ने देश को यह विश्वास दिया है कि भारत अब अपने दुश्मनों को उनके ही घर में घुसकर जवाब देने में सक्षम है। भारतीय जनता पार्टी के सुशासन का ही परिणाम है कि आज भारत की अर्थव्यवस्था 11वें स्थान से 5वें पर आ चुकी है और चौथे स्थान की ओर अग्रसर है। यह बदलाव भारतीय जनता पार्टी की नीतियों की स्पष्टता और जनसेवा के प्रति प्रतिबद्धता का परिणाम है।

भाजपा कार्यालय सिर्फ ऑफिस नहीं हैं। ऑफिस सुबह 9 से 5 तक चलता है, लेकिन पार्टी का कार्यालय 24 घंटे चलता है। ये विचार, संगठन और संस्कारों के केंद्र हैं। यहां से नीति निर्धारण होता है, कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण होता है, रणनीति बनती है और जन संवाद का माध्यम बनते हैं। कोई कार्यकर्ता अपने विवेक से, कोई घटनाओं के प्रभाव से, कोई उत्साह से, तो कोई संघर्षों के कारण पार्टी से जुड़ता है, लेकिन जो भी भारतीय जनता पार्टी में आता है, वह सही पार्टी में आता है और

भारतीय जनता पार्टी केवल विचारधारा आधारित ही नहीं बल्कि कैडर आधारित पार्टी है, जिसकी देशभर में 973 जिला कमेटियां, 15,432 ब्लॉक यूनिट्स, 1,16,000 शक्ति केंद्र और 6,80,000 बूथ अध्यक्ष हैं।

भारतीय जनता पार्टी दुनिया की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक पार्टी हैं, जिसका दुनिया के सबसे लोकप्रिय नेता आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी नेतृत्व कर रहे हैं जिन्हें विश्व के 25 देशों द्वारा सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित किया गया है। आज देश में 13 बीजेपी शासित सरकारें और 6 एनडीए सरकारें मिलाकर 19 राज्यों में भारतीय जनता पार्टी की सरकारें हैं। देश में भाजपा के 240 लोकसभा सांसद, 98 राज्यसभा सदस्य, 1664 विधायक, 172 एमएलसी, 77 मेयर और हजारों जिला परिषद व बीडीसी सदस्य हैं।

यह गर्व की बात है।

भारतीय जनता पार्टी की सबसे बड़ी ताकत है कि यह विचार आधारित पार्टी है। भाजपा कार्यकर्ता सत्ता के लिए दिशा नहीं बदलते। 1953 में डॉ. मुखर्जी ने कहा था कि एक देश में दो निशान, दो विधान, दो प्रधान नहीं हो सकते। 2019 में श्री नरेन्द्र मोदी जी की इच्छा शक्ति और अमित शाह जी की रणनीति से धारा 370 समाप्त हुई। यह केवल राजनीतिक नहीं, आध्यात्मिक लड़ाई थी। भारतीय जनता पार्टी ने राम मंदिर के लिए लड़ाई लड़ी। 1989 में पालमपुर में भाजपा ने प्रस्ताव पारित किया था कि हम राम जन्मभूमि का मार्ग प्रशस्त करेंगे। वर्षों की लोकतांत्रिक लड़ाई के बाद, 2024 में भव्य राम मंदिर बना और देश ने एक ऐतिहासिक पल देखा।

भारतीय जनता पार्टी के पास अपना आर्थिक मॉडल है - पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का ''एकात्म मानववाद''। इस दर्शन को भाजपा ने ''अंत्योदय'' से जोड़कर सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास की दिशा में बढ़ाया। इसके बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने राष्ट्र निर्माण के चार प्रमुख स्तंभों को ज्ञान - गरीब, युवा शक्ति, अन्नदाता और नारी शक्ति से जोड़ा। इन चारों वर्गों को सशक्त बनाकर ही 'विकसित भारत' के संकल्प की दिशा में ठोस कार्य हो रहा है। भारतीय जनता पार्टी केवल विचारधारा आधारित ही नहीं बल्कि कैडर आधारित पार्टी है, जिसकी देशभर में 973 जिला कमेटियां, 15,432 ब्लॉक यूनिट्स, 1,16,000 शक्ति केंद्र और 6,80,000 बूथ अध्यक्ष हैं। भारतीय जनता पार्टी दुनिया की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक पार्टी हैं, जिसका दुनिया के सबसे लोकप्रिय नेता आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी नेतृत्व कर रहे हैं जिन्हें विश्व के 25 देशों द्वारा सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित किया गया है। आज देश में 13 बीजेपी शासित सरकारें और 6 एनडीए सरकारें मिलाकर 19 राज्यों में भारतीय जनता पार्टी की सरकारें हैं। देश में भाजपा के 240 लोकसभा सांसद, 98 राज्यसभा सदस्य, 1664 विधायक, 172 एमएलसी, 77 मेयर और हजारों जिला परिषद व बीडीसी सदस्य हैं। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के नेतृत्व में देश तेजी से प्रगति कर रहा है।

आज प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में देश जिस तरह से आगे बढ़ रहा है, वो हम सभी ने अनुभव किया है। हम सब बहुत सौभाग्यशाली हैं। भगवान का आशीर्वाद बना रहे और भाजपा कार्यकर्ताओं की ताकत के साथ, मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा इसी प्रकार आगे बढ़ती रहे। बहुत से कार्यकर्ताओं को यह दृश्य देखने का अवसर नहीं मिला कि - चुनाव पूरे भी नहीं हुए थे, नतीजे आए भी नहीं थे, और दीनदयाल मार्ग पर जश्न का कार्यक्रम शुरू हो गया। एक के बाद एक, अनेक घटनाएं घटीं।

यह उत्कर्ष की स्थिति थी लेकिन हमें यहां नहीं रुकना है। अब हमारी दृष्टि तमिलनाडु पर है। हमारी नजर अब केरल पर है, उड़ीसा हमने लिया है, अब पश्चिम बंगाल पर हमारा लक्ष्य है। भाजपा कार्यकर्ता यह अपना सौभाग्य मानते हैं कि यह अवसर हमें मिला है कि हम 19 राज्यों को 23 और 24 राज्यों तक पहुंचा सकें ।

जब भारत चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन रहा है, तो उसका कारण यह है कि देश मोबाइल मैन्युफैक्चरिंग में बहुत आगे बढ़ चुका है। भारत की मोबाइल मैन्युफैक्चरिंग 44 गुना बढ़ चुकी है, लगभग 97 प्रतिशत मोबाइल अब भारत में ही बन रहे हैं। दस साल पहले हर मोबाइल पर लिखा होता था, मेड इन चाइना, मेड इन जापान, मेड इन ताइवान लेकिन आज एप्पल पर भी लिखा होता है 'मेड इन इंडिया'। इलेक्ट्रॉनिक्स के एक्सपोर्ट में भारत 4.5 गुना वृद्धि कर चुका है। डिफेंस के एक्सपोर्ट में 20 गुना, स्टील मैन्युफैक्चरिंग में भारत दुनिया में दूसरे स्थान पर है। टॉय एक्सपोर्ट्स में भारत ने 40 प्रतिशत की वृद्धि हासिल की है। इसी तरह रोड्स, रेलवे, हाइवे और एयरवेज, हर क्षेत्र में भारत व्यापार, टेक्नोलॉजी और विज्ञान के साथ विकास से जुड़ चुका है। अगर हाइवे की बात की जाए तो आज 1,40,000 किलोमीटर सड़कें बनी हैं। 4678 किलोमीटर स्पीड कॉरिडोर का निर्माण हुआ है। प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना के तहत अब तक 7,71,000 किलोमीटर सड़कें बन चुकी हैं। आज हर बड़े शहर में मेट्रो नजर आती है। 2014 में देश में इंटरनेट कनेक्शन्स का आंकड़ा 25 करोड़ था और आज यह 97 करोड़ तक पहुंच चुका है। ब्रॉडबैंड कनेक्शन जो पहले 6 करोड़ थे, आज 94.5 करोड़ हो गए हैं। रेलवे में भारत सेकंड लार्जेस्ट इलेक्ट्रिफाइड नेटवर्क बन चुका है। ऑपरेशनल मेट्रो में चार गुना वृद्धि हुई है। एयरपोर्ट्स की संख्या पहले 74 थी, अब 159 हो चुकी है। भाजपा सरकार में विकास की दिशा में यह अभूतपूर्व परिवर्तन है।

प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के अंतर्गत हर महीने 80 करोड़ लोगों को मुफ्त राशन और इलाज मिल रहा है, जिसके कारण भारत की अति-गरीबी 1 प्रतिशत से भी कम हो गई है। आज 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से ऊपर उठ चुके हैं।

पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू से लेकर मनमोहन सिंह तक ''गरीबी हटाओ'' का नारा देते रहे, लेकिन गरीबी नहीं हटी। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश के 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर आए हैं। भाजपा सरकार में विकास की दिशा में लगातार अनेकों कार्य हो रहे हैं। इसी दिशा में कार्यकर्ता कार्यालय का सदुपयोग करें, विचारों को मजबूत करें और सुविचारित भारतीय जनता पार्टी को आगे बढ़ाएं।

आज भारतीय जनता पार्टी केवल देश नहीं, दुनिया में भी शोध और अनुसंधान का केंद्र बन चुकी है और यह भाजपा कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम के बल पर ही संभव हुआ है। ▪

प्रधानमंत्री ने डॉ. मुखर्जी के विचारों को क्रियान्वित किया - मुख्यमंत्री डॉ. यादव

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने संविधान के अनुच्छेद 370 का विरोध करते हुए संसद में भाषण दिया था। वे कश्मीर को विशेष दर्जा देने के प्रबल विरोधी थे। उनका मानना था कि कश्मीर हमारे लिए केवल एक भू-भाग नहीं अपितु भारत की आत्मा है।

- **सच्चे राष्ट्रभक्त और लोकतंत्र सेनानी थे डॉ. मुखर्जी।**
- **डॉ. मुखर्जी ने धारा 370 के विरोध के साथ ही राष्ट्र हित के अनेक मुद्दों पर निरंतर कार्य किया।**

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कश्मीर में धारा 370 के विरोध के साथ ही राष्ट्र हित के अनेक मुद्दों पर निरंतर कार्य किया। वे लोकतांत्रिक व्यवस्था में ऐसे सच्चे नेता थे, जिन्होंने लोकतंत्र सेनानी के रूप में कोलकाता और पश्चिम बंगाल को बचाने का कार्य भी किया। उन्होंने राष्ट्रवादी संगठन जनसंघ की स्थापना तो की ही तत्कालीन केंद्र सरकार से स्वयं को अलग करते हुए निर्दलीय रूप से निर्वाचन का निर्णय लिया। शिक्षा के क्षेत्र से सार्वजनिक क्षेत्र में प्रवेश करने के बाद ऐसी अनेक चुनौतियों का उन्होंने सामना किया जो राष्ट्र भक्त ही किया करते हैं।

डॉ. मुखर्जी ने कभी असंगत व्यवस्थाओं से समझौता नहीं किया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पहलगाम की हिंसा का उत्तर आपरेशन सिंदूर के माध्यम से दिया। स्वतंत्रता के बाद सर्वप्रथम डॉ. मुखर्जी ने ऐसी व्यवस्थाओं का विरोध किया था जो राष्ट्र हित में नहीं थीं। उनके बलिदान को हमेशा याद रखा जाएगा।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने डॉ. मुखर्जी के जीवन लक्ष्य को पूर्ण करते हुए कश्मीर से धारा 370 हटाने का ऐतिहासिक निर्णय लिया। इस तरह डॉ. मुखर्जी के संकल्प ''एक निशान, एक विधान और एक प्रधान'' को साकार करने का कार्य किया गया है। पूरे राष्ट्र ने एक स्वर से कश्मीर से धारा 370 हटाने का समर्थन किया है।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने संविधान के अनुच्छेद 370 का विरोध करते हुए संसद में भाषण दिया था। वे कश्मीर को विशेष दर्जा देने के प्रबल विरोधी थे। उनका मानना था कि कश्मीर हमारे लिए केवल एक भू-भाग नहीं अपितु भारत की आत्मा है। डॉ. अम्बेडकर का भी यही विचार था। डॉ. मुखर्जी का मानना था कि भारत की एकता से कोई समझौता नहीं बल्कि संकल्प है। कश्मीर के मुद्दे पर भारतीय जनसंघ ने सत्याग्रह भी किया। डॉ. मुखर्जी 11 मई 1953 को परमिट सिस्टम का उल्लंघन कर कश्मीर पहुंचे वहां उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और विषम परिस्थितियों में 23 जून 1953 को उनका स्वर्गवास हो गया। यह उनका बलिदान था। डॉ. मुखर्जी ने राष्ट्रवासियों को यह बताया कि राष्ट्र के लिए हमारी दृष्टि कैसी होनी चाहिए। आज भारत दुनिया का बड़ा लोकतांत्रिक देश है। स्वतंत्रता के समय हुई त्रुटियों को याद रखने की आवश्यकता है। डॉ. मुखर्जी जैसे महापुरूषों के योगदान का इसलिए निरंतर स्मरण करना जरूरी है। आज प्रधानमंत्री श्री मोदी राष्ट्र के शत्रुओं को उनके घर में घुसकर मारने का हौसला रखते हैं। ▪

सपना टूट गया

अटल बिहारी वाजपेयी

**हाथों की हल्दी है पीली
पैरों की मेहँदी कुछ गीली
पलक झपकने से पहले ही
सपना टूट गया।**

**दीप बुझाया रची दिवाली
लेकिन कटी न मावस काली
व्यर्थ हुआ आवाहन,
स्वर्ण सबेरा रूठ गया।
सपना टूट गया।**

**नियति नटी की लीला न्यारी
सब कुछ स्वाहा की तैयारी
अभी चला दो कदम कारवाँ
साथी छूट गया।
सपना टूट गया।**

कार्यकर्ता जनजातियों के विकास में जुटे-हेमंत खण्डेलवाल

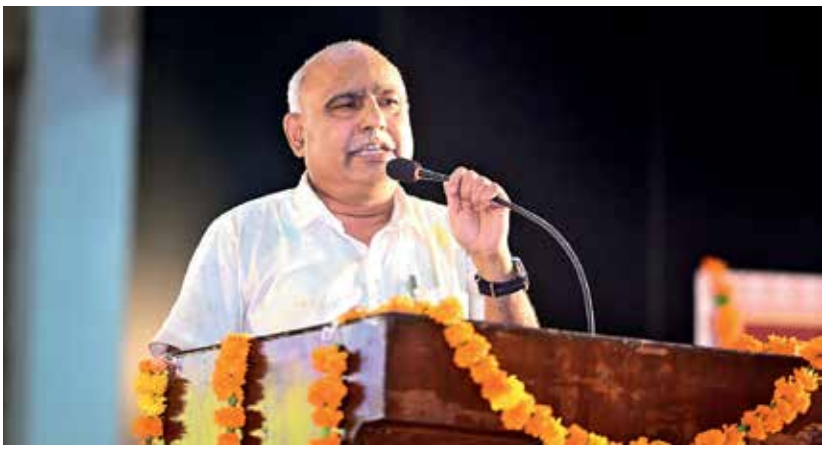

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने ग्वालियर के दौलतगंज स्थित एक धर्मशाला से भाजपा की विचारधारा को प्रतिपादित किया। पूरी दुनिया में भारत का नाम रोशन करने वाले श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी का जन्म भी यहीं हुआ। हमारी पार्टी को मध्यप्रदेश में पहला महापौर देने वाला शहर भी ग्वालियर ही है।

- **प्रधानमंत्री मोदी जी जिस विचारधारा का नेतृत्व कर रहे, उसका जन्म ग्वालियर की सरजमीं पर हुआ।**
- **श्रद्धेय अटल जी की जन्मभूमि, राजमाता की कर्मभूमि के कार्यकर्ता हारे हुए बूथों को जिताने में जुट जाएं।**
- **देश को बुलंदी पर ले जाने के लिए सरकार व जनता के बीच सेतु बनें कार्यकर्ता।**
- **भाजपा एक विचारधारा है, कार्यकर्ता उसे जन-जन तक पहुंचाकर पार्टी को और मजबूती प्रदान करें।**
- **भाजपा को मजबूत बनाने में ग्वालियर का योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकता।**

भारतीय जनता पार्टी को मजबूत करने और उसे विराट स्वरूप तक पहुंचाने में ग्वालियर का अतुलनीय योगदान रहा है। ग्वालियर के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने ग्वालियर के दौलतगंज स्थित एक धर्मशाला से भाजपा की विचारधारा को प्रतिपादित किया। पूरी दुनिया में भारत का नाम रोशन करने वाले श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी का जन्म भी यहीं हुआ। हमारी पार्टी को मध्यप्रदेश में पहला महापौर देने वाला शहर भी ग्वालियर ही है। हमें पार्टी को इस बुलंदियों तक पहुंचाने वाले सभी महानुभावों को याद करना चाहिए। पार्टी संगठन को जब धन की आवश्यकता पड़ी तो राजमाता सिंधिया ने अपनी सगाई की अंगूठी तक दे दी थी। हमें ऐसे महान विभूतियों को नहीं भूलना चाहिए, जिन्होंने पार्टी संगठन को यहां तक पहुंचाने में अपना अमूल्य योगदान दिया है। देश और मध्यप्रदेश में भाजपा को मजबूत करने में ग्वालियर क्षेत्र के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। स्वर्गीय शीतला सहाय, स्वर्गीय इंद्रापुरकर, स्वर्गीय नारायण शेजवलकर से लेकर स्वर्गीय प्रभात झा और विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने पार्टी को मध्यप्रदेश और देश में मजबूत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

सभी कार्यकर्ताओं की मेहनत और परिश्रम से भाजपा संगठन इतना मजबूत बन सका है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत विश्व की ग्यारहवीं सबसे बड़ी अर्थव्यस्था से चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है। भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बनने की ओर तेजी से अग्रसर है। देश को विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था बनाने और हजारों साल पुराना वैभव दिलाने के लिए हमें प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और भाजपा को और मजबूत बनाना है। हर कार्यकर्ता पार्टी की मजबूती के लिए खुद को समर्पित कर दे और खुद को किसी नेता से कम न समझे। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव मध्यप्रदेश को देश का अग्रणी राज्य बनाने के लिए कार्य कर रहे हैं। सभी कार्यकर्ता सरकार और जनता के बीच की कड़ी बनकर सरकार के कार्यों को जन-जन तक पहुंचाएं, पार्टी संगठन हर कार्यकर्ता को काम और दायित्व की चिंता करता है।

सभी को भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता होने पर गर्व है। हमें इसलिए भी गर्व होना चाहिए कि हम सभी उस दल के कार्यकर्ता हैं, उस विचारधारा को आगे बढ़ाने के लिए कार्य कर रहे हैं जो देश का भविष्य बनाने का कार्य कर रही है। आप उस दल के नेता हैं जो सनातन को बचाने और उसे आगे बढ़ाने के लिए कार्य कर रहा है। आने वाले 50 साल बाद भी आपका सम्मान होगा, क्योंकि आपने देश को विकसित बनाने और सनातन को बचाने के लिए कार्य कर रहे हैं। हर कार्यकर्ता अपने आप को प्रदेश अध्यक्ष ही महसूस करें, क्योंकि यह सिर्फ एक दायित्व है। भारतीय जनता पार्टी में कोई नेता नहीं होता, हर कार्यकर्ता बड़ा नेता होता है। प्रदेश अध्यक्ष एक दायित्व होता है, जिसको जिम्मेदारी मिलती है वह दायित्व का निर्वहन करता है। मैं आदिवासी क्षेत्र से आता हूं। जनजातियों के विकास के लिए मेरा परिवार और मैं कार्य करता हूं। मैं खुद को सौभाग्यशाली मानता हूं कि मुझे जनजातीय बंधुओं का दुख-दर्द मिटाने का मौका मिला। आप सभी पार्टी कार्यकर्ता जनजातियों के विकास, उनका दुख-दर्द मिटाने में जुटें और पार्टी को बुलंदियों तक पहुंचाने के लिए कार्य करें। ▪

भारत का सम्मान पूरी दुनिया में बढ़ा- अमित शाह

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के तीन प्रमुख सिद्धांत निहित हैं। पहला सिद्धांत है, भ्रष्टाचार मुक्त पारदर्शी और जवाबदेह शासन व्यवस्था, दूसरा सिद्धांत यह सुनिश्चित करता है कि सरकारी योजनाओं का लाभ बिना किसी भेदभाव के समाज के हर वर्ग तक पहुंचे।

देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 'विकसित भारत की संकल्पना' देश के 140 करोड़ नागरिकों के समक्ष रखी है और राज्यों के समग्र विकास के बिना विकसित भारत की कल्पना अधूरी है। उसके मूल में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के तीन प्रमुख सिद्धांत निहित हैं। पहला सिद्धांत है, भ्रष्टाचार मुक्त पारदर्शी और जवाबदेह शासन व्यवस्था, दूसरा सिद्धांत यह सुनिश्चित करता है कि सरकारी योजनाओं का लाभ बिना किसी भेदभाव के समाज के हर वर्ग तक पहुंचे। तीसरा सिद्धांत है कि वोट बैंक की राजनीति से ऊपर उठकर राज्य के समग्र विकास की संकल्पना को साकार किया जाए।

जब भाजपा ओडिशा में मेहनत कर रही थी, तब भी पार्टी पर ताने कसे गए। कहा गया कि यहां भाजपा की कोई जगह नहीं है, लेकिन कार्यकर्ताओं ने संगठन को मजबूत किया, जन-आधार बढ़ाया और अंततः सरकार में भागीदारी सुनिश्चित की। इसी तरह असम में भी पार्टी को पहले मजाक का विषय बनाया गया, लेकिन असम की जनता ने भाजपा को स्वीकार किया और आज वहां लगातार दो बार भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी है। केरल की जनता ने 2014 के लोकसभा चुनाव में भाजपा को 11 प्रतिशत वोट दिए, 2019 में यह बढ़कर 13 प्रतिशत हुआ और 2024 में भाजपा को 16 प्रतिशत वोट मिले। इसी दिशा में आगे बढ़ते हुए अब केरल में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनाने का समय आ गया है। अब सरकार बनाने के लिए भाजपा कार्यकर्ताओं को पूरी ताकत से प्रयास करना है। जनता का रुझान भी अब स्पष्ट है और केरल के मतदाता समझदार और निर्णायक हैं। आगामी 2026 के विधानसभा चुनाव में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में एनडीए और भाजपा केरल में सरकार बनाएगी।

केरल में वामपंथी गुंडों द्वारा भारतीय जनता पार्टी के सैकड़ों कार्यकर्ताओं की हत्या कर दी गई। उनके परिवारों ने जो सहा है, वह उनका निजी दुख नहीं था। उन सभी का एक स्वप्न था कि केरल में एक दिन एनडीए-भाजपा की सरकार बनेगी। अब वह सपना साकार करने का समय आ गया है। आज भाजपा उस स्थिति में हैं, जहां पार्टी को 16 प्रतिशत वोट मिल चुके हैं।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केन्द्र की NDA सरकार को 11 वर्ष हो गए हैं और आज तक विपक्ष एक भी ठोस भ्रष्टाचार का आरोप नहीं लगा सका है। यही ईमानदार नेतृत्व और भ्रष्ट व्यवस्था के बीच का अंतर है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश में लंबे समय से लंबित और उलझे हुए कई मुद्दों का समाधान किया है। ऐसे बड़े-बड़े कार्य, जो दशकों तक अधूरे रहे और जिन्हें कोई सरकार सुलझा नहीं सकी, उन्हें आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने नेतृत्व में पूरा करके दिखाया। धारा 370 खत्म करना, भव्य राम मंदिर का निर्माण, पीएफआई पर प्रतिबंध, तीन तलाक की प्रथा को समाप्त करना, वक्फ संशोधन बिल जैसे कार्य भाजपा सरकार के कार्यकाल में हुए। माननीय प्रधानमंत्री जी देशहित में निर्णय लेने से कभी पीछे नहीं हटे। इन ऐतिहासिक निर्णयों के साथ-साथ आदरणीय मोदी जी ने देश के 60 करोड़ गरीबों को घर, बिजली, पानी, 5 लाख तक का स्वास्थ्य बीमा, 5 किलो अनाज जैसी बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराईं हैं। बीते 11 वर्षों में उन्होंने विकास को जनसामान्य तक पहुंचाया है। देश की अर्थव्यवस्था, जो पहले 11वें स्थान पर थी, आज दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुकी है और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत पहले से कहीं अधिक सुरक्षित हुआ है। मार्च 2026 तक पूरा देश नक्सलवाद से पूरी तरह मुक्त हो जाएगा। इस प्रकार के आतंकवाद का अंत सिर्फ आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और भारतीय जनता पार्टी ही कर सकती है। उरी में जब हमला हुआ, देश की सेना ने सर्जिकल स्ट्राइक की, पुलवामा में हमला हुआ तो एयर स्ट्राइक की और जब पहलगाम में आतंकी हमला हुआ, तो मोदी सरकार ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के जरिए पाकिस्तान के अंदर घुसकर आतंकी ठिकानों को ध्वस्त कर दिया। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने वह सब किया है जो पहले केवल भाषणों में होता था और इसी लिए आज भारत का सम्मान पूरी दुनिया में बढ़ा है। ▪

'विकसित भारत' आत्मनिर्भरता से - मोदी

- शुभांशु के धरती पर सुरक्षित उतरते ही लोग खुशी से झूम उठे, हर दिल में खुशी की लहर दौड़ गई। पूरा देश गर्व से भर गया।
- देश में स्पेस स्टार्टअप तेजी से बढ़ रहे हैं। पाँच साल पहले, 50 से भी कम स्टार्टअप थे। आज, स्पेस सेक्टर में 200 से ज्यादा स्टार्टअप हैं।
- सिर्फ 18 साल की उम्र में खुदीराम बोस ने ऐसा साहस दिखाया जिसने पूरे देश को हिलाकर रख दिया। उस युवा के चेहरे पर जरा भी डर नहीं था।
- देश हर साल 7 अगस्त को ''राष्ट्रीय हथकरघा दिवस'' मनाता है। इस साल 7 अगस्त को ''राष्ट्रीय हथकरघा दिवस'' के 10 साल पूरे हो रहे हैं।
- आज भारत में 3000 से अधिक टैक्सटाइल स्टार्टअप एक्टिव हैं। कई स्टार्टअप ने भारत की हैण्डलूम पहचान को वैश्विक ऊँचाई दी है।
- भारत सरकार ने इस साल के बजट में ''ज्ञान भारतम मिशन'' नामक एक ऐतिहासिक पहल की घोषणा की है। इस मिशन के तहत प्राचीन पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण किया जाएगा।
- पिछले 11 वर्षों में ''स्वच्छ भारत मिशन'' एक जन आंदोलन बन गया है। लोग इसे अपना कर्तव्य मानते हैं और यही वास्तविक जनभागीदारी है।

23 अगस्त को National Space Day है। आप इसे कैसे मनाएंगे, कोई नया idea है क्या? मुझे NaMo App पर जरूर message भेजिएगा।

21वीं सदी के भारत में आज science एक नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ रही है। कुछ दिन पहले हमारे छात्रों ने International Chemistry Olympiad में medal जीते हैं।

मन की बात में एक बार फिर बात होगी देश की सफलताओं की, देशवासियों की उपलब्धियों की। पिछले कुछ हफ्तों में, sports हो, science हो या संस्कृति, बहुत कुछ ऐसा हुआ है जिस पर हर भारतवासी को गर्व है। अभी हाल ही में शुभांशु शुक्ला की अंतरिक्ष से वापसी को लेकर देश में बहुत चर्चा हुई। जैसे ही शुभांशु धरती पर सुरक्षित उतरे, लोग उछल पड़े, हर दिल में खुशी की लहर दौड़ गई। पूरा देश गर्व से भर गया। मुझे याद है, जब अगस्त 2023 में चंद्रयान-3 की सफल landing हुई थी तब देश में एक नया माहौल बना। Science को लेकर, Space को लेकर बच्चों में एक नई जिज्ञासा भी जागी। अब छोटे-छोटे बच्चे कहते हैं, हम भी Space में जाएंगे, हम भी चाँद पर उतरेंगे - Space Scientist बनेंगे।

आपने INSPIRE-MANAK अभियान का नाम सुना होगा। यह बच्चों के innovation को बढ़ावा देने का अभियान है। इसमें हर स्कूल से पाँच बच्चे चुने जाते हैं। हर बच्चा एक नया idea लेकर आता है। इससे अब तक लाखों बच्चे जुड़ चुके हैं और चंद्रयान-3 के बाद तो इनकी संख्या दोगुनी हो गई है। देश में Space start-ups भी तेजी से बढ़ रहे हैं। पाँच साल पहले 50 से भी कम start-up थे। आज 200 से ज्यादा हो गए है, सिर्फ Space sector में।

23 अगस्त को National Space Day है। आप इसे कैसे मनाएंगे, कोई नया idea है क्या? मुझे NaMo App पर जरूर message भेजिएगा।

21वीं सदी के भारत में आज science एक नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ रही है। कुछ दिन पहले हमारे छात्रों ने International Chemistry Olympiad में medal जीते हैं। देवेश पंकज, संदीप कुची, देबदत्त प्रियदर्शी और उज्ज्वल केसरी, इन चारों ने भारत का नाम रोशन

किया। Maths की दुनिया में भी भारत ने अपनी पहचान को और मजबूत किया है। Australia में हुए International Mathematical Olympiad में हमारे students ने 3 gold, 2 silver और 1 bronze medal हासिल किया है।

अगले महीने मुंबई में Astronomy और Astrophysics Olympiad होने जा रहा है। इसमें 60 से ज्यादा देशों के छात्र आएंगे। वैज्ञानिक भी आएंगे। यह अब तक का सबसे बड़ा Olympiad होगा। एक तरह से देखें तो भारत अब Olympic और Olympiad, दोनों के लिए आगे बढ़ रहा है।

हम सभी को गर्व से भर देने वाली एक और खबर आई है, UNESCO से। UNESCO ने 12 मराठा किलों को World Heritage Sites के रूप में मान्यता दी है। ग्यारह किले महाराष्ट्र में, एक किला तमिलनाडु में। हर किले से इतिहास का एक-एक पन्ना जुड़ा है। हर पत्थर, एक ऐतिहासिक घटना का गवाह है। सल्हेर का किला, जहाँ मुगलों की हार हुई। शिवनेरी, जहाँ छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्म हुआ। किला ऐसा जिसे दुश्मन भेद न सके। खानदेरी का किला, समुद्र के बीच बना अदभुत किला। दुश्मन उन्हें रोकना चाहते थे लेकिन शिवाजी महाराज ने असंभव को संभव करके दिखा दिया। प्रतापगढ़ का किला, जहाँ अफजल खान पर जीत हुई, उस गाथा की गूंज आज भी किले की दीवारों में समाई है। विजयदुर्ग, जिसमें गुप्त सुरंगें थी, छत्रपति शिवाजी महाराज की दूरदर्शिता का प्रमाण इस किले में मिलता है। मैंने कुछ साल पहले रायगढ़ का दौरा किया था। छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा के सामने नमन किया था। ये अनुभव जीवन भर मेरे साथ रहेगा।

देश के और हिस्सों में भी ऐसे ही अदभुत किले हैं, जिन्होंने आक्रमण झेले, खराब मौसम की मार झेली, लेकिन आत्मसम्मान को कभी भी झुकने नहीं दिया। राजस्थान का चित्तौड़गढ़ का किला, कुंभलगढ़ किला, रणथंभौर किला, आमेर किला, जैसलमेर का किला तो विश्व प्रसिद्ध है। कर्नाटका में गुलबर्गा का किला भी बहुत बड़ा है। चित्रदुर्ग के किले की विशालता भी आपको कौतूहल से भर देगी कि उस जमाने में ये किला बना कैसे होगा!

उत्तर प्रदेश के बांदा में है, कालिंजर किला। महमूद गजनवी ने कई बार इस किले पर हमला किया और हर बार असफल रहा। बुन्देलखंड में ऐसे कई किले हैं-ग्वालियर, झांसी, दतिया, अजयगढ़, गढ़कुंडार, चँदेरी। ये किले सिर्फ ईंट-पत्थर नहीं है, ये हमारी संस्कृति के प्रतीक हैं। संस्कार और स्वाभिमान, आज भी इन किलों की ऊंची-ऊंची दीवारों से झाँकते हैं। मैं सभी देशवासियों से आग्रह करता हूँ, इन किलों की यात्रा करें, अपने इतिहास को जानें, गौरव महसूस करें।

आप कल्पना कीजिए, बिल्कुल भोर का वक्त, बिहार का मुजफ्फरपुर शहर, तारीख है, 11 अगस्त 1908 हर गली, हर चौराहा, हर हलचल उस समय जैसे थमी हुई थी। लोगों की आँखों में आँसू थे, लेकिन दिलों में ज्वाला थी। लोगों ने जेल को घेर रखा था, जहां एक 18 साल का युवक, अंग्रेजों के खिलाफ अपना देश-प्रेम व्यक्त करने की कीमत चुका रहा था। जेल के अंदर, अंग्रेज अफसर, एक युवा को फांसी देने की तैयारी कर रहे थे। उस युवा के चेहरे पर भय नहीं था, बल्कि गर्व से भरा हुआ था। वो गर्व, जो देश के लिए मर-मिटने वालों को होता है। वो वीर, वो साहसी युवा थे, खुदीराम बोस। सिर्फ 18 साल की उम्र में उन्होंने वो साहस दिखाया, जिसने पूरे देश को झकझोर दिया। तब अखबारों ने भी लिखा था- ''खुदीराम बोस जब फांसी के फंदे की ओर बढ़े, तो उनके चेहरे पर मुस्कान थी। ऐसे ही अनगिनत बलिदानों के बाद, सदियों की तपस्या के बाद, हमें आजादी मिली थी। देश के दीवानों ने अपने रक्त से आजादी के आंदोलन को सींचा था।''

अगस्त का महीना इसलिए तो क्रांति का महीना है। 1 अगस्त को लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की पुण्यतिथि होती है। इसी महीने, 8 अगस्त को गाँधी जी के नेतृत्व में 'भारत छोड़ो आंदोलन' की शुरुआत हुई थी। फिर आता है 15 अगस्त, हमारा स्वतंत्रता दिवस, हम अपने स्वतंत्रता सेनानियों को याद करते हैं, उनसे प्रेरणा पाते हैं, लेकिन, हमारी आजादी के साथ देश के बंटवारे की टीस भी जुड़ी हुई है, इसलिए हम 14 अगस्त को 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' के रूप में मनाते हैं।

7 अगस्त 1905 को एक और क्रांति की शुरुआत हुई थी। स्वदेशी आंदोलन ने स्थानीय उत्पादों और खासकर handloom को एक नई ऊर्जा दी थी। इसी स्मृति में देश हर साल 7 अगस्त को 'National Handloom Day' मनाता है। इस साल 7 अगस्त को 'National Handloom Day' के 10 साल पूरे हो रहे हैं। आजादी की लड़ाई के समय जैसे हमारी खादी ने आजादी के आंदोलन को नई ताकत दी थी, वैसे ही आज जब देश, विकसित भारत बनने के लिए कदम बढ़ा रहा है, तो textile sector, देश की ताकत बन रहा है। इन 10 वर्षों में देश के अलग-अलग हिस्सों में इस sector से जुड़े लाखों लोगों ने सफलता की कई गाथाएं लिखी हैं। महाराष्ट्र के पैठण गाँव की कविता धवले पहले एक छोटे से कमरे में काम करती थीं- न जगह थी और न ही सुविधा। सरकार से मदद मिली, अब उनका हुनर उड़ान भर रहा है। वो तीन गुणा ज्यादा कमा रही हैं। खुद अपनी बनाई पैठणी साड़ियां बेच रही हैं। उड़ीसा के मयूरभंज में भी सफलता की ऐसी ही कहानी है। यहाँ 650 से ज्यादा आदिवासी महिलाओं ने संथाली साड़ी को फिर से जीवित किया है। अब ये महिलाएं हर महीने हजारों रुपये कमा रही हैं। ये सिर्फ कपड़ा नहीं बना रही, अपनी पहचान गढ़ रही हैं। बिहार के नालंदा से नवीन कुमार की उपलब्धि भी प्रेरणादायक है। उनका परिवार पीढ़ियों से इस काम से जुड़ा है। लेकिन सबसे अच्छी बात ये कि उनके परिवार ने अब इस field में आधुनिकता का भी समावेश किया है। अब उनके बच्चे handloom technology की पढ़ाई कर रहे हैं। बड़े brands में काम कर रहे हैं। ये बदलाव सिर्फ एक परिवार का नहीं है, ये आसपास के अनेक परिवारों को आगे बढ़ा रहा है।

Textile भारत का सिर्फ एक sector नहीं

है। ये हमारी सांस्कृतिक विविधता की मिसाल है। आज textile और apparel market बहुत तेजी से बढ़ रहा है, और इस विकास की सबसे सुंदर बात यह है की गावों की महिलाएं, शहरों के designer, बुजुर्ग बुनकर और Start-Up शुरू करने वाले हमारे युवा सब मिलकर इसे आगे बढ़ा रहे हैं। आज भारत में 3000 से ज्यादा Textile Start-Up सक्रिय हैं। कई Start-Ups ने भारत की handloom पहचान को global height दी है। 2047 के विकसित भारत का रास्ता आत्मनिर्भरता से होकर गुजरता है और आत्मनिर्भर भारत का सबसे बड़ा आधार है - 'Vocal for Local'। जो चीजें भारत में बनी हों, जिसे बनाने में किसी भारतीय का पसीना बहा हो, वही खरीदें और वही बेचें। ये हमारा संकल्प होना चाहिए।

भारत की विविधता की सबसे खूबसूरत झलक हमारे लोकगीतों और परंपराओं में मिलती है और इसी का हिस्सा होता हैं, हमारे भजन और हमारे कीर्तन। लेकिन क्या आपने कभी सुना है कि कीर्तन के जरिए Forest Fire के प्रति लोगों को जागरूक किया जाए? शायद आपको विश्वास न हो, लेकिन ओडिशा के क्योंझर जिले में एक अदभुत कार्य हो रहा है। यहाँ, राधाकृष्ण संकीर्तन मंडली नाम की एक टोली है। भक्ति के साथ-साथ, ये टोली, आज, पर्यावरण संरक्षण का भी मंत्र जप रही है। इस पहल की प्रेरणा हैं- प्रमिला प्रधान जी। जंगल और पर्यावरण की रक्षा के लिए उन्होंने पारंपरिक गीतों में नए बोल जोड़े, नए संदेश जोड़े। उनकी टोली गांव-गांव गई। गीतों के माध्यम से लोगों को समझाया कि जंगल में लगने वाली आग से कितना नुकसान होता है। ये उदाहरण हमें याद दिलाता है कि हमारी लोक परंपराएँ कोई बीते युग की चीज नहीं है, इनमें आज भी समाज को दिशा देने की शक्ति है।

भारत की संस्कृति का बहुत बड़ा आधार हमारे त्योहार और परम्पराएं है, लेकिन हमारी संस्कृति की जीवंतता का एक और पक्ष है- ये पक्ष है अपने वर्तमान और अपने इतिहास को Document करते रहना। हमारी असली ताकत वो ज्ञान है, जिसे सदियों से पांडुलिपियां (Manuscripts)) के रूप में सहेजा गया है। इन पांडुलिपियों में विज्ञान है, चिकित्सा की पद्धतियाँ हैं, संगीत है, दर्शन है, और सबसे बड़ी बात वो सोच है, जो, मानवता के भविष्य को उज्ज्वल बना सकती हैं। ऐसे असाधारण ज्ञान को, इस विरासत को सहेजना हम सबकी जिम्मेदारी है। हमारे देश में हर कालखंड में कुछ ऐसे लोग हुए हैं जिन्होंने इसे अपनी साधना बना लिया। ऐसे ही एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व हैं - मणि मारन जी, जो तमिलनाडु के तंजावुर से हैं। उन्हें लगा कि

अगर आज की पीढ़ी तमिल पांडुलिपियाँ पढ़ना नहीं सीखेगी, तो आने वाले समय में ये अनमोल धरोहर खो जाएगी। इसलिए उन्होंने शाम को कक्षाएँ शुरू की। जहां छात्र, नौकरीपेशा, युवा, Researcher, सब यहाँ आकर के सीखने लगे। मणि मारण जी ने लोगों को सिखाया कि ''Tamil Suvadiyiyal'' यानि Palm Leaf Manuscripts को पढ़ने और समझने की विधि क्या होती है। आज अनेकों प्रयासों से कई छात्र इस विधा में पारंगत हो चुके हैं। कुछ Students ने तो इन पांडुलिपियों के आधार पर Traditional Medicine System पर Research भी शुरू कर दी है। सोचिए अगर ऐसा प्रयास देशभर में हो तो हमारा पुरातन ज्ञान केवल दीवारों में बंद नहीं रहेगा, वो, नई पीढ़ी की चेतना का हिस्सा बन जाएगा। इसी सोच से प्रेरित होकर, भारत सरकार ने इस वर्ष के बजट में एक ऐतिहासिक पहल की घोषणा की है 'ज्ञान भारतम् मिशन'। इस मिशन के तहत प्राचीन पांडुलिपियों को Digitize किया जाएगा। फिर एक National Digital Repository बनाई जाएगी, जहां दुनियाभर के विद्यार्थी, शोधकर्ता, भारत की ज्ञान परंपरा से जुड़ सकेंगे। मेरा भी आप सबसे आग्रह है अगर आप किसी ऐसे प्रयास से जुड़े हैं, या जुड़ना चाहते हैं, तो MyGov या संस्कृति मंत्रालय से जरूर संपर्क कीजिएगा, क्योंकि, यह केवल पांडुलिपियाँ नहीं है, यह भारत की आत्मा के वो अध्याय हैं, जिन्हें हमें आने वाली पीढ़ियों को पढ़ाना है।

अगर आपसे पूछा जाए कि आपके आस-पास कितनी तरह के पक्षी हैं, चिड़िया हैं- तो आप क्या कहेंगे? शायद यही कि मुझे तो रोज 5-6 पक्षी दिख ही जाते हैं या चिड़िया दिख ही जाती हैं- कुछ जानी-पहचानी होती हैं, कोई अनजानी। लेकिन, ये जानना बहुत दिलचस्प होता है कि हमारे आस-पास पक्षियों की कौन-कौन सी प्रजातियां रहती हैं। हाल ही में एक ऐसा ही शानदार प्रयास हुआ है, जगह है- असम का Kaziranga National Park. वैसे तो ये इलाका अपने Rhinos (गैंडों) के लिए मशहूर है- लेकिन इस बार चर्चा का विषय बना है, यहां के घास के मैदान और उनमें रहने वाली चिड़िया। यहां पहली बार Grassland Bird Census हुआ है। आप जानकर खुश होंगे इस Census की वजह से पक्षियों की 40 से ज्यादा प्रजातियों की पहचान हुई है। इनमें कई दुर्लभ पक्षी शामिल हैं। आप सोच रहे होंगे इतने पक्षी कैसे पहचान में आए! इसमें technology ने कमाल किया। Census करने वाली टीम ने आवाज record करने वाले यंत्र लगाए। फिर computer से उन आवाजों का विश्लेषण किया, AI का उपयोग किया। सिर्फ आवाजों से ही पक्षियों की पहचान हो गई-वो भी बिना उन्हें disturb किए। सोचिए! technology और संवेदनशीलता जब एक साथ आते हैं, तो प्रकृति को समझना कितना आसान और गहरा हो जाता है। हमें ऐसे प्रयासों को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि हम, अपनी जैव विविधता को पहचान सकें और अगली पीढ़ी को भी इससे जोड़ सकें ।

कभी-कभी सबसे बड़ा उजाला वहीं से फूटता है, जहाँ अंधेरे ने सबसे ज्यादा डेरा जमाया हो। ऐसा ही एक उदाहरण है झारखंड के गुमला जिले का। एक समय था, जब ये इलाका माओवादी हिंसा के लिए जाना जाता था। बासिया ब्लॉक के गांव वीरान हो रहे थे। लोग डर के साये में जीते थे। रोजगार की कोई संभावना नजर नहीं आती थी, जमीनें खाली पड़ी थी और नौजवान पलायन कर रहे थे, लेकिन फिर, बदलाव की एक बहुत ही शांत और धैर्य से भरी हुई शुरुआत हुई। ओमप्रकाश साहू जी नाम के एक युवक ने हिंसा का रास्ता छोड़ दिया। उन्होंने मछली पालन शुरू किया। फिर अपने जैसे कई साथियों को भी

इसके लिए प्रेरित किया। उनके इस प्रयास का असर भी हुआ। जो पहले बंदूक थामे हुए थे, अब मछली पकड़ने वाला जाल थाम चुके है।

ओमप्रकाश साहू जी की शुरुआत आसान नहीं थी। विरोध हुआ, धमकियां मिलीं, लेकिन हौंसला नहीं टूटा। जब 'प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना' आई तो उन्हें नई ताकत मिली। सरकार से training मिली, तालाब बनाने में मदद मिली और देखते-देखते, गुमला में, मत्स्य क्रांति का सूत्रपात हो गया। आज बासिया ब्लॉक के 150 से ज्यादा परिवार मछली पालन से जुड़ चुके हैं। कई तो ऐसे लोग हैं जो कभी नक्सली संगठन में थे, अब वे गांव में ही, सम्मान से जीवन जी रहे हैं और दूसरों को रोजगार दे रहे हैं। गुमला की यह यात्रा हमें सिखाती है - अगर रास्ता सही हो और मन में भरोसा हो तो सबसे कठिन परिस्थितियों में भी विकास का दीप जल सकता है।

क्या आप जानते हैं Olympics के बाद सबसे बड़ा खेल आयोजन कौन सा होता है? इसका उत्तर है - 'World Police and Fire Games'. दुनिया-भर के पुलिसकर्मी, fire fighters, security से जुड़े लोग उनके बीच होने वाला sports tournament. इस बार ये tournament अमेरिका में हुआ और इसमें भारत ने इतिहास रच दिया। भारत ने करीब-करीब 600 मेडल जीते। 71 देशों में हम top-three में पहुंचे। उन वर्दीधारियों की मेहनत रंग लाई जो दिन-रात देश के लिए खड़े रहते हैं। हमारे ये साथी अब खेल के मैदान में भी झंडा बुलंद कर रहे है। मैं सभी खिलाड़ियों और coaching team को बधाई देता हूँ। वैसे आपके लिए ये भी जानना दिलचस्प होगा कि 2029 में ये games भारत में होंगे। दुनिया-भर से खिलाड़ी हमारे देश आएंगे। हम उन्हें भारत की मेहमान-नवाजी दिखाएंगे, अपनी खेल संस्कृति से परिचय कराएंगे।

बीते दिनों, मुझे, कई young athletes और उनके parents के संदेश मिले हैं। इनमें 'खेलो भारत नीति 2025' की खूब सराहना की गई है। इस नीति का लक्ष्य साफ है - भारत को sporting super power बनाना। गाँव, गरीब और बेटियाँ इस नीति की प्राथमिकता है। school और college, अब खेल को, रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा बनाएंगे। खेलों से जुड़े startups, चाहे वो sports managements हों या manufacturing से जुड़े हों - उनकी हर तरह से मदद की जाएगी। सोचिए, जब देश का युवा खुद के बनाए racket, bat और ball के साथ खेलेगा, तो आत्मनिर्भरता के मिशन को कितनी बड़ी ताकत मिलेगी। खेल, team spirit पैदा करते है। ये fitness, आत्मविश्वास और एक मजबूत भारत के निर्माण का रास्ता है। इसलिए खूब खेलिए, खूब खिलिए।

कुछ लोगों को कभी-कभी कोई काम नामुमकिन सा लगता है। लगता है, क्या ये भी हो पाएगा? लेकिन, जब देश एक सोच पर एक साथ आ जाए, तो असंभव भी संभव हो जाता है। 'स्वच्छ भारत मिशन' इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। जल्द ही इस मिशन को 11 साल पूरे होंगे। लेकिन, इसकी ताकत और इसकी जरूरत आज भी वैसी ही है। इन 11 वर्षों में 'स्वच्छ भारत मिशन' एक जन-आंदोलन बना है। लोग इसे अपना फर्ज मानते हैं और यही तो असली जन-भागीदारी है।

हर साल होने वाले स्वच्छ सर्वेक्षण ने इस भावना को और बढ़ाया है। इस साल देश के 4500 से ज्यादा शहर और कस्बे इससे जुड़े। 15 करोड़ से अधिक लोगों ने इसमें भाग लिया। ये कोई सामान्य संख्या नहीं है। ये स्वच्छ भारत की आवाज है।

स्वच्छता को लेकर हमारे शहर और कस्बे अपनी जरूरतों और माहौल के हिसाब से अलग-अलग तरीकों से काम कर रहे हैं। और इनका असर सिर्फ इन शहरों तक नहीं है, पूरा देश इन तरीकों को अपना रहा है। उत्तराखंड में कीर्तिनगर के लोग, पहाड़ों में waste management की नई मिसाल कायम कर रहे हैं। ऐसे ही मेंगलुरु में technology से organic waste management का काम हो रहा है। अरुणाचल में एक छोटा सा शहर रोइंग है। एक समय था जब यहाँ लोगों के स्वास्थ्य के सामने waste management बहुत बड़ा challenge था। यहाँ के लोगों ने इसकी जिम्मेदारी ली। 'Green Roing Initiative' शुरू हुआ और फिर recycled waste से पूरा एक पार्क बना दिया गया। ऐसे ही कराड़ में, विजयवाड़ा में, water management के कई नए उदाहरण बने हैं। अहमदाबाद में River Front पर सफाई ने भी सबका ध्यान खींचा है।

भोपाल की एक team का नाम है 'सकारात्मक सोच'। इसमें 200 महिलायें हैं। ये सिर्फ सफाई नहीं करती, सोच भी बदलती हैं। एक साथ मिलकर शहर के 17 पार्कों की सफाई करना, कपड़े के थैले बांटना, इनका हर कदम एक संदेश है। ऐसे प्रयासों की वजह से ही भोपाल भी अब स्वच्छ सर्वेक्षण में काफी आगे आ गया है। लखनऊ की गोमती नदी team का जिक्र भी जरूरी है। 10 साल से हर रविवार, बिना थके, बिना रुके इस team के लोग स्वच्छता के काम में जुटे हैं। छत्तीसगढ़ के बिल्हा का उदाहरण भी शानदार है। यहां महिलाओं को waste management की training दी गई, और उन्होंने मिलकर, शहर की तस्वीर बदल डाली। गोवा के पणजी शहर का उदाहरण भी प्रेरक है। वहां कचरे को 16 category में बांटा जाता है और इसका नेतृत्व भी महिलाएं कर रही हैं। पणजी को तो राष्ट्रपति पुरुस्कार भी मिला है। स्वच्छता सिर्फ एक वक्त का, एक दिन का काम नहीं है। जब हम साल में हर दिन, हर पल स्वच्छता को प्राथमिकता देंगें तभी देश स्वच्छ रह पाएगा।

सावन की फुहारों के बीच, देश एक बार फिर त्योहारों की रौनक से सजने जा रहा है। हरियाली तीज है, फिर नाग पंचमी और रक्षा-बंधन, फिर जन्माष्टमी हमारे नटखट कान्हा के जन्म का उत्सव। ये सभी पर्व यहां हमारी भावनाओं से जुड़े हैं, ये हमें प्रकृति से जुड़ाव और संतुलन का भी संदेश देते हैं। सभी को इन पावन पर्वों की ढेर सारी शुभकामनाएं। ▪

वीरांगना रानी अवंती बाई

रानी अवंतीबाई लोधी भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली वीरांगना थीं। 1857 की क्रांति में रामगढ़ की रानी अवंतीबाई लोधी रेवांचल में मुक्ति आंदोलन की सूत्रधार थीं। ये लोधी समाज की महावीरांगना थीं।

रानी अवंतीबाई लोधी भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली वीरांगना थीं। 1857 की क्रांति में रामगढ़ की रानी अवंतीबाई लोधी रेवांचल में मुक्ति आंदोलन की सूत्रधार थीं। ये लोधी समाज की महावीरांगना थीं। 1857 के मुक्ति आंदोलन में इस राज्य की अहम भूमिका थी, जिससे इतिहास जगत अनभिज्ञ है। 1817 से 1851 तक रामगढ़ राज्य के शासक लक्ष्मण सिंह थे। उनके निधन के बाद राजकुमार विक्रमादित्य सिंह ने राजगद्दी संभाली। उनका विवाह बाल्यावस्था में ही मनकेहणी के जमींदार राव जुझार सिंह की कन्या अवंती बाई से हुआ। विक्रमादित्य सिंह बचपन से ही वीतरागी प्रवृत्ति के थे और पूजा-पाठ एवं धार्मिक अनुष्ठानों में लगे रहते। अतः राज्य संचालन का काम उनकी पत्नी रानी अवंतीबाई ही करती रहीं। उनके दो पुत्र हुए, अमान सिंह और शेर सिंह। अंग्रेजों ने तब तक भारत के अनेक भागों में अपने पैर जमा लिए थे।

रामगढ़ के राजा विक्रमाजीत सिंह को विक्षिप्त तथा अमान सिंह और शेर सिंह को नाबालिग घोषित कर रामगढ़ राज्य को हड़पने की दृष्टि से अंग्रेज शासकों ने 'कोर्ट ऑफ वार्ड्स' की कार्यवाही की एवं राज्य के प्रशासन के लिए सरबराहकार नियुक्त कर शेख मोहम्मद तथा मोहम्मद अब्दुल्ला को रामगढ़ भेजा। जिससे रामगढ़ रियासत 'कोर्ट ऑफ वार्ड्स' के कब्जे में चली गयी। अंग्रेज शासकों की इस हड़प नीति का परिणाम भी रानी जानती थी, फिर भी दोनों सरबराहकारों को उन्होंने रामगढ़ से बाहर निकाल दिया। 1855 ई. में राजा विक्रमादित्य सिंह की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गयी। अब नाबालिग पुत्रों की संरक्षिका के रूप में राज्य शक्ति रानी के हाथों आ गयी। रानी ने राज्य के कृषकों को अंग्रेजों के निर्देशों को न मानने का आदेश दिया, इस सुधार कार्य से रानी की लोकप्रियता बढ़ी।

1857 ईस्वी में सागर एवं नर्मदा परिक्षेत्र के निर्माण के साथ अंग्रेजों की शक्ति में वृद्धि हुई। अब अंग्रेजों को रोक पाना किसी एक राजा या तालुकेदार के वश का नहीं रहा। रानी ने राज्य के आस-पास के राजाओं, परगनादारों, जमींदारों और बड़े मालगुजारों का विशाल सम्मेलन रामगढ़ में आयोजित किया, जिसकी अध्यक्षता गढ़ पुरवा के राजा शंकरशाह ने की। गुप्त सम्मेलन में लिए गए निर्णय के अनुसार प्रचार का दायित्व रानी पर था। एक पत्र और दो काली चूड़ियों की एक पुड़िया बनाकर प्रसाद के रूप में वितरित करना। पत्र में लिखा गया, 'अंग्रेजों से संघर्ष के लिए तैयार रहो या चूड़ियों पहनकर घर में बैठो।' पत्र सौहार्द और एकजुटता का प्रतीक था तो चूड़ियां पुरुषार्थ जागृत करने का सशक्त माध्यम बनी। पुड़िया लेने का अर्थ था अंग्रेजों के विरुद्ध क्रांति में अपना समर्थन देना।

देश के कुछ क्षेत्रों में क्रांति का शुभारंभ हो चुका था। 1857 में 52वीं देशी पैदल सेना जबलपुर सैनिक केन्द्र की सबसे बड़ी शक्ति थी। 18 जून को इस सेना के एक सिपाही ने अंग्रेजी सेना के एक अधिकारी पर घातक हमला किया। जुलाई 1857 में मण्डला के परगनादार उमराव सिंह ठाकुर ने कर देने से इनकार कर दिया और इस बात का प्रचार करने लगा कि अंग्रेजों का राज्य समाप्त हो गया। अंग्रेज, विद्रोहियों को डाकू और लुटेरे कहते थे। मण्डला के डिप्टी कमिश्नर वाडिंग्टन ने मेजर इस्काइन से सेना की मांग की। पूरे महाकौशल क्षेत्र में विद्रोहियों की हलचलें बढ़ गईं। गुप्त सभाएं और प्रसाद की पुड़ियों का वितरण चलता रहा। इस बीच राजा शंकरशाह और राजकुमार रघुनाथ शाह को दिए गए मृत्युदण्ड से अंग्रेजों की नृशंसता की व्यापक प्रतिक्रिया हुई। वे इस क्षेत्र के राज्यवंश के प्रतीक थे। इसकी प्रथम प्रतिक्रिया रामगढ़ में हुई। रामगढ़ के सेनापति ने भुआ बिछिया थाना में चढ़ाई कर दी। जिससे थाने के सिपाही थाना छोड़कर भाग गए और विद्रोहियों ने थाने पर अधिकार कर लिया। रानी के सिपाहियों ने घुघरी पर चढ़ाई कर उस पर अपना अधिकार कर लिया और वहां के तालुकेदार धन सिंह की सुरक्षा के लिए उमराव सिंह को जिम्मेदारी सौंपी।

मण्डला नगर को छोड़कर पूरा जिला स्वतंत्र हो चुका था। अवंतीबाई लोधी ने मण्डला विजय के लिए सिपाहियों सहित प्रस्थान किया। रानी की सूचना प्राप्त होने पर शहपुरा और मुकास के जमींदार भी मण्डला की और रवाना हुए। मण्डला पहुंचने के पूर्व खड़देवरा के सिपाही भी रानी के सिपाहियों से मिल गए। खैरी के पास अंग्रेज सिपाहियों के साथ अवंती बाई का युद्ध हुआ। वाडिंग्टन पूरी शक्ति लगाने के बाद भी कुछ न कर सका और मण्डला छोड़ सिवनी की ओर भाग गया। इस प्रकार पूरा मण्डला जिला एवं रामगढ़ राज्य स्वतंत्र हो गया।

अंग्रेजी सेनाएं रामगढ़ विजय के बाद देवहारगढ़ की ओर रवाना हुईं। यहां रानी की सहायता के लिए शहपुरा एवं शाहपुर के जमींदार भी पहुंच चुके थे। देवहारगढ़ को अंग्रेज सैनिकों ने चारों ओर से घेर लिया। क्रांतिकारियों और अंग्रेजी सेना के मध्य निर्णायक युद्ध प्रारंभ हुआ। कई दिनों तक दोनों के मध्य युद्ध चलता रहा। रानी भी घायल हो चुकी थी। सैनिकों की संख्या कम होती जा रही थी। आगे युद्ध करना और स्वयं को सुरक्षित रखना कठिन हो गया। 20 मार्च 1858 रानी ने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए गिरधारी नाई की कटार छीनकर घुनसी नाले के निकट आत्मोत्सर्ग कर दिया। रानी का बलिदान हो गया, फिर भी मुक्ति आंदोलन में ठहराव नहीं आया। यह क्रांति मात्र रामगढ़ की रानी अवंतीबाई की नहीं थी, अपितु संपूर्ण क्षेत्र की थी, क्षेत्र की प्रजा की थी। ▪

नारी शक्ति की प्रतीक हैं देवी अहिल्या

देवी अहिल्या बाई रणनीति के साथ कूटनीति में भी चतुर थी, उन्होंने राघोबा को जो पत्र लिखा, वह इस प्रकार है: तुम मेरा राज्य छीनने की बड़ी भूल कर रहे हो। तुमने मुझे अबला समझा है, परन्तु शायद तुम्हे यह नहीं मालूम की मैं कैसी अबला हूँ? ये तो तुम्हें रणभूमि में ही पता चलेगा।

देवी अहिल्या बाई होल्कर को लोकमाता के स्वरूप में मालवा क्षेत्र की जनता नमन करती थी। चाहे उस समय अर्थात सन् १७०० में लोकतांत्रिक पद्धति नहीं थी, लेकिन राजधर्म के अनुसार शासन संचालन देवी अहिल्या बाई ने किया। उनका जीवन धर्म संस्कृति के लिए था। वे जनता का, जनता के द्वारा और जनता के लिए शासन चलाती थी। वे शक्ति की भी प्रतीक थी। राघोबा जो पेशवा के सूबेदार थे। उन्होंने होल्कर राज्य हड़पने की साजिश रची।

वे सेना लेकर मालवा में आये और उन्होंने होल्कर राज्य का शासन सम्हालने का ऐलान करवा दिया। राज्य की जनता देवी अहिल्या बाई को चाहती थी। अहिल्या बाई ने मुकाबले के लिए सैनिक तैयारी प्रारंभ कर दी। उनकी अपनी महिला सेना थी। भोंसले और गायकवाड़ की सेना भी देवी अहिल्या की सहायता के लिए आ गई। क्षिप्रा के उस पार राघोबा की सेना ने डेरा डाल रखा था।

देवी अहिल्या बाई रणनीति के साथ कूटनीति में भी चतुर थी, उन्होंने राघोबा को जो पत्र लिखा, वह इस प्रकार है, तुम मेरा राज्य छीनने की बड़ी भूल कर रहे हो। तुमने मुझे अबला समझा है, परन्तु शायद तुम्हें यह नहीं मालूम की मैं कैसी अबला हूँ? ये तो तुम्हें रणभूमि में ही पता चलेगा। मैं तुमसे रणभूमि में भेंट करने आ रही हूं। तुम्हारी मर्दानगी का मुकाबला अपने वीर जांबाजों से नहीं कराऊंगी, तुम्हारे लिए मेरी महिला सेना ही काफी है। यदि आप हमारी महिला सेना से हार गये तो कहीं मुंह दिखाने लायक नहीं रहोगे। यदि मैं हार गई तो कोई मेरी हंसी नहीं उड़ायेगा। सभी आप पर ही थू-थू करेंगे। फिर तुम्हारे सिर पर ऐसा कलंक का टीका लगेगा, जिसे तुम कभी नहीं भुला पाओगे। सोच समझकर ही लड़ाई का निर्णय लेना, राघोबा। इसके बाद राघोबा ने लड़ाई का विचार छोड़कर देवी अहिल्या को बेटी कहना शुरू किया और वे इंदौर में होल्कर राज्य के मेहमान बनकर कुछ दिन रहे।

देवी अहिल्या परंपरा, धर्म को मानने वाली दयालू महिला थी, उन्होंने मंदिर, घाट, धर्मशाला आदि प्रायः सभी तीर्थों में निर्माण कराये। रामेश्वरम, काशी, सोमनाथ आदि तीर्थों में देवी अहिल्या के द्वारा निर्मित घाट, मंदिर, धर्मशाला स्थित है। उन्होंने इन धार्मिक कार्यों के लिए 'रवासगी' ट्रस्ट बनाया। रामराज्य, धर्मराज्य और स्वर्णयुग की तुलना देवी अहिल्या के प्रशासन से की जाती है। पहले होल्कर राज्य की राजधानी नर्मदा तट पर स्थित महेश्वर में रही। देवी अहिल्या ने इंदौर में भी प्रशासन चलाया। राजवाड़ा, छत्रियां देवी अहिल्या की स्मृति ताजी करती है। मध्यप्रदेश का सबसे बड़ा शहर इंदौर को देवी अहिल्या की नगरी के नाम से जाना जाता है। इंदौर हर वर्ष अहिल्या उत्सव मनाता है। ▪

क्रांतिवीर मदनलाल ढींगरा

लंदन में ढींगरा भारत के प्रख्यात राष्ट्रवादी विनायक दामोदर सावरकर एवं श्यामजी कृष्ण वर्मा के संपर्क में आए। वे लोग ढींगरा की प्रचण्ड देशभक्ति से बहुत प्रभावित हुए। मदनलाल उच्च शिक्षण हेतु लंदन में रहते थे। उस समय सावरकरजी भी वहीं पर थे, उस समय सावरकर जी को एक भोजन प्रसंग में रंगभेद का अनुभव हुआ।

उन्हें अंग्रेजों द्वारा उनके साथ न बैठ अलग टेबल पर बैठने को कहा गया। ज्वलंत देशाभिमान और अत्यंत स्वाभिमानी सावरकरजी को यह बात सहन नहीं हुई और वह वहां से बाहर चले गए।

मदनलाल ढींगरा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारी सेनानी थे। वे इंग्लैण्ड में अध्ययन कर रहे थे। जहां उन्होने कर्जन वायली नामक एक ब्रिटिश अधिकारी की गोली मारकर हत्या कर दी थी। यह घटना बीसवीं शताब्दी में भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की कुछेक प्रथम घटनाओं में से एक है। मदललाल ढींगरा का जन्म सन् 1883 में पंजाब में एक संपन्न हिंदू परिवार में हुआ था। उनके पिता सिविल सर्जन थे और अंग्रेजी रंग में पूरे रंगे हुए थे, परंतु माताजी अत्यन्त धार्मिक एवं भारतीय संस्कारों से परिपूर्ण महिला थीं। उनका परिवार अंग्रेजों का विश्वास पात्र था। जब मदनलाल को भारतीय स्वतंत्रता संबंधी क्रान्ति के आरोप में लाहौर के एक विद्यालय से निकाल दिया गया, तो परिवार ने मदनलाल से नाता तोड़ लिया। मदनलाल को एक क्लर्क रूप में, एक तांगा-चालक के रूप में और एक कारखाने में श्रमिक के रूप में काम करना पड़ा। वहां उन्होंने एक यूनियन (संघ) बनाने का प्रयास किया, परंतु वहां से भी उन्हें निकाल दिया गया। कुछ दिन उन्होंने मुम्बई में भी काम किया। अपने बड़े भाई से विचार विमर्श कर वे सन् 1906 में उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड गये जहां युनिवर्सिटी कालेज लंदन में यांत्रिक प्रौद्योगिकी (Mechanical Engineering) में प्रवेश लिया । इसके लिए उन्हें उनके बड़े भाई एवं इंग्लैंड के कुछ राष्ट्रवादी कार्यकर्ताओं से आर्थिक सहायता मिली। लंदन में ढींगरा भारत के प्रख्यात राष्ट्रवादी विनायक दामोदर सावरकर एवं श्यामजी कृष्ण वर्मा के संपर्क में आए। वे लोग ढींगरा की प्रचण्ड देशभक्ति से बहुत प्रभावित हुए। मदनलाल उच्च शिक्षण हेतु लंदन में रहते थे। उस समय सावरकरजी भी वहीं पर थे, उस समय सावरकर जी को एक भोजन प्रसंग में रंगभेद का अनुभव हुआ। उन्हें अंग्रेजों द्वारा उनके साथ न बैठ अलग टेबल पर बैठने को कहा गया। ज्वलंत देशाभिमान और अत्यंत स्वाभिमानी सावरकरजी को यह बात सहन नहीं हुई और वह वहां से बाहर चले गए। उस समय मदनलाल और उनका एक दोस्त वहां उपस्थित था। मदनलाल जी ने सावरकरजी को समझाने का प्रयत्न किया कि इस प्रकार के वर्तन की उन्हें आदत डालनी होगी। मदनलाल और सावरकर, यह इनकी प्रथम भेंट थी। भारत को स्वतंत्रता मिलने के लिए देशभक्तों ने अनेक मार्ग ढूंढ़े। अंग्रेजों पर दबाव बनाने के लिए क्रांतिकारी मार्ग से देशभक्तों ने टक्कर देने हेतु राष्ट्ररक्षा एवं ब्रिटिशों से मुक्तता के लिए क्रांतिकारी संगठनों का उदय हुआ। ऐसा विश्वास किया जाता है कि सावरकर ने ही मदनलाल को अभिनव भारत मंडल का सदस्य बनवाया और हथियार चलाने का प्रशिक्षण दिया। मदनलाल, इण्डिया हाउस के भी सदस्य थे, जो भारतीय विद्यार्थियों के राजनैतिक क्रियाकलापों का केंद्र था। ये लोग उस समय खुदीराम बोस, कन्नाई दत्त, सतिन्दर पाल और कांशी राम जैसे क्रान्तिकारियों को मृत्युदण्ड दिये जाने से बहुत क्रोधित थे । भारतीयों के लिए मातृभूमि को देने के लिए क्या है, तो वह स्वयं का रक्त ही है, ऐसा ढींगराजी का मानना था । मदनलालजी के विचार अत्यंत स्पष्ट थे और वह उतने ही स्पष्टता से व्यक्त किया करते थे, वे विदेशी शस्त्रास्त्रों की सहायता से दास्यता में जकड़े हुए राष्ट्र को बचाने के लिए निःशस्त्र होकर रणभूमि में उतरकर सामना करना कठिन होने के कारण उन्होंने घात लगाकर हमला किया। 01 जुलाई सन् 1909 में लंदन के नेशनल इंडियन असोसिएशन के वार्षिकोत्सव में कर्जन आने वाला है, इस गोपनीय समाचार की जानकारी मदनलाल को हुई।

01 जुलाई सन् 1909 की शाम को इण्डियन नेशनल एसोशिएशन के वार्षिकोत्सव में भाग लेने के लिए भारी संख्या में भारतीय और अंग्रेज एकत्रित हुए। जब कर्जन वायली (भारत मामलों के सेक्रेटरी आफ स्टेट के राजनीतिक सलाहकार) अपनी पत्नी के साथ सभाग्रह में घुसे, ढींगरा ने उनके चेहरे पर पांच गोलियां दागी, इसमें से चार सही निशाने पर लगीं। ढींगरा ने अपनी पिस्तौल से अपनी हत्या करनी चाही, परंतु उन्हें पकड़ लिया गया। 23 जुलाई को ढींगरा के प्रकरण की सुनवाई पुराने बेली कोर्ट में हुई। उनको मृत्युदण्ड दिया गया और 17 अगस्त सन 1909 को फांसी दे दी गयी। ▪

खुदीराम बोस

''फाँसी के विचार से मुझे जरा भी दुःख नहीं है। मेरा एक ही दुःख है कि किंग्जफोर्ड को उसके अपराध का दण्ड नहीं मिला।''

ब्रिटिश शासन को भारत से उखाड़ने के लिए अंग्रेजों पर पहला बम फेंकने वाले क्रान्तिकारी खुदीराम बोस का जन्म 3 दिसम्बर, 1989 को मेदिनीपुर जिले के बहुबेनी ग्राम में हुआ। मेदिनीपुर बंगाल का एक जिला था। इनके पिता का नाम त्रैलोक्यनाथ वसु था तथा माता का नाम था श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवी। पिता नदझोल तहसील के तहसीलदार थे। इकलौते पुत्र होने के कारण खुदीराम बोस माता-पिता के लाड़ले बेटे थे पर 6 वर्ष की अवस्था में ही उन्हें माता-पिता का विछोह सहना पड़ा। उनका पालन पोषण बड़ी बहन अनुरूपा देवी ने माँ की तरह किया। उनके जीजा अमृतलाल जी भी उनको बहुत प्यार करते थे।

देशभक्ति का भाव बालक खुदीराम में बाल्यावस्था से ही जागृत हो गया था। गोरे, लाल मुँह वाले अंग्रेजों का भारत पर शासन करना उन्हें बिल्कुल भी नहीं सुहाता था।

'आनन्दमठ' उपन्यास के रचयिता बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय मेदिनीपुर में ही शासकीय सेवा में थे। इस उपन्यास का गीत 'वन्दे मातरम्' बड़ा लोकप्रिय हुआ। भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों को इस गीत से बड़ी प्रेरणा मिलती थी। आज भी यह राष्ट्रगीत के रूप में प्रत्येक राष्ट्रीय समारोह एवं विद्यालयों में गाया जाता है। यह वन्देमातरम् का गीत ही बालक खुदीराम का प्रेरणा स्त्रोत बना।

1905 में गवर्नर जनरल लार्ड कर्जन ने भारतीयों का मनोबल गिराने के लिए बंगाल का विभाजन किया। इस विभाजन का पूरे राष्ट्र ने एक स्वर से विरोध किया। आनन्दमठ उपन्यास से प्रेरित होकर खुदीराम बोस ने भी अपने जीवन को देश की सेवा के लिए न्यौछावर करने का संकल्प लिया। अतः वे क्रान्तिकारियों के दल में सम्मिलित हो गए। इसके लिए उन्हें अनेक कठिन परीक्षाओं से गुजरना पड़ा।

क्रान्तिकारियों के साथ खुदीराम ने पिस्तौल आदि अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग करना सीखा। उन्होंने वन्दे मातरम् गाने तथा आनन्दमठ पढ़ने के लिए अपने साथियों को भी उत्साहित किया।

अंग्रेजों ने वन्दे मातरम् के बढ़ते प्रभाव को देखकर, वन्दे मातरम् कहने को राजद्रोह घोषित कर दिया। खुदीराम ने अंग्रेजों को नीचा दिखाने के लिए मेदिनीपुर की प्रदर्शनी में वन्दे मातरम् के पर्चे बांटे तथा नारे लगाए। यह प्रदर्शनी फरवरी 1906 में आयोजित की गई थी। पुलिस वालों ने उन्हें पकड़ना चाहा पर वे असफल रहे। बाद में उन पर एक मुकदमा चलाया गया पर छोटी उम्र होने के कारण न्यायालय ने उन्हें कोई सजा नहीं दी।

देशभक्त विपिन चन्द्र पाल ने 'वन्दे मातरम्' पत्रिका का प्रकाशन किया। श्री अरविन्द घोष इसके संपादक नियुक्त हुए। 1907 में अंग्रेज सरकार ने वन्देमातरम् पत्रिका पर राजद्रोह का अभियोग लगाया। भारतीय युवकों ने इसका प्रबल विरोध किया। 26 अगस्त 1907 के दिन हजारों युवक कोर्ट के सामने इस अभियोग का विरोध प्रकट कर रहे थे। इस पर क्रुद्ध होकर अंग्रेज सिपाही एक युवक को अकारण पीटने लगे। 15 वर्षीय सुशील कुमार सेन ने जब इसका विरोध किया तो अंग्रेज अधिकारी उसको डाँटने लगा। बस तब क्या था। सुशील कुमार ने अंग्रेज अधिकारी की नाक पर घूँसा मारा और उन्हें न्यायाधीश किंग्जफोर्ड ने 15 कोड़े मारने की सजा दी।

क्रान्तिकारी दल ने किंग्जफोर्ड से बदला लेने का निश्चय किया। 1908 में उसकी हत्या की योजना बनाई गई। खुदीराम ने यह दायित्व अपने ऊपर लिया। दल प्रमुख ने खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी को पिस्तौल और कुछ पैसे देकर मुजफ्फरपुर की ओर रवाना किया। किंग्जफोर्ड उन दिनों वहीं सेशन जज के पद पर नियुक्त था। प्रफुल्ल कुमार चाकी रंगपुर ग्राम का रहने वाला था। वह खुदीराम की ही आयुवर्ग का तथा उसी के समान देशभक्त था। 30 अप्रैल 1908 की रात मुजफ्फरपुर के यूरोपियन क्लब के समीप किंग्जफोर्ड की घोड़ागाड़ी पर खुदीराम ने बम फेंका। पर किंग्जफोर्ड निशाना चूक जाने के कारण बच गया। उसके अतिथि कैनेडी की पत्नी, लड़की और नौकर मारे गए।

बम फेंककर खुदीराम 25 मील तक भागते चले गए पर आखिरकार वेनी रेलवे स्टेशन के पास लखा नामक स्थान पर पकड़े गए। प्रफुल्ल कुमार चाकी ने पुलिस द्वारा घेरे जाने पर स्वयं को पिस्तौल से गोली मारकर राष्ट्रहित में अपनी बलि दे दी। अंग्रेज सिपाही उसका सिर काटकर मुजफ्फरपुर ले गए। खुदीराम को मृत्युदण्ड देने का आदेश दिया गया। जब उनसे बयान देने को कहा गया तो उन्होंने कहा-'राजपूत वीरों की तरह मैं देश की स्वाधीनता के लिए मरना चाहता हूँ। फाँसी के विचार से मुझे जरा भी दुःख नहीं है। मेरा एक ही दुःख है कि किंग्जफोर्ड को उसके अपराध का दण्ड नहीं मिला।'

11 अगस्त 1908 को प्रातः 6 बजे खुदीराम बोस को फाँसी दी गई। मृत्यु के समय उनके हाथ में श्रीमदभगवदगीता थी और चेहरे पर बलिदानी की मोहक मुस्कान। फाँसी के समय इस वीर किशोर की आयु कुल अठारह वर्ष आठ महीने की थी।

मातृभूमि के प्रति खुदीराम का भाव था-

तुमि विद्या, तुमि धर्म, तुमि हृदय,
तुमि मर्म
त्वं हि प्राणाः शरीरे, बाहुते तुमि माँ शक्ति
हृदये तुमि माँ भक्ति, तोमारइ
प्रतिमा गड़ि,
मंदिरे मंदिरे, वन्देमातरम्। ▪

विलक्षण कानूनविद लोकमान्य तिलक

लोकमान्य तिलक के जीवन पर प्रकाश डालने के प्रयास में यह ध्यान में आता है कि उनके जीवन के विविध पहलुओं में से उनकी कानूनी लड़ाईयाँ एक महत्वपूर्ण सोपान हैं। लोकमान्य तिलक के जीवन में से यदि उनकी कानूनी लड़ाइयाँ हटा दी जाएँ तो सिर्फ उनकी कांग्रेस की गतिविधियां (जो सिर्फ कुल मिलाकर 8-10 साल की टुकड़ों-टुकड़ों में रहीं) एवं कुछ सामाजिक कार्य व पत्रकारिता ही शेष बचेंगे। जिसके कारण उनका जीवन कुछ और कम तेजस्वी लगने लगेगा।

तिलक के जीवन के लगभग 40 से ज्यादा वर्ष कानूनी लड़ाईयों के फेरे में ही रहे हैं। वे वकील के रूप में, आवेदक के रूप में, आरोपी के रूप में या कानून के शिक्षक के रूप में या इनमें से किसी भी रूप में अदालत के बाहर या अन्दर प्रस्तुत हुए हों उनका दबदबा हमेशा नक्षत्र मण्डल के राजा सूर्य की भाँति रहा है। कानूनी मामलों में तिलक के सभी रूपों का अध्ययन आज की पीढ़ी को शैक्षणिक किताबों में तो बिल्कुल पढ़ाया ही नहीं गया है।

कानून का उपयोग हथियार के रूप में

तिलक जी सन् 1880 में एल.एल.बी की परीक्षा उत्तीर्ण हुए थे। तिलक जी ने लगभग नौ वर्ष तक कानून की कक्षाएँ लगाकर विद्यार्थियों को पढ़ाया। तिलक जी ने अपने समाचार पत्र केसरी में कई लेख सिर्फ कानून के विषयों एवं उनकी पेचीदगियों पर लिखे थे। तिलक ने कानून को अपने जीवन यापन का आधार भी बनाया था।

वे एक ऐसे अनूठे राजनीतिज्ञ थे जिन्होंने न केवल 40 वर्ष से ज्यादा समय कानूनी पचड़ों में बिताया वरन् यह मानकर भी चले कि अदालत कक्ष को आजादी प्राप्ति हेतु युद्ध भूमि एवं कानून को इस हेतु हथियार बनाना चाहिए। वे अक्सर कहा करते थे कि 'अंग्रेजों को उन्हीं के एक सशक्त हथियार से परास्त करूँगा।'

तिलक के मुकदमों की विशेषताएँ

तिलक के मुकदमों में राजद्रोह के आरोप के मुकदमे ऐसे प्रकरण हैं जो कानून के इतिहास में न्यायिक प्रक्रिया को अपनी युद्धनीति के भाग के रूप में उपयोग कर राजनैतिक गति प्रदान करवाने का एकमात्र उपलब्ध दस्तावेज है। तिलक पर तीन बार राजद्रोह के मुकदमे, दो बार लम्बे समय तक चले मानहानि के मुकदमे उल्लेखनीय हैं।

इसके अलावा उन्होंने अपने आप को अपने तीन मित्रों के तीन विभिन्न मुकदमों में बचाव के लिए गहराई तक जोड़ लिया था। एक 'ताई महाराज प्रकरण' तो जिन्दगी भर उनके पीछे लगा रहा। इस प्रकरण में ऐसे कुछ हुआ था कि एक 'बाबा महराज' नाम के एक प्रसिद्ध व्यक्ति तिलक के मित्र थे और काफी सम्पन्न और वैभवशाली लोगों में से थे। उन्होंने अपनी मृत्यु उपरांत उपस्थित हो सकने वाली पारिवारिक परिस्थितियों को पूर्व से ही भांप कर अपनी सम्पत्ति की देखभाल हेतु तिलक महाराज (तिलक उस दौरान इसी नाम से लोकप्रिय थे) को नियुक्त कर दिया था।

वकालत व कानूनी ज्ञान की पराकाष्ठा

दिनांक 13 जुलाई, 1897 को प्रथम राजद्रोह मुकदमे में ज्यूरी ने तिलक पर 18 माह के कारावास की सजा ठोंकी थी। इसी दिन के अगली सुबह श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा उपलब्ध कराए वकीलद्वय श्री गार्थ और श्री पुग प्रीव्ही काउंसिल में अपील की तैयारी हेतु बॉम्बे के एक क्लब में बैठकर योजना बना रहे थे और इसीलिए उन्होंने अपना एक साथी लोकमान्य से मिलने स्थानीय कारागृह में प्रारम्भिक चर्चा के लिए भेजा। यह साथी जब वापस अंग्रेज वकील द्वय के पास आया तो उसके हाथ में लोकमान्य तिलक के द्वारा बनाया गया अपील का ड्राफ्ट था जो उन्होंने जेल में रात भर बैठकर बना डाला था। यह दोनों अंग्रेज बैरिस्टर उक्त ड्राफ्ट देखकर चकित रह गए क्या शानदार ड्राफ्टिंग थी वो, जो बिना किसी कानूनी किताबों, लेखों और कागज पत्रों की सहायता के बना दी गई थी। उन अंग्रेज वकीलों ने बाद में कहा कि उनके सम्पूर्ण वकालती जीवन में किसी भी वकील द्वारा या अन्य किसी जनसामान्य द्वारा भी बनाया गया इतना अचूक और तथ्यपरक ड्राफ्ट उन्होंने कभी नहीं देखा था जो सजा सुनने के बाद मुजरिम द्वारा ही मात्र कुछ ही घण्टों के भीतर तैयार कर दिया गया हो। यह था लोकमान्य तिलक का विलक्षण कानूनी ज्ञान।

फिर भी वकील जनसामान्य के

तिलक ने कभी जीवन यापन के लिए वकालत भले ही नहीं की हो लेकिन वे कानून को सशक्त राजनैतिक हथियार मानते थे-उनकी गणितज्ञ वाली बुद्धि कानून के पेचीदा और अकादमिक ज्ञान के विवेचन में ही उलझी रहती थी। जब वे माण्डले की जेल (जो वर्तमान में बर्मा देश में है) में राजद्रोह के मुकदमे की छह वर्ष की सजा काट रहे थे तब उन्हें ग्राम कळम्ब, जिला यवतमाल, महाराष्ट्र की एक पिछड़ी धनगर (गड़रिया) जाति के गरीब किसान का पत्र मिला जिसमें उस गरीब किसान ने अपनी व्यथा लिखते हुए बताया था कि वह निचली अदालत से मुकदमा हारने पर अपनी जमीन खो रहा है और वह बॉम्बे उच्च न्यायालय में अपील करना चाहता है। यह व्यक्ति वैसे तो लोकमान्य के लिए अपरिचित ही था लेकिन वह इस सन्दर्भ में पूरी दुनिया में सिर्फ लोकमान्य पर ही भरोसा रखने के कारण कानूनी सलाह चाह रहा था। उसके कागज पत्रों का अध्ययन कर तिलक जी ने उसे उचित सलाह लिखकर भेजी थी।

सोचने की बात यह है कि सारा देश जानता है कि लोकमान्य तिलक ने अपनी प्रसिद्ध कृति 'गीता रहस्य' इसी कारावास में लिखी थी। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि उन्होंने एक गरीब किसान के लिए कानूनी सलाह भी हजारों मील दूर से भारत के दूरदराज में लिखकर भेजी थी। सचमुच में लोकमान्य ही उन सभी जन के लिए कानून स्वरूप ही थे। ऐसे विलक्षण कानूनविद् की पुण्यतिथि पर सारा देश श्रद्धा से नत है। ▪

कांग्रेस बनाम जनसंघ

आज सभी प्रकार के आदर्शों से दूर होकर कांग्रेस उस समय के नेतृत्व की आड़ लेकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रही है। उस स्वार्थ सिद्धि के लिए योग्यता-अयोग्यता इत्यादि का कुछ विचार नहीं रखा जा रहा है।

पं. दीनदयाल उपाध्याय

स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद ध्येयविहीन कांग्रेस और उसके कार्यकर्ताओं के समक्ष यह समस्या थी कि अब कौन सी वस्तु शेष है, जिसके लिए अपनी सेवाएं समर्पित की जाएं? कांग्रेस की इस ध्येयविहीनता को महात्मा गांधी ने समझा था और इसलिए वे कांग्रेस को समाप्त कर देने पर बराबर जोर देते थे, किंतु कांग्रेस के अन्य नेताओं ने कांग्रेस को अपने स्वार्थ का साधन बना लिया और उसे भंग नहीं किया।

उद्देश्य समाप्त होने पर संस्था निर्जीव हो जाती है। कांग्रेस का काम खत्म हो गया, अब उसे समाप्त कर देना चाहिए था। परंतु नेताओं ने इसे भी नहीं माना। फलतः मृत कांग्रेस के शव को पंडित नेहरू लिए घूम रहे हैं और उसे जिलाने का असफल प्रयत्न कर रहे हैं। कांग्रेस का शव अधिक सड़ जाने से गल-गल कर गिरा। फलतः अनेक पार्टियों का जन्म हुआ, जिसमें पहले सोशलिस्टों का नंबर है। ये सब पार्टियाँ केवल विरोध के लिए बनी हैं, जिनका कोई आधार नहीं। हमें तो अपनी समस्याओं को हल करने के लिए एक मौलिक आधार को लेना है। हम अनुरोध करने के लिए हैं, विरोध करने के लिए नहीं। जनसंघ केवल कांग्रेस के विरोध के लिए नहीं है। देश को सुखी तथा वैभवशाली बनाने का कार्य इसके सामने प्रमुख है।

कांग्रेस की ध्येयविहीनता ने देश में निराशा का वातावरण ला दिया। लोग अनुभव करने लगे कि उनका धर्म मिट रहा है, संस्कृति मिट रही है, जीवनोपयोगी वस्तुएं अन्न-वस्त्र अल्प हो रहे हैं। अतः जन-मन में निराशा का प्रादुर्भाव होना स्वाभाविक था। जनसंघ का उदय इस निराशावाद के वातावरण को छिन्न-भिन्न कर देश में आशा और स्फूर्ति का संचार करने के लिए हुआ है।

स्वतंत्रता की लड़ाई मे कांग्रेस केवल पेशवा थी और 35 करोड़ जनता उसके साथ उस लड़ाई में संलग्न थी। नेता होने के नाते उसे स्वतंत्रता प्राप्ति का यश प्राप्त हुआ। कांग्रेस के नेता आज यह कह रहे हैं कि स्वतंत्रता हमने दिलवाई है। उन लोगों से पूछना चाहिए कि योगी अरविंद जैसे लोग तथा जिन्होंने अंडमान में अपना जीवन व्यतीत किया और हंसते हुए स्वतंत्रता के लिए ही अपने जीवन की कुर्बानी की, क्या वे कांग्रेस के झंडे के नीचे आए थे? वासुदेव बलवंत फड़के कांग्रेस से बाहर ही स्वतंत्रता के लिए कार्य कर रहे थे। रासबिहारी बोस, भगतसिंह तथा वीर सावरकर क्या कांग्रेसी थे? सुभाष चंद्र बोस ने भी जो महान कार्य किए थे, वे भी कांग्रेस से अलग होने पर ही। परंतु इस सबका श्रेय कांग्रेस अपने ऊपर ले रही है। सच्ची बात तो यह है कि भारत की 40 करोड़ जनता ने स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी और हम सबने इस युद्ध में भाग लिया।

आज सभी प्रकार के आदर्शों से दूर होकर कांग्रेस उस समय के नेतृत्व की आड़ लेकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रही है। उस स्वार्थ सिद्धि के लिए योग्यता-अयोग्यता इत्यादि का कुछ विचार नहीं रखा जा रहा है। अभी हाल में मंडी के राजा को ब्राजील का राजदूत इसलिए बना दिया गया, क्योंकि उन्होंने राजकुमारी अमृत कौर के विरोध से अपना नाम वापस ले लिया है। पता नहीं उनमें उस पद की कहाँ तक योग्यता है।

उसी प्रकार स्वार्थ की सिद्धि के लिए ही कांग्रेस सरकार ने कंट्रोल लगा रखा है। यदि कंट्रोल जनता की भलाई के लिए हो तो ठीक भी है, किंतु यहाँ पर वह इसलिए है कि उसके कारण व्यापारी और पूंजीपति कांग्रेस के अँगूठे के नीचे रहते हैं। वोट लेने के समय लोगों को धमकियाँ दी जाती हैं कि उनके लाइसेंस रद्द कर दिए जाएंगे। उनको याद दिलाया जाता है कि उन्हें कितने परमिट दिए गए हैं। इस प्रकार जनता को दुःख देने के लिए कांग्रेस और पूंजीपति मिल जाते हैं। अभी कुछ दिन पूर्व केवल अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए कांग्रेस सरकार ने 287 मन की चीनी मनमाने दामों में मिल मालिकों को बेचने की आज्ञा इसलिए दे दी थी कि उन्होंने कांग्रेस फंड में कुछ चंदा दे दिया था। कांग्रेस ने देश में तीन भयंकर भूलें की हैं। पहली, बिना किसी आदर्श के कार्य किया है, दूसरी, केवल अपनी पार्टी की स्वार्थ

सिद्धि की है, तीसरी, यदि आदर्श सम्मुख रखा भी तो वह विदेशी। उदाहरण स्वरूप यदि आज हमारे देश में अन्न की कमी है तो उसके लिए हमने विदेशों से ट्रैक्टर मंगाए किंतु यहां चलेंगे कैसे? मकानों की कमी होने पर हमने सीमेंट, लोहा और ईंट जनता को देने के बजाय मकान बनाने की फैक्टरी स्थापित की और करोड़ों रुपए फूंक दिए।

भारतीय जनसंघ का उद्देश्य भारतीय जीवन के लिए अत्यंत पवित्र और स्फूर्तिदायक है। ये सिद्धांत और आदर्श नए नहीं हैं। वे इतने पुराने हैं कि जबसे मानव मानव को पहचानने लगा, प्रकृति का प्रादुर्भाव इस भूमि पर हुआ तथा भारत भूमि को पहचानने के साथ राष्ट्रीयता का उदय हुआ। केवल एक राष्ट्रीयता की भावना को लेकर, जिसको 'एकं सद्विप्राः बहुधा वदन्ति' कहा गया है, जनसंघ खड़ा हुआ है। इसीलिए देश के कोने-कोने में जहां जनसंघ गया है, जनता में उसका आदर हुआ है।

भारतीय जनसंघ का जन्म देश के सम्मुख एक स्वदेशीय आदर्शवाद रखने के निमित्त हुआ और उसका आधार कुछ मर्यादाओं पर स्थिर है। प्रथम तो जनसंघ भौगोलिक मर्यादा को मानता है और यह कहता है कि देश का विभाजन गलत है। यह ध्यान रखना चाहिए कि यह कहना भावनाओं को उभारना नहीं है, वरन कुछ तथ्यों को तर्क की कसौटी पर कसना है। आज हमारे देश में अन्न की कमी है और करोड़ों रुपयों का अन्न हमें बाहर से मंगाना पड़ता है। पाकिस्तान में वह बहुतायत से है। दूसरी ओर पाकिस्तान के पास कोयला, लोहा और कपड़ा नहीं है, जिसके लिए उसको परेशानी होती है। पूर्वी बंगाल में जूट सड़ रहा है, पश्चिम में जूट मिलें बंद हैं। पाकिस्तान में रुई बहुतायत है, हम उसे तेज दामों पर मिस्र या अमरीका से खरीद रहे हैं। यदि दोनों देश एक हो जाएँ तो आर्थिक दृष्टि से हम फिर स्वावलंबी बन सकते हैं और हमारी सारी समस्याएँ हल हो सकती हैं। सुरक्षा की दृष्टि से हम अपने बजट का 55 प्रतिशत और पाकिस्तान 60 प्रतिशत केवल सेना पर व्यय कर रहे हैं, जिससे दोनों देशों की आर्थिक अवस्था पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है। साथ ही साथ इस विभाजन के ही कारण हमें ब्रिटिश राष्ट्रमंडल में रहकर अंग्रेजों की गुलामी करनी पड़ रही है, क्योंकि दोनों को यह डर है कि एक के द्वारा उसका साथ छोड़ देने पर अंग्रेज दूसरे की अधिक सहायता करेगा।

सांप्रदायिक समस्या का भी हल इस विभाजन से नहीं हुआ, क्योंकि यदि कल 35 करोड़ में 10 करोड़ मुसलमान भारत में थे तो आज चार करोड़ रह गए हैं, किंतु वह समस्या हल नहीं हुई। दूसरी ओर पाकिस्तान में रह गए हिंदुओं पर अत्याचार और उनका निष्कासन हमारी आर्थिक तथा राजनीतिक दशा को हर समय चिंता युक्त बनाए रखते हैं।

कश्मीर समस्या का भी सबसे सरल हल विभाजन का अंत है। इस प्रकार सब दृष्टियों से अखंडता अनिवार्य है। किंतु लोग कहते हैं कि यह बेमानी है। उत्तरी तथा दक्षिण कोरिया, मिस्र तथा सूडान और आयरलैंड इत्यादि की एकता की बात तथा उसका समर्थन करने वाले लोग भारत तथा पाकिस्तान की एकता को सुनकर केवल इसलिए बौखला जाते हैं कि उससे उनके स्वार्थों का हनन होता है। आठ साल पूर्व पाकिस्तान का बनना बेहूदा बात थी, किंतु वह बन गया। आज अखंडता 'बेहूदा' है, कल उन्हीं लोगों के सम्मुख वह भी हो जाएगा।

अखंड भारत की मांग हमारी नैतिक मांग है, क्योंकि श्री जिन्ना के अदला-बदली के प्रस्ताव को न मानकर अल्पसंख्यकों की रक्षा करने की शर्त हिंदुस्थान और पाकिस्तान दोनों के लिए कांग्रेस ने रखी थी। उस समय महात्माजी ने कहा था कि इस शर्त के पूरे न होने पर इनमें से कोई भी देश की अखंडता की मांग कर सकता है।

हमने अपनी शर्त पूरी कर दी है और अपना अधिकार प्राप्त कर लिया है। चार करोड़ मुसलमानों की रक्षा करने के लिए हिंदुस्थान का प्रत्येक दल तैयार है परंतु पाकिस्तान ने इस शर्त को पूरा नहीं किया। पूर्वी बंगाल के हिंदुओं पर किया गया बर्बर अत्याचार ही प्रमाण के लिए पर्याप्त है। पंडित नेहरू इसके लिए आज क्या कर रहे हैं? सरदार पटेल तो सांप्रदायिक नहीं थे, उन्होंने भी कहा था निर्वासितों को रखने के लिए आधा बंगाल पाकिस्तान से मांगा जाएगा। आज इस प्रश्न को नेहरूजी क्यों नहीं रखते?

किंतु यह अखंडता किसी आक्रमण से नहीं प्राप्त होगी। यह समस्या का ठीक हल नहीं है। वह तभी होगा जब यहां का हिंदू और यहाँ का मुसलमान इन बातों को समझ लेगा कि उसका भला इसी में है और यह विचार दिनों दिन जोर पकड़ते-पकड़ते एक दिन यह संभव हो जाएगा।

विचारों के ही कारण भारत बँटा है, विचारों से ही यह एक होगा। हमारी दूसरी मर्यादा एक राष्ट्र में विश्वास है। हम मुस्लिम लीग के द्वि-राष्ट्रवाद को नहीं मानते। हमारा कहना यह है कि यदि फारस, चीन और तुर्की का मुसलमान अपने धर्म को मानता हुआ अलग-अलग राष्ट्रीयता मानता है तो भारत का मुसलमान ऐसा क्यों नहीं कर सकता? उन देशों में लोग अपने देश की भाषा और संस्कृति को मानते हैं। यहाँ भी मुसलमानों को इस देश की संस्कृति और राष्ट्रभाषा हिंदी को मानना चाहिए। ▪

▪ राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी ने मप्र के 8 शहरों को राष्ट्रीय स्वच्छ सर्वेक्षण पुरस्कार प्रदान किए।

▪ प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खंडेलवाल ने भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने लाड़ली बहनों के खाते में 1543 करोड़ से अधिक की राशि अंतरित की।

▪ प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल जी एवं संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद की जयंती पर माल्यार्पण किया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने दुबई में स्वामीनारायण मंदिर का भ्रमण किया।

▪ प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल ने बैतूल में श्री हंस कीर्ति आश्रम में पूजन -अर्चन किया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सामाजिक सुरक्षा पेंशन धारियों के खातों में 340 करोड़ से अधिक की राशि का अंतरण किया।

▪ प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल एवं संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने पूर्व प्रधानमंत्री, भारत रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी के पैतृक निवास पहुंचकर पुष्पांजलि अर्पित की।

आर्थिक योजनाओं तथा आर्थिक प्रगति का माप समाज के ऊपर की सीड़ी पर पहुँचे हुए व्यक्ति नहीं, बल्कि सबसे नीचे के स्तर पर विद्यमान व्यक्ति से होगा।